राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UPHIN/2019/79073 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, मंगलवार, 22 अप्रैल 2025

वर्ष 06, अंक 203, पृष्ट 12, मूल्य: 03 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

मां ने ग्राम प्रधान वन बेटे ने कोटेदार बनकर किया खेल बेच दिया गरीबों और बच्चों का आहार रिपोर्ट दर्ज....06

US में गूंजा डंप ट्रम्प, नहीं थम रहा है प्रदर्शन, क्यों भड़के लोग?......12

एमपी में OBC आरक्षण के मुद्दे पर SC में हुई सुनवाई; कोर्ट ने सभी ट्रांसफर पिटीशन किए स्वीकार

मध्य प्रदेश में ओबीसी के आरक्षण का मुद्दा एक बार फिर से गरम है सुप्रीम कोर्ट में ओबीसी वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने के मामले पर सुनवाई

● कोर्ट ने सभी ट्रांसफर पिटीशन स्वीकार कर लिया है और सारे केस सुप्रीम कोर्ट में बुलाने का आदेश दिया है. वहीं, सीएम मोहन यादव ने कहा कि सरकार हर हाल में आरक्षण देने के पक्ष में है।

स्वतंत्र प्रभात

मध्य प्रदेश में ओबीसी वर्ग को 27 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने के मामले पर सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई. कोर्ट ने मध्य प्रदेश सरकार द्वारा लगाई गई सभी ट्रांसफर पिटीशन स्वीकार कर लिया. शीर्ष अदालत ने कहा कि सरकारी विभागों में चयनित उम्मीदवारों की नियुक्ति होल्ड करने का मामला भी सुनेंगे. इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट ने अहम सुझाव भी दिया।

सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस अभय एस ओका और जज उज्जवल भुयान की पीठ के ओबीसी आरक्षण के खिलाफ लगाई गई कुल 52 ट्रांसफर पिटीशन पर सुनवाई की. न्यायालय ने उसके समक्ष रखी गई स्थानांतरण याचिकाओं (ञ्ञहड्डठ्ठह्यद्धद्दह क्कह्लद्बह्लद्बश्ठ्ठह्य) को स्वीकृत कर सारे केस सुप्रीम कोर्ट में बुलाने का आदेश दिया. इन मामलों की सुनवाई अब रिट याचिका (सिविल) संख्या 423/2019 के साथ की जाएगी।

सरकार हर हाल में आरक्षण देने के पक्ष में है- CM

मध्य प्रदेश में ओबीसी के आरक्षण का मुद्दा एक बार फिर से गहरा गया है. ओबीसी महासभा और राज्य की मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस इसको लेकर मोहन यादव सरकार पर हमलावर है. वहीं, सीएम मोहन यादव ने स्पष्ट कर दिया है कि ओबीसी आरक्षण पर सरकार का स्टैंड कायम है. उन्होंने कहा है कि, 'हम सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास की भावना पर कार्य कर रहे हैं।' उन्होंने कहा है कि सरकार हर हाल में ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण देने के पक्ष में हैं. ओबीसी की रिपोर्ट बीजेपी की पूर्ववर्ती शिवराज सिंह चौहान के वक्त आई थी. इस रिपोर्ट का पुनर्निरीक्षण किया जा रहा, साथ ही इसके खिलाफ जिन लोगों ने कोर्ट में याचिका दायर की है उन सभी को बुलाकर बात की जाएगी. इससे एक दिन पहले सीएम मोहन यादव ने कांग्रेस को इस मुद्दे पर सरकार पर आरोप लगाने से पहले अपने गिरेबान में झांकने की सलाह दी थी.

कमलनाथ सरकार ने बढ़ाया था आरक्षण

बता दें कि, मध्य प्रदेश में साल 2019 में तत्कालीन कांग्रेस की कमलनाथ सरकार ने राज्य में ओबीसी का आरक्षण 14 प्रतिशत से बढ़ाकर 27 प्रतिशत किया था. इसको लेकर सरकार ने अध्यादेश भी जारी किया था और इसे विधानसभा से भी पारित कराया था. हालांकि, इसके बाद इसे हाईकोर्ट में चुनौती दी गई और इसपर रोक लग गई. इसके बाद से यह मुद्दा कोर्ट के समझ विचाराधीन है।

चीफ जस्टिस तय करेंगे सुनवाई की अगली तारीख

याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने ओबीसी महासभा के अधिवक्ता से कहा कि नियुक्ति नहीं देने, एक्ट का पालन नहीं करने वालों के खिलाफ पिटीशन लगाइए हम उस पर सुनवाई कर निर्देश जारी करेंगे। इस मामले की अगली सुनवाई कब होगी इसकी तारीख चीफ जस्टिस तय करेंगे।

सुप्रीम कोर्ट में लगाई हैं ट्रांसफर याचिकाएं

आपको बता दें कि एमपी में ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण देने के खिलाफ ट्रांसफर याचिकाएं लगाई गई हैं। सुप्रीम कोर्ट ने सभी 51 याचिकाओं को स्वीकारते करते हुए सुनवाई करने की बात कही। एमपी के महाधिवक्ता प्रशांत सिंह ने ओबीसी आरक्षण मामलों की अत्यावश्यकता एवं जल्द सुनवाई का हवाला देते हुए इनकी शीघ्र सुनवाई का अनुरोध किया। जिसके जवाब में न्यायालय ने संकेत दिया कि मुख्य न्यायाधीश द्वारा मामलों की सुनवाई के लिए एक उपयुक्त पीठ का गठन किया जाएगा।

OBC महासभा के तर्क को कोर्ट ने सही माना

ओबीसी महासभा के वकीलों ने अदालत के सामने मध्य प्रदेश इमं विभिन्न विभागों द्वारा सरकारी नियुक्तियां नहीं देने का मुद्दा उठाया। वकीलों ने कहा कि प्रदेश में कई विभागों में भर्ती हुई जिनमें बड़ी संख्या में उम्मीदवार चुने गए, इसके बाद भी 27 ओबीसी आरक्षण का मामला कोर्ट में चलने की बात कहकर सरकार द्वारा उन्हें नियुक्तियां नहीं दी जा रहीं हैं जबकि इसपर किसी भी कोर्ट ने कोई कानूनी पाबंदी नहीं लगाई है।

कोर्ट ने कहा पिटीशन लगाइए, हम निर्देश देंगे

ओबीसी महासभा के अधिवक्ता ने कोर्ट में चल रही प्रक्रिया के नाम पर चयनित उम्मीदवारों को जॉइन नहीं कराने पर आपत्ति व्यक्त की। तर्क सुनने के बाद कोर्ट ने ओबीसी महासभा के अधिवक्ता से इस संबंध में पिटीशन लगाने को कहा। कोर्ट ने कहा कि चयनित उम्मीदवारों को नियुक्ति नहीं देनेवाले, एक्ट का क्रियान्वयन नहीं करनेवालों के खिलाफ आप पिटीशन लगाइए। हम सुनवाई कर क्रियान्वयन के निर्देश जारी करेंगे।

OBC महासभा ने कहा न्याय के लिए संघर्ष जारी रहेगा

ओबीसी महासभा के राष्ट्रीय कोर कमेटी सदस्य एडवोकेट धर्मेंद्र सिंह कुशवाहा ने बताया कि मध्य प्रदेश में ओबीसी आरक्षण पर 13त्न होल्ड पर ओबीसी महासभा 13त्न अनहोल्ड करने के लिए सुप्रीम कोर्ट में जल्दी ही याचिका प्रस्तुत करेगा। हम ओबीसी वर्ग को न्याय दिलाने के लगातार संघर्ष कर रहे हैं और न्याय दिलाकर रहेंगे।

सुप्रीम कोर्ट या संसद, संविधान में सर्वोच्च कौन? निशिकांत के बयान पर सियासत गर्म

स्वतंत्र प्रभात

सुप्रीम कोर्ट और सीजेआई पर सवाल उठाने को लेकर बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे की जमकर आलोचना की जा रही है. बीजेपी ने निशिकांत दुबे के बयान से किनारा कर लिया है, लेकिन विपक्ष आक्रामक हो गया है. वहीं, इस बीच जस्टिस बी आर गवई ने भी इस पर कमेंट कर दिया जो अगले महीने चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बनने वाले हैं. ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है संसद बड़ी या सुप्रीम कोर्ट?

बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे के बयान से इस वक्त पूरे देश में सियासी बवाल मचा हुआ है. उन्होंने देश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट और सीजेआई पर सवाल उठाया था. उन्होंने इतना तक कह दिया देश में धार्मिक और गृह युद्ध भड़काने के लिए सुप्रीम कोर्ट जिम्मेदार है. उनके इस बयान की जबरदस्त आलोचना हो रही है. बीजेपी ने निशिकांत दुबे के बयान से किनारा कर लिया है, लेकिन विपक्ष आक्रामक हो गया है. विपक्ष को ये कहने का मौका एक बार फिर मिल गया कि बीजेपी संस्थानों पर लगाम लगाना चाहती है और उसे खत्म करना चाहती है।

निशिकांत दुबे के बयान के बाद आज सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस बी आर गवई ने दो बार एक ही कमेंट किया, जो इस मामले से ही जुड़ा हुआ है. पहला कमेंट पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग पर था. दूसरा कमेंट हङ्ग्ञ्ज्ञ को लेकर याचिका पर था, जिसमें एडल्ट कंटेंट रोकने की मांग की गई थी. दोनों की सुनवाई के दौरान जस्टिस बी. आर. गवई ने कहा कि हमारी तो आलोचना हो रही है कि सुप्रीम कोर्ट विधायिका के अधिकार क्षेत्र में दखल दे रहा है. जस्टिस बी.आर. गवई देश के अगले मुख्य न्यायाधीश होंगे और 14 मई को शपथ लेंगे. ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या सरकार और सुप्रीम कोर्ट में टकराव है?

सुप्रीम कोर्ट पर सवाल उठाना अधिकार है या अवमानना या फिर सुप्रीम कोर्ट बड़ा है या संसद?

निशिकांत दुबे ने क्या कहा था?

पहले जान लीजिए कि निशिकांत दुबे ने क्या कहा था? बीजेपी सांसद ने कहा था कि अपॉइंटिंग अथॉरिटी को आप निर्देश कैसे दे सकते हैं. भारत के चीफ जस्टिस की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति करते हैं. इस देश का कानून भारत की संसद बनाती है. उस संसद को आप डिक्टेट करेंगे? इस देश में धार्मिक युद्ध भड़काने के लिए केवल और केवल सुप्रीम कोर्ट जिम्मेदार है. सुप्रीम कोर्ट अपनी सीमा से बाहर जा रहा है. सुप्रीम कोर्ट की सीमा ये है कि भारत का संविधान जिस कानून को बनाया, उस कानून की उन्हें व्याख्या करनी है और यदि व्याख्या नहीं कर सकती है और सबकुछ के लिए सुप्रीम कोर्ट जाना है तो इस संसद का कोई मतलब नहीं है. विधानसभा का कोई मतलब नहीं है इसको बंद कर देना चाहिए।

दुबे के बयान पर जयराम रमेश का पलटवार

निशिकांत दुबे के बयान पर कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि संविधान जो अधिकार देता है सुप्रीम कोर्ट को उसे काटने और कमजोर करने में लगे हुए हैं. संवैधानिक पदाधिकारी भी सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ बोल रहे हैं. मंत्री भी सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ बोल रहे हैं. बीजेपी के सांसद भी सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ बोल रहे हैं क्योंकि सुप्रीम कोर्ट एक ही बात कह रहा है कि जब आप कानून बनाते हैं तो संविधान के बेसिक स्ट्रक्चर के खिलाफ मत जाइए. संविधान के खिलाफ है तो कानून स्वीकार नहीं कर सकते।

सुप्रीम कोर्ट बड़ा है या संसद..किसने क्या कहा?

सुप्रीम कोर्ट बड़ा है या संसद, इस सवाल पर सुप्रीम कोर्ट के वकील अमिताभ सिन्हा ने कहा कि संविधान में एक आर्टिकल है 361. इसके मुताबिक, यह अनुच्छेद कहता है कि जो भी संवैधानिक पद हैं यानी राष्ट्रपति या राज्यपाल, उनके किसी भी कार्य के बारे में व्याख्या नहीं हो सकती है और उसे चैलेंज नहीं किया जा सकता। अगर यह करना है कि संविधान से 361 को खत्म कर दे. वहीं, अमिताभ सिन्हा की टिप्पणी पर पूर्व स्त्र के सी कौशिक ने कहा कि यहां अनुच्छेद 361 आउट ऑफ कॉन्टेस्ट है. उसमें सिर्फ ये दिया है राष्ट्रपति और राज्यपाल, उनका जो एक्ट है, उनके खिलाफ कोई क्रिमिनल एक्ट नहीं हो सकता है. मगर जो उनका एडमिनिस्ट्रेटिव एक्ट है, उनके खिलाफ कार्रवाई होती है।

संक्षिप्त ख़बरें

नौतपा 25 मई से, अबकी बार पड़ेगी प्रचंड गर्मी

नौतपा का यह समय अत्यधिक गर्मी के लिए जाना जाता है। इस दौरान सूर्य पृथ्वी के सबसे निकट होते हैं, जिससे तापमान में तेजी से वृद्धि होती है और भीषण गर्मी का अनुभव होता है। इस साल नौतपा की शुरुआत 25 मई से होगी, जब सूर्य रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा। यह अवधि नौ दिनों तक चलेगी और इसका समापन 8 जून को होगा, जब सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। वैसे तो नौतपा के शुरुआती 9 दिन सबसे गरम होते हैं, लेकिन ये 15 दिन की अवधि होती है, जिसमें सबसे अधिक भीषण गर्मी पड़ती है। यह नौ दिन प्रकृति के लिए भी एक महत्वपूर्ण अवधि मानी जाती है, क्योंकि इस दौरान धरती सूर्य की तेज ऊष्मा को अवशोषित करती है, जो आगे चलकर मानसून के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करती है। आइए इस बारे में और विस्तार से जानते हैं।

हर साल ज्येष्ठ महीने की शुरुआत में नौतपा शुरू होता है। ये 15 दिन का होता है, लेकिन शुरुआती 9 दिनों में बहुत गर्मी होती है। इसलिए, इसे नौतपा कहते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, ये नक्षत्र 15 दिन तक रहता है। पर शुरू के 9 दिन नौतपा कहलाते हैं। इन दिनों में तापमान बहुत ज्यादा होता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि मई के आखिरी हफ्ते में सूरज और धरती के बीच की दूरी कम हो जाती है। सूरज की किरणें सीधे धरती पर पड़ती हैं। इसलिए इन दिनों में गर्मी ज्यादा होती है। नौतपा में गर्मी से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए और खूब पानी पीना चाहिए और धूप में कम निकलना चाहिए।।

नौतपा में करें ये उपाय।

नौतपा के दौरान गर्मी से बचने और भगवान का आशीर्वाद पाने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। सूर्य को अर्घ्य देना, ठंडी चीजें दान करना, भगवान कृष्ण की पूजा करना, शिवलिंग पर जल चढ़ाना, और लोगों को मीठा खिलाना जैसे काम किए जा सकते हैं। इसके अलावा, मेंहदी लगाना और सूती वस्त्र दान करना भी लाभकारी होता है। ये सभी उपाय गर्मी से राहत दिलाने के साथ-साथ पुण्य भी दिलाते हैं।

निशिकांत दुबे के बयान के खिलाफ अवमानना याचिका दायर करने की अनुमति पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा, इसकी जरूरत नहीं है

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को याचिकाकर्ता के वकील से कहा कि उन्हें भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के खिलाफ अवमानना याचिका दायर करने के लिए अदालत की अनुमति की आवश्यकता नहीं है. दुबे ने शीर्ष अदालत और भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना की आलोचना की है. शनिवार को भाजपा ने दुबे की सुप्रीम कोर्ट की आलोचना से खुद को अलग कर लिया था और पार्टी अध्यक्ष जे पी नड्डा ने टिप्पणियों को उनका निजी विचार बताया था. आज यह मामला न्यायमूर्ति बी आर गवई की अध्यक्षता वाली और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

याचिकाकर्ता का प्रतिनिधित्व करने वाले एक वकील ने भाजपा सांसद द्वारा की गई टिप्पणियों के बारे में हाल ही में आई खबरों का हवाला दिया और कहा कि वह अदालत की अनुमति से अवमानना याचिका दायर करना चाहते हैं. इस पर न्यायमूर्ति गवई ने कहा, "आप इसे दायर करें. दायर करने के लिए, आपको हमारी अनुमति की आवश्यकता नहीं है।"

पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता को इस मामले में भारत के अटॉर्नी जनरल से मंजूरी लेनी होगी। पिछले हफ्ते दुबे ने सुप्रीम कोर्ट पर निशाना साधते हुए कहा था कि अगर सुप्रीम कोर्ट को कानून बनाना है तो संसद और राज्य विधानसभाओं को बंद कर देना चाहिए. भाजपा सांसद ने सीजेआई खन्ना पर भी निशाना साधा और उन्हें देश में "गृह युद्धों"के लिए जिम्मेदार ठहराया।

बाद में, वक्फ अधिनियम मामले में एक वादी का प्रतिनिधित्व करने वाले शीर्ष अदालत के वकील अनस तनवीर ने अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमणी को पत्र लिखकर दुबे के खिलाफ अवमानना कार्यवाही शुरू करने की सहमति मांगी, जिसमें शीर्ष अदालत की गरिमा को कम करने के उद्देश्य से की गई उनकी घोर निंदनीय टिप्पणी थी।

पत्र में कहा गया है, "मैं यह पत्र न्यायालय की अवमानना अधिनियम, 1971 की धारा 15(1)(बी) के साथ सर्वोच्च न्यायालय की अवमानना के लिए कार्यवाही को विनियमित करने के नियम, 1975 के नियम 3(सी) के तहत झारखंड के गोड्डा संसदीय क्षेत्र से लोकसभा सदस्य निशिकांत दुबे के खिलाफ आपराधिक अवमानना की कार्यवाही शुरू करने के लिए आपकी सहमति मांगने के लिए लिख रहा हूं. उनके द्वारा सार्वजनिक रूप से दिए गए बयान बेहद निंदनीय, भ्रामक हैं और इनका उद्देश्य भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय की गरिमा और अधिकार को कम करना है।"

ईसाई धर्मगुरु पोप फ्रांसिस का निधन, 88 साल की उम्र में ली आखिरी सांस

स्वतंत्र प्रभात

कैथोलिक ईसाई धर्मगुरु पोप फ्रांसिस का 88 साल की उम्र निधन हो गया है। वेटिकन के मुताबिक स्थानीय समयानुसार आज सुबह 7 बजकर 35 मिनट पर पोप ने आखिरी सांस ली। पोउनका निधन वेटिकन के कासा सांता मार्टा स्थित उनके निवास स्थान पर हुआ। कार्डिनल केविन फेरेल, वेटिकन कैमरलेन्गो ने कहा, "सोमवार सुबह 7¬35 बजे, रोम के बिशप फ्रांसिस पिता के घर लौट आए। उनका पूरा जीवन प्रभु और उनके चर्च की सेवा के लिए समर्पित था।' उन्होंने कहा कि पोप फ्रांसिस ने हमें मूल्यों, साहस और सार्वभौमिक प्रेम के साथ जीना सिखाया, खासकर सबसे गरीब और सबसे हाशिए पर पड़े लोगों के लिए।

वह 88 वर्ष के थे और अपने 12 साल के पोप कार्यकाल में वह कई बीमारियों से पीड़ित रहे।फ्रांसिस, पुरानी फेफड़ों की बीमारी से पीड़ित थे। युवावस्था में उनके एक फेफड़े का हिस्सा निकाल दिया गया था। उन्हें 14 फरवरी, 2025 को सांस की तकलीफ के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जो बाद में डबल निमोनिया में बदल गया। उन्होंने वहां 38 दिन बिताए। रविवार को पोप फ्रांसिस ने ईस्टर संडे के अपने संबोधन में विचार की स्वतंत्रता और सहिष्णुता का आह्वान किया।बेसिलिका की बालकनी से 35,000 से अधिक लोगों की भीड़ को ईस्टर की शुभकामनाएं देने के बाद, फ्रांसिस ने अपने पारंपरिक "उर्बी एट ओर्बी" ("शहर और दुनिया के लिए") आशीर्वाद को पढ़ने का काम एक सहयोगी को सौंप दिया। उन्होंने कहा, "धर्म की स्वतंत्रता, विचार की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और दूसरों के विचारों के प्रति सम्मान के बिना शांति नहीं हो सकती है।" उन्होंने "चिंताजनक" यहूदी-विरोध और गाजा में 'नाटकीय और निंदनीय' स्थिति की भी निंदा की।

बलुआघाट ओवरहेड टैंक का उद्घाटन अब तक अधर में, जनता जल संकट से त्रस्त

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। नगर क्षेत्र के बलुआ घाट मोहल्ले में दो वर्ष पूर्व करोड़ों की लागत से निर्मित ओवरहेड टैंक का अब तक उद्घाटन न हो पाना नगरवासियों के लिए परेशानी का सबब बन गया है। एक ओर जहां टैंक निर्माण के समय इसे इलाके की जल समस्या का स्थायी समाधान बताया गया था, वहीं दूसरी ओर दो साल बीत जाने के बाद भी इसका उपयोग शुरू न होना प्रशासनिक उदासीनता को उजागर करता है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि टैंक का निर्माण कार्य बहुत पहले ही पूरा हो चुका है। पाइपलाइन बिछाने से लेकर सभी जरूरी उपकरण भी स्थापित किए जा चुके हैं, लेकिन इसके बावजूद अब तक जल आपूर्ति शुरू नहीं की गई। गर्मी के इस भीषण दौर में लोग बूंद-बूंद पानी के लिए तरस रहे हैं। महिलाएं और बच्चे कई-कई किलोमीटर दूर से पानी ढोने को मजबूर हैं।

जनता का आरोप है कि ओवरहेड टैंक को लेकर अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की लापरवाही अब असहनीय होती जा रही है। सवाल यह भी उठता है कि जब सब

कुछ तैयार है, तो फिर उद्घाटन की औपचारिकता में देरी क्यों की जा रही है? क्या जनता को पानी जैसे मूलभूत अधिकार के लिए भी अब राजनीति का मोहताज होना पड़ेगा? वहीं, कुछ सामाजिक संगठनों और जागरूक नागरिकों ने इस मुद्दे पर प्रदर्शन की चेतावनी भी दी है। उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि तत्काल प्रभाव से ओवरहेड टैंक का उद्घाटन कर जल आपूर्ति शुरू की जाए, अन्यथा वे व्यापक जन आंदोलन को बाध्य होंगे। अब देखना यह है कि प्रशासन और जनप्रतिनिधि कब नींद से जागते हैं और कब बलुआ घाट के निवासियों को उनके हिस्से का पानी मिल पाता है।

लेटलतीफी छात्रों का वीडियो हुआ सोशल मीडिया पर वायरल तो हरकत में आए अधिकारी

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज, लखनऊ। विकासखंड मोहनलालगंज के सिर्स प्राथमिक विद्यालय में सोमवार को उस समय हड़कंप मच गया जब विद्यालय की इंचार्ज प्रधानाध्यापिका रीना देवी ने विद्यालय गेट पर ताला जड़ दिया। इस दौरान स्कूल पहुंचे बच्चे बाहर गेट के पास ही घंटों बैठे रहे। मामला सहायक अध्यापिका संध्या देवी की नियमित लेटलतीफी और अनियमित कार्यशैली को लेकर उपजा विवाद है, जो अब तूल पकड़ चुका है।

क्या है पूरा मामला.......- स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, सहायक अध्यापिका संध्या देवी अक्सर विद्यालय देर से पहुंचती हैं, जिससे न सिर्फ विद्यालय का संचालन प्रभावित होता है, बल्कि बच्चों की पढ़ाई पर भी असर पड़ता है। कई बार समझाने और विभागीय शिकायतों के बावजूद अध्यापिका के व्यवहार में कोई सुधार नहीं आया। स्थिति से परेशान होकर प्रधानाध्यापिका रीना देवी ने सोमवार सुबह बच्चों को बाहर बैठाकर विद्यालय गेट में ताला लगा दिया और पूरे घटनाक्रम का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। वीडियो वायरल होते ही मामला तेजी से सुर्खियों में आ गया।

पुराना विवाद भी आया सामने......

सूत्र बताते हैं कि प्रधानाध्यापिका और सहायक अध्यापिका के बीच पहले से ही खींचतान चल रही है। कुछ दिन पहले उपस्थिति रजिस्टर पर हस्ताक्षर को लेकर दोनों के बीच विवाद इतना बढ़ा कि रजिस्टर का पेज तक फाड़ दिया गया। इसके बाद से दोनों शिक्षकों के बीच आपसी तनाव और अधिक बढ़ गया।

ग्राम प्रधान व शिक्षा अधिकारियों ने की जांच....

घटना की सूचना मिलते ही ग्राम प्रधान सुरेश कुमार, उपखंड शिक्षा अधिकारी, रसोईया और कुछ अभिभावक विद्यालय पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। उपखंड शिक्षा अधिकारी ने तत्काल प्रभाव से पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है।

शिक्षा विभाग का पक्ष.- जब इस मामले में खंड शिक्षा अधिकारी से बात की गई तो उन्होंने बताया संध्या देवी के खिलाफ पूर्व में भी शिकायतें प्राप्त हुई थीं, जिसके आधार पर उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया गया था। विद्यालय में अनुशासनहीनता व शिक्षकों के बीच विवाद की स्थिति अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। जैसे ही इस ताजा प्रकरण की जानकारी मिली, दोनों अध्यापिकाओं के खिलाफ विभागीय

जांच का आदेश दिया गया है। दोषी पाए जाने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।"

शिक्षा पर पड़ रहा असर......

फिलहाल इस विवाद का सीधा असर बच्चों की पढ़ाई पर पड़ रहा है। ताला लगने की वजह से स्कूल का शैक्षिक माहौल प्रभावित हुआ है और छात्रों को दिनभर स्कूल के बाहर बैठकर समय गुजारना पड़ा।

अभिभावकों में आक्रोश......

विद्यालय के बाहर मौजूद कई अभिभावकों ने भी प्रशासन की उदासीनता पर नाराज़गी जाहिर की। उन्होंने कहा कि अगर समय रहते कार्रवाई की जाती, तो आज बच्चों को इस तरह स्कूल के बाहर नहीं बैठना पड़ता।

अब क्या आगे होगा......

अब सबकी निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि क्या सोशल मीडिया पर वायरल इस घटना के बाद शिक्षा विभाग कोई ठोस कदम उठाएगा या फिर यह मामला भी अन्य विवादों की तरह फाइलों में दबकर रह जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

रोहन पाल अग्निवीर परीक्षा पास कर गांव का नाम किया रोशन

बलरामपुर। पचपेड़वा विकास खण्ड अन्तर्गत हरैंया चन्द्रसी गांव निवासी युवक रोहन पाल पुत्र ओम प्रकाश पाल के आग्निवीर की परीक्षा पास कर लेने से पूरे गांव में हर्ष की मौहोल दौड गई है। गांव निवासी गिरिजेश पाण्डेय ने बताया कि गांव के युवक के देश सेवा से ओतप्रोत अग्निवीर (सेना) में आने वाला पहला युवक रोहन पाल ने अपने परिवार के साथ साथ पूरे गांव व क्षेत्र का नाम रोशन किया है। गांव के महिला व पुरुष सबने उसकी सफलता की कामना किया है। व गांव में खुशी का माहौल दिख रहा है।

नाबालिग से दुराचार के आरोपी को 10 साल की कैद

चित्रकूट - अनुसूचित जाति की नाबालिग लड़की को बहला फुसलाकर भगा ले जाने और दुराचार करने के मामले में दोष सिद्ध होने पर विशेष न्यायाधीश ने आरोपी को 10 वर्ष कठोर कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही 13,000 रुपये के अर्थदण्ड से भी दंडित किया है । विशेष लोक अभियोजक तेज प्रताप सिंह ने बताया कि कर्वी कोतवाली में एक व्यक्ति ने बीती 22 जून 2018 को रिपोर्ट दर्ज कराई थी। शिकायतकर्ता के अनुसार कर्वी क्षेत्र के विनायकपुर गांव का निवासी पुष्पेंद्र पटेल उनकी नाबालिग बेटी को बहला फुसलाकर भगा ले गया। इस दौरान आरोपी ने उनकी बेटी के साथ दुराचार किया। इस मामले में पुलिस ने मामले की रिपोर्ट दर्ज करने के बाद आरोपी को गिरफ्तार करते हुए न्यायालय में आरोप पत्र दाखिल किया था। बचाव और अभियोजन पक्ष के अधिवक्ताओं की दलीलें सुनने के बाद सोमवार को विशेष न्यायाधीश रेनू मिश्रा ने इस मामले में निर्णय सुनाया। जिसमें दोष सिद्ध होने पर आरोपी को 10 वर्ष कठोर कारावास के साथ 13,000 रुपये अर्थदण्ड से दंडित किया गया।

जिलाधिकारी ने सुनी फरियादियों की समस्याएं

चित्रकूट - जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने सोमवार को कलेक्टरेट स्थित अपने चैंबर में जनसुनवाई के तहत फरियादियों की समस्याएं सुनी। साथ ही निस्तारण के लिए सम्बन्धितों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जनसुनवाई में जिलाधिकारी ने उपस्थित फरियादियों की शिकायतों को एक-एक कर सुना। साथ ही प्राप्त प्रार्थना पत्रों के सम्बन्ध में अधिकारियों को शासन की मंशानुरुप गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि जमीन से सम्बन्धित प्रकरणों में पुलिस व राजस्व की संयुक्त टीम मौके पर जाकर निस्तारण कराएं। उन्होंने कहा कि जन सुनवाई के दौरान जो भी समस्याएं आ रही है, उसका गुणवत्तापूर्ण निस्तारण ससमय सुनिश्चित कराएं। साथ ही समस्या निस्तारण से सम्बन्धित शिकायतकर्ता को निस्तारण से संतुष्टि भी मिलनी चाहिए। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी न्यायिक राजेश प्रसाद, बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी मनोहर लाल धर्मन आदि मौजूद रहे।

सट्टेबाजों के खिलाफ एसपी सिटी कार्यालय पर किया प्रदर्शन

अलीगढ़। थाना देहली गेट क्षेत्र के अंतर्गत हीरानगर मोहल्ले में बड़े पैमाने पर आईपीएल व कसीनो का सट्टा चल रहा है। जिसमें क्षेत्र के युवा वर्ग जो क्रिकेट में रुचि रखकर बर्बाद हो रहे हैं। जिसकी शिकायत पर भाजपा महानगर मंत्री एडवोकेट संजू बजाज दर्जनों क्षेत्रवासियों के साथ एसपी सिटी ऑफिस पहुंचकर उक्त सट्टेवाजो के खिलाफ नारेबाजी कर प्रदर्शन किया । एसपी सिटी मृगांक शेखर पाठक से वार्ता करते हुए कहा कि हीरानगर निवासी तरुण उर्फ शेट्टी व अन्य व्यक्ति आईपीएल व कसीनो का सट्टा खिलाने के काम करते हैं जिसमें तमाम युवा अपने घर से निकालकर लाखों रुपये सट्टे में लगा चुके हैं जिसकी शिकायत करीब 10 दिन पूर्व सीओ सिटी मयंक पाठक को दी गई लेकिन कोई कार्यवाही नही की गई है एडवोकेट संजू बजाज ने बताया कि तरूण उर्फ शेट्टी आदि सट्टेवाजो ने पूरा मोहल्ला बर्बाद कर दिया है सट्टेवाजो के खिलाफ कठोरतम कार्यवाही कर सट्टा बन्द होना चाहिए अन्यथा की स्थिति में हम सड़कों पर उतरकर आंदोलन को बाध्य होंगे। एडवोकेट संजू बजाज ने कहा है कि एसपी सिटी से मुलाकात कर पीड़ित क्षेत्रवासियों की समस्या से अवगत कराया है एसपी सिटी द्वारा तत्काल कार्यवाही के निर्देश दिए गए हैं। सौरभ चौधरी व राकेश सहाय ने कहा है कि केवल देहली गेट क्षेत्र ही नही बल्कि पूरे शहर के विभिन्न क्षेत्रों में आईपीएल सट्टा पेअर पसार चुका है आखिर किसकी सह पर इतने बड़े पैमाने पर अवैध कार्य हो रहा है। हर्षद हिन्दू ने कहा है कि अगर उक्त लोगों के खिलाफ कठोरटीम कार्यवाही अमल में नही लाई गई तो आंदोलन को जनांदोलन बनाकर सड़कों पर उतरँगे।।

भूसा चारा चूनी चोकर दवाई सफाई सब गायब जनपद के गौशालाओं का बुरा हाल

भूख व दवा के अभाव में तड़प तड़प कर मरने को विवश हैं गौ माता

● अधिकांश गौशालाओं पर चरवाही पर जिंदा है गायें

स्वतंत्र प्रभात

बलरामपुर । जनपद के गौशालाओं में गौमाता का हाल चाल ठीक नहीं है। गौशालाओं के कर्ता धर्ता के लापरवाही व भ्रष्टाचार का हिस्सा होने के कारण गायें भूख-प्यास से तड़प तड़प कर अपनी जान गवां रही है। जब कि सूबे के मुख्य मंत्री अपने प्रत्येक जनसभा मीटिंग व वैठक में गो माता का जयकारा लगवाते है।

1- तुलसीपुर विकास खण्ड के नन्हुआपुर ग्राम पंचामत में लाखों की लागत से बना गौशाला शो पीस साबित हो रहा है। वन कर तैयार होने के वाउजूद प्रधान व सचिव की लापरवाही के कारण गौशाला आज तक संचालित ही नहीं हो सका । ग्रामीणों के अनुसार यदि इसे शुरु ही करना था तो सरकारी धन बड़े पैमाने पर क्यो व्यय किया गया। ग्रामीणों ने यहभी बताया कि भूसा चारा पानी आदि की व्यवस्था न होने से स्पष्टरूप से प्रतीत होता है कि निकट भविष्य अभी इस गौशाला का संचालन शुरू होने वाला नही है।

2- गैसड़ी विकास खण्ड के महुआ गौशाला में भूषा चारा पानी का घोर अभाव होने के कारण गायें भूख से तड़प तड़प कर मर रही है। गायों के बीमार होने पर कोई उनका देख रेख करने वाला कोई नही है।. इसी गौशाला में लगभग 8 माह काम कर चुके उसी गांव के निवासी दाउद ने मीडिया को दिये गये अपने बयान कहां कि चुनी चोकर हरा चारा व दवाई और सफाई सब कभी उपयोग ही नहीं हुआ । गायों की नया बना सूखा भूसा खिलाने से गायों का पेट खराब हो जाता है और दवा न होने से गायें मर रही हैं।

3- पचपेड़वा विकास खण्ड के आदमतारा गांव में स्थित गौशाला में मात्र दो ट्राली भूसा खरीद कर प्रधान और सचिव पूरे वर्ष गायों की सेवा का दावा कर रहे है जबकि अभी एक सप्ताह पूर्व तीन गायों ने वीमारी और भूख से तड़प-तडप कर दम तोड़ दिया । इससे पूर्व ग्रामीणों ने कई गायों के मरने की सूचना दी थी जिससे पूरे ब्लाक क्षेत्र में यह मामला चर्चा का विषय हो गया था।

4- हरैंया सतघरवा, गैसड़ी तथा पचपेड़वा विकास खण्डों में स्थित सभी गोशालाओं में चरवाही पर जीवित है। प्रधान व सचिव चरवाहा रखकर जंगल में गायों को चराने भेज देते हैं। इससे गायों का खिलाने पिलानें वं सेवा करने से छुट्टी मिल जाती है। भले ही कितनी ही गायें हिंसक जानवरों की भोजन बनजायें पर इन्हें इसकी कोई परवाह नहीं है।

5- इमिलीया कोडर विकासखण्ड पचपेड़वा में भी साफ सफाई व दवाई जैसे महत्वपूर्ण चीजें गायब है। गायें चरवाही के बल पर जिन्दा है। गौशाला में चारा हरा चारा व अन्य महत्वपूर्ण चीजों का घोर आभाव है।

6-पचपेड़वां विकासखंड के भगवान पुर शिवपुर गांव के गोशाला में गायें धांधिया नालें का पानी पीकर व चरवाही पर ही जीवित हैं। यहाँ भी भूसा चारा दवा का भाव हैं।

7- पचपेड़वा विकास खण्ड के भगवानपुर कोडर गांव में दो वर्ष पूर्व लाखों की लागत से बना गौशाला प्रधान व साचिव के लापरवाही से अब तक संचालित नहीं हो सका।

महत्वपूर्ण विषय यह है कि दूध दहीं घी मक्खन और खेतों में डालने के लिये गोवर की खाद सबको चाहिए परन्तु इस युग में गौसेवा से 90त्न प्रतिशत लोगों को घिन आती है। गावों में गौपालक भटक रही दूध देने वाली गायों को पकड़ लाते है और दूध खाकर उन्हें पुनः छोड़ देते हैं। और विरोधी सारा दोष सरकार पर मढ़ देते हैं। विपक्षी पार्टियों ने तो छुट्टा जानवरों को एक मुद्दा बना दिया है। सरकार को चाहिए कि इस पर कानूनी सख्त कानून बना कर इसका उसका पालन करवाना चाहिए जिससे सरकारी व निजी रूप से गायों को रखने के लिए जिम्मेदारी तय हो और गौ माता अकाल मृत्यू से वच सकें।

जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने विकास खण्ड सदर में स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मरवटिया

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिलाधिकारी रवीश गुप्ता ने विकास खण्ड सदर में स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मरवटिया के अन्तर्गत सब सेन्टर/आयुष्मान आरोग्य मंदिर, हर्दिया बुजुर्ग का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होने पाया कि 12 टेलीकन्सलटेशन व 03 ई संजीवन की गयी है तथा तीन आशाओं द्वारा क्षेत्र में दस्तक का स्टिकर लगवाया गया है। प्रभारी चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि मरवटिया में एसडब्लूसी/ आयुष्मान आरोग्य मंदिर पर कुल 22 सीएचओ नियुक्त हैं, इसके अतिरिक्त ग्राम पंचाचत में 37 उपकेन्द्र बनाये गये है। केन्द्र पर पाँच वर्ष तक के बच्चों को टीका, गर्भवती महिलाओं को 10 व 16 वर्ष पर टीडी वैक्सीन का टीका लगाया जाता है। सीएचओ ने बताया कि एनसीडी के अन्तर्गत क्षेत्र के बीपी, शुगर, कैंसर आदि बीमारियों से पीड़ित लोगों को दवाएं दी जाती है एवं ऑनलाइन संजीवनी पोर्टल के माध्यम से एमबीबीएस डॉक्टर मरीजों को देखते है। जिलाधिकारी ने देखा कि उक्त सेन्टर के पुराने कमरों में दरवाजे व खिड़खियां नहीं लगी है। इस स्थिति पर उन्होने संबंधित को निर्देशित किया कि दरवाजे व खिड़खिंया लगवाकर डिलीवरी का कार्य यथाशीघ्र प्रारम्भ करवाया जाय। निरीक्षण के समय डा0 विनोद कुमार, प्रभारी चिकित्सा अधिकारी व समस्त स्टाफ उपस्थित रहे।

फ्तेहपुर में तिहरे किसान हत्याकांड के आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए सौंपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट – विगत दिनों फ्तेहपुर में हुए तिहरे किसान हत्याकांड के विरोध में भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारियों ने कलेक्टरेट परिसर पहुंचकर जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन को ज्ञापन सौंपा है। भारतीय किसान यूनियन के सदर तहसील अध्यक्ष शैलेन्द्र सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश में गुंडा राज कायम है, दबंग मर्डर कर रहे है और पुलिस कुछ भी नहीं कर पा रही है। बताया कि विगत दिनों उत्तर प्रदेश के फ्तेहपुर जिले के ग्राम अखरी के किसान परिवार के तिहरे हत्याकांड ने किसानों को झझकोर कर रख दिया है। कहा कि भारतीय किसान यूनियन मांग करता है कि पीड़ित किसान परिवारों को 50-50 लाख रुपए का मुआवजा दिया जाए। साथ ही किसान परिवार एवं साथी गवाहों के लिए उचित सुरक्षा की व्यवस्था करें और सुरक्षा की दृष्टि से मृतक परिवार को शस्त्र लाइसेंस दिया जाए। साथ ही मृतक परिवारों के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी जाए, मृतक परिवारों के बच्चों को आजीवन मुक्त शिक्षा की व्यवस्था की जाए तथा आरोपियों के ऊपर गैगेंस्टर एवं एनएसए के तहत कार्यवाही करते हुए इस प्रकरण को फास्ट ट्रैक कोर्ट में मुकदमा चलाते हुए दोषियों को जल्द से जल्द सजा दी जाए। इस मौके पर किसान श्रीकेशन राजपूत, विजय त्रिपाठी, जगमोहन, छेदीलाल सिंह, शिव सिंह, रामेश्वर सिंह, संतगोपाल भारतीय, रामसहाय, सतेंद्र सिंह, शिवप्रसाद, कमलेश कुमार, अर्जुन सिंह, विक्रम पटेल, श्रीराम कुशवाहा, जिला मीडिया प्रभारी देवेन्द्र सिंह आदि मौजूद रहे।

फेफना के नसीराबाद में बस और बाईक में हुई भयंकर टक्कर, दो युवकों की हुई मौत

बलिया (यूपी)- थाना फेफना अंतर्गत नसीराबाद गांव के पास सोमवार की सुबह में बस और बाइक में भयानक टक्कर हो गई। जिसमें बाइक सवार एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि दूसरे युवक को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां इलाज के दौरान उसकी भी मौत हो गई।तहसील पत्रकार अब्दुल रहमान ने ब्यूरो चीफ,बलिया - सैयद सेराज अहमद को जानकारी देते हुए बताया कि सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटना की जानकारी मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। मृतकों की पहचान शुभम कुमार सिंह (22) पुत्र सुनील कुमार सिंह निवासी श्रीनगर दुबेछपरा थाना बैरिया तथा गौरव कुमार सिंह (25) पुत्र जितेंद्र सिंह निवासी श्रीनगर दुबेछपरा थाना बैरिया के रूप में की गई।

सेवा सुरक्षा की मांग को लेकर 21अप्रैल को जिले का शिक्षक लखनऊ करेगा कूच

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में आज उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ एकजुट के जिला कार्यकारिणी की एक बैठक खीरीघाट टीचर्स कालोनी में जिलाध्यक्ष अजय कुमार वर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। संचालन जिला महामंत्री डॉ सत्यप्रकाश मौर्य ने किया। बैठक में उपस्थित माध्यमिक शिक्षक संघ एकजुट के प्रांतीय कोषाध्यक्ष बिजेंद्र वर्मा व मंत्री ध्रुवनारायण चौधरी ने संयुक्त रूप से कहा कि प्रांतीय नेतृत्व के आह्वान पर 21 अप्रैल को माध्यमिक शिक्षकों की सेवा सुरक्षा की धारा 21, पदोन्नति की धारा 12 और कार्यवाहक प्रधानाचार्य को वेतन सुरक्षा देने की धारा 18 को उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग 2023 में समाप्त कर दिया गया है इसे पुनर्स्थापित करने के लिए लखनऊ के इको गार्डन में आयोजित एक दिवसीय धरने में जिले से सैकड़ों शिक्षक प्रतिभाग करेंगे। बैठक में मौजूद अटेवा जिलाध्यक्ष तौआब अली एवं मंडलीय महामंत्री दीपक सिंह प्रेमी ने कहा कि माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड नियमवाली में शिक्षकों की सेवा सुरक्षा के लिए धारा 18,12 व 21 की व्यवस्था थी जिसे उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग 2023में खत्म कर दिया गया है। जिससे प्रदेश के तमाम शिक्षकों को द्वेषवश प्रताड़ित किया जा रहा है। इसलिए प्रदेश भर के शिक्षक लखनऊ धरने में शामिल होने जा रहे हैं। इस दौरान देवेंद्र तिवारी,राहुल चौधरी, बृजेश वर्मा, रमेश अनिरुद्ध वर्मा, हरीशचंद्र, अवनीश मिश्रा सहित सभी पदाधिकारी मौजूद रहे।

डीएम ने किया पीएम कंपोजित विद्यालय घुसाह का औचक निरीक्षण, साफ सफाई की समुचित व्यवस्था का दिया निर्देश

● डीएम ने छात्रों से गणित , सामान्य ज्ञान के सवाल पूछ परखी शैक्षिक गुणवत्ता, शैक्षिक स्तर में सुधार लेने एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान किए जाने का दिया निर्देश

विद्यालय में एनरोलमेंट के सापेक्ष बच्चों की कम उपस्थिति पर डीएम ने जताई नाराजगी, उपस्थिति बढ़ाए जाने के दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

बलरामपुर- शासन की मंशानुरूप जनपद में परिषदीय विद्यालयों में छात्रों को बेहतर शिक्षण एवं अन्य योजनाओं का लाभ सुनिश्चित किए जाने को डीएम पवन अग्रवाल द्वारा विकासखंड बलरामपुर के ग्राम धुसाह में पीएम श्री कंपोजिट विद्यालय धुसाह का औचक निरीक्षण किया गया।इस दौरान उन्होंने शिक्षकों की उपस्थिति पंजिका , कंपोजिट ग्रांट रजिस्टर, छात्रों की उपस्थिति पंजिका आदि का अवलोकन किया। उन्होंने विद्यालय में पंजीकृत बच्चों के सापेक्ष कम उपस्थित पर नाराजगी व्यक्ति की एवं नामांकन के सापेक्ष छात्रों की उपस्थिति बढ़ाए जाने का निर्देश दिया। उन्होंने प्रधानाध्यापिका के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही का निर्देश दिया।विद्यालय में साफ सफाई की समुचित व्यवस्था न पाए जाने पर भी उन्होंने नाराजगी व्यक्त की , विद्यालय में साफ सफाई की समुचित व्यवस्था का निर्देश दिया।

इस दौरान उन्होंने रसोई घर का निरीक्षण कर छात्रों को मेनू के अनुसार भोजन मिल रहा है अथवा नहीं इसका जायजा लिया। उन्होंने छात्रों से भी मिड डी मिल में मिल रहे भोजन का फीडबैक लिया। उन्होंने निर्देश दिए कि छात्रों को गुणवत्तापूर्ण एवं मेनू के अनुसार भोजन मिले यह सुनिश्चित किया जाए।इस दौरान उन्होंने कक्षा 06, 07 एवं 08 के छात्र-छात्राओं से गणित , विज्ञान एवं सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछ कर शैक्षिक गुणवत्ता को परखा। उन्होंने शिक्षकों को शैक्षिक स्तर में सुधार लाते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान किए जाना सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया।

रेलवे ओवरब्रिज निर्माण सहित अन्य मांगों को लेकर विधायक को सौंपा मांग पत्र- राधेश्याम कमलापुरी

● बभनान से मसकनवां, मनकापुर उतरौला व बलरामपुर तक बस सेवा शुरू किया जाए- राजेश कमलापुरी

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले केकरनपुर बभनान जनपद गोंडा में सड़क व नाली और रेलवे गेट नं 223 पर ओवरब्रिज बनवाने की मांग को लेकर भाजपा किसान मोर्चा क्षेत्रीय कोषाध्यक्ष गोरखपुर क्षेत्र राधेश्याम कमलापुरी व भाजपा मंडल अध्यक्ष गौर राजेश कमलापुरी ने जनपद गोंडा के गौरा विधानसभा क्षेत्र 301 विधायक प्रभात कुमार वर्मा को पत्र सौंप कर प्रमुख मांगों को लेकर जानकारी दी और कहा निर्माण कराना महत्वपूर्ण हैं जो आबादी वाले क्षेत्र हैं जहां जनपद बस्ती व गोंडा की सीमा जुड़ती है। और यहां कई कालेज एवं विघालय है।जहां सैकड़ों छात्र एवं छात्राएं गौर, हरैंया, सबरापुर, खोड़ारे, छपिया, मसकनवां, आदि क्षेत्रों से पढ़ने आते हैं। जो बस की सुविधा न होने के कारण गंतव्य तक आने जाने में देर हो जाती है। और श्री कमलापुरी द्वारा मांग पत्र में प्रमुख मांग किया गया है। ट्राली गेट से बेलहरी रोड़ तक नाली व सड़क निर्माण अतिआवश्यक, 2. रेलवे स्टेशन बभनान से एचडीएफसी बैंक तक दोनो तरफ नाली निर्माण, 3. बभनान रेलवे गेट 223 का बढ़ते हुए आबादी को देखते हुए जाम से निजात पाने हेतु ओबरब्रिज का निर्माण कराया जाना अति आवश्यक है जिसमें रेलवे गेट 223 से फूलपुर होते हुए सिसई रानीपुर, हरखूपुर होते हुए गौराचौकी बभनान मार्ग में मिलाया जाए, 4. रेलवे गेट 223 से होते हुए महरागौरा से महिला डिग्री कालेज रोड होते हुए बेलहरी मार्ग में मिलाया जाए साथ ही मेहनिया फार्मेसी हास्टल होते हुए बभनान हरैंया मार्ग में मिलाया जाए, 5. रेलवे गेट 223 केमिकल डिवीजन बभनान होते हुए जमुनहा, गौराचौकी मार्ग में मिलाया जाए, 6. बभनान रेलवे स्टेशन पीछे से छपिया मसकनवां मनकापुर, उतरौला होते हुए बलरामपुर तक जाने के लिए सुबह व शाम दो रोडवेज बस चलाया जाएइस मौके पर सुरेश कसौधन, मुस्ताक अहमद, महबूब खान, दीपक जायसवाल, विजय गुप्ता, डां. शशिकांत आयुर्वेदाचार्य, मोरारजी गुप्ता, कन्हैया लाल अग्रहरि, शिवुद्दीन गुप्ता, नंदा गुप्ता, आदि लोग उपस्थित रहे।

कार्यकर्ता की पुलिसिया पिटाई पर भड़के पूर्व विधायक आनंद शुक्ला

●- एसपी ने दारोगा और सिपाही को किया लाइन हाजिर

स्वतंत्र प्रभात

मऊ, चित्रकूट- पुलिस कर्मियों द्वारा भाजपा नेता के बेटे की बेरहमी से पिटाई करने की सूचना मिलने पर मानिकपुर के पूर्व विधायक आनंद शुक्ला रात्रि में ही मऊ पहुंच गए। उन्होंने इस मामले में पुलिस अधीक्षक से वार्ता कर घटनाक्रम की जानकारी देते हुए त्वरित कार्यवाही की मांग की। जिस पर एसपी ने एक उपनिरीक्षक और एक सिपाही को तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर कर दिया। इसके बाद पूर्व विधायक आनंद शुक्ला ने कहा कि जिले में कुछ अधिकारी और कर्मचारी ऐसे कृत्यों से भाजपा सरकार की छवि खराब करने का प्रयास कर रहे है। जिससे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। प्राप्त जानकारी के अनुसार भाजपा नेता संदीप त्रिपाठी के पुत्र आदित्य का बीती रात में थाने के पुलिस कर्मियों से विवाद हो गया। जिसके बाद पुलिस कर्मी उसे मऊ थाने ले गए। इसकी सूचना मिलने पर भाजपा नेता संदीप त्रिपाठी भी वहां पहुंच गए। उन्होंने आरोप लगाया कि शराब के नशे में उनके बेटे को पुलिस कर्मियों ने डंडे से पीटा है। भाजपा कार्यकर्ताओं की सूचना पर पूर्व विधायक आनंद शुक्ला भी वहां पहुंच गए। उन्होंने पूरे मामले की जानकारी एसपी अरुण कुमार सिंह को दी। जिसके बाद वहां पहुंचे मऊ क्षेत्राधिकारी और थाना प्रभारी ने उप निरीक्षक और आरक्षी का मेडिकल कराया। साथ ही पुलिस द्वारा पीटे गए आदित्य त्रिपाठी का चिकित्सीय परीक्षण भी कराया गया। इस संबंध में पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने बताया कि भाजपा नेता का पुत्र व उसका मित्र भीड़भाड़ के बीच बाइक से बाजार में घूम रहे और हॉर्न बजा रहे थे। इसे लेकर वहां कुछ पुलिसकर्मियों ने उन्हें रोका। इसके बाद उनके बीच विवाद हो गया। इस मामले में उन्होंने उपनिरीक्षक और आरक्षी को लाइन भेज दिया है। उन्होंने बताया कि सीसीटीवी फुटेज एकत्रित कराकर मामले की जांच की जा रही है। शुरुआती जांच में ऐसा बताया जा रहा है कि विवाद के दौरान आरक्षी को भी थप्पड़ मारे गए थे। अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी इस मामले की जांच कर रहे हैं।

नेत्र चिकित्सा क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए डॉ बीके जैन को मिली डी.लिट्. की उपाधि

स्वतंत्र प्रभात

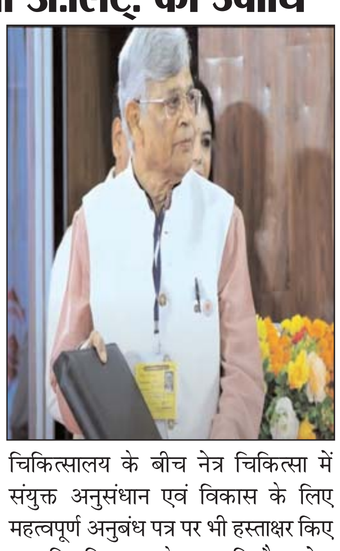

चित्रकूट – श्री सद्गुरु सेवा संघ ट्रस्ट के ट्रस्टी एवं वरिष्ठ नेत्र विशेषज्ञ डॉ बीके जैन को नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में पाँच दशकों से किए गए अभूतपूर्व सेवाकार्यों और योगदान के लिए गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर के 29वें दीक्षांत समारोह में ''डॉक्टर ऑफलिटरेचर (डी. लिट्.)'' की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। डॉ बीके जैन को यह विशिष्ट सम्मान गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने प्रदान किया गया। डॉ. जैन द्वारा नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में अत्याधुनिक सेवाएं पहुँचाने, शोध व नवाचार को बढ़ावा देने एवं लाखों लोगों की दृष्टि लौटाने के लिए किए गए कार्यों की सराहना इस उपाधि के माध्यम से की गई।

डॉ. जैन ने सम्मान प्राप्ति पर कहा कि यह सम्मान देश में नेत्र चिकित्सा एवं समाजसेवा के क्षेत्र में कार्य कर रहे संस्थानों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। इस दौरान गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय एवं श्री सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय के बीच नेत्र चिकित्सा में संयुक्त अनुसंधान एवं विकास के लिए महत्वपूर्ण अनुबंध पत्र पर भी हस्ताक्षर किए गए। विश्वविद्यालय के कुलपति वैद्य नरेश कुमार जैन एवं कुलसचिव डॉ. अशोक चावड़ा ने यह अनुबंध पत्र अनुमोदित कर डॉ. जैन को सौंपा। डॉ जैन ने कहा कि इस सहयोग से नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण एवं सेवाओं को नई दिशा मिलने की आशा है।

संचारी रोग से बचाव हेतु सुअर पालकों को किया जागरूक

देवरिया । विशेष संचारी रोग नियंत्रण एवं जागरूकता अभियान अंतर्गत विकास खंड बैतालपुर के ग्राम भगवानपुर चौबे, बलटिकरा,भूड़ीपाकड़, करंज एवं करौंदी में पशुधन प्रसार अधिकारी निशाकान्त तिवारी के नेतृत्व में पशुपालन विभाग की टीम ने संचारी रोग नियंत्रण हेतु जागरूकता अभियान चलाया। निशाकान्त तिवारी ने सुअर पालकों को पम्पलेट एवं कृमि नाशक दवा वितरित जागरूक किया कि सुअरों से मनुष्य के बच्चों को जापानी इंसेफेलाइटिस बीमारी फैलती है।इस बीमारी को फ़ैलाने में मच्छर वेक्टर का काम करते हैं। इस बीमारी से बचाव हेतु सुअरों को आबादी से दूर पालें।साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें। सुअर बाड़ों के आसपास जलजमाव न होने दें। नियमित एंटी लार्वा का छिड़काव करें। रात को सुअरबाड़ो को मच्छरदानी से ढकें एवं स्वयं भी मच्छरदानी का प्रयोग करें। पशुओं के पेशाब से लेप्टोस्पायरोसिस बीमारी भी मनुष्यों में फैलती है। पशुओं के पेशाब को खुले में न फैलने दें। अभियान में सुवाष चन्द्र,आयुष श्रीवास्तव एवं महेंद्र यादव ने दवा छिड़काव में मदद किया।

शादी समारोह में शामिल होने आये युवक की अज्ञात वाहन की टक्कर से हुई मौत

संडीला/हरदोई–तहसील क्षेत्र के अंतर्गत अपने रिश्तेदार की शादी समारोह मे आए एक युवक को किसी अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी जिससे मौके पर उसकी मौत हो गयी।जनपद लखनऊ के अमीनाबाद निवासी सोनू पुत्र प्रेम नारायण रविवार की शाम ग्राम बेगमगंज निवासी अपने रिश्तेदार पवन चौरसिया के पुत्र हिमांशू चौरसिया की शादी समारोह में शामिल होने आया था।बारात ग्राम बेगमगंज से कासिमपुर के ग्राम नौधा गयी थी।करीब रात 10.×0 बजे सोनू सड़क पार कर किसी काम से जा रहा था तभी किसी अज्ञात वाहन ने उसे जोरदार टक्कर मार दी जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया हादसे की जानकारी मिलते ही परिजन सहित बारात में मौजूद लोग घटना स्थल पर पहुंचे और घायल को उपचार हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य ले गए जहां पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

विश्वविद्यालय के शिक्षक पर हमला करने वाले पांच आरोपी गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट – कार और बाइक के बीच हल्की भिड़ंत को लेकर हुए विवाद के दौरान जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय के शिक्षक को आधा दर्जन युवकों ने पीट दिया। पुलिस ने मामले की रिपोर्ट दर्ज करने के साथ हमलावर युवकों को गिरफ्तार कर लिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय के शिक्षक सुशील कुमार त्रिपाठी पुत्र शिवाकर राम त्रिपाठी बीते रविवार की शाम सीतापुर की तरफ जा रहे थे। इस दौरान मंदाकिनी पुल के बाद स्पीड ब्रेकर पर पीछे से आ रही दो बाइकों के ओवरटेक करने के दौरान उनकी कार से टच कर गई। जिसके बाद दोनों बाइको पर सवार अम्बुज पाण्डेय, सूर्या उर्फ कुलदीप पाण्डेय, आयुष पाण्डेय, निखिल उर्फ गौरव तिवारी, राजेश कुमार पाण्डेय निवासीगण पिपरौंध थाना मऊ जनपद ने उनकी गाड़ी रोककर उन्हें बाहर बुलाया। इसके बाद तीन दर्जन अज्ञात लोगो को बुलाकर उनके साथ मारपीट की। मारपीट के बाद घटना की सूचना उन्होंने कर्वी कोतवाली प्रभारी उपेन्द्र प्रताप सिंह को दी। जिसके बाद सम्बन्धितों के विरुद्ध मामला दर्ज करते हुए। चौकी प्रभारी परिक्रमा मार्ग खोही रमेश सिंह मामले के आरोपियों की गिरफ्तारी के निर्देश दिए गए। जिसकी विवेचना के क्रम सोमवार को चौकी प्रभारी परिक्रमा मार्ग खोही व उनकी टीम ने पांचों आरोपियों को एक चार पहिया वाहन के साथ गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों की गिरफ्तारी करने वाली टीम में चौकी प्रभारी परिक्रमा मार्ग खोही के साथ आरक्षी अभिषेक सिंह, अनुज यादव व नागेश शामिल रहे।

संक्षिप्त खबरें

डिस्ट्रिक्ट योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन सीतापुर के द्वारा तृतीय डिस्ट्रिक्ट योगासन चैंपियनशिप का हुआ आयोजन

बिसवां/सीतापुर डिस्ट्रिक्ट योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन सीतापुर के द्वारा तृतीय डिस्ट्रिक्ट योगासन चैम्पियनशिप 2025 का आयोजन आनंदी देवी सरस्वती विद्या मंदिर सीतापुर मैं हुआ जिसमें कृष्ण स्वरूप अग्रवाल सरस्वती बालिका विद्या मंदिर के छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। जिसमें आर्टिस्टिक जूनियर बालिका वर्ग में द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली छात्राएं आरुषी वर्मा ,कृति शर्मा ट्रेडिशनल इंडिविजुअल योगासन में सब जूनियर बालिका वर्ग जानवी, आंशी वर्मा, प्राची शर्मा, संजना भास्कर, शीतल मौर्या ने प्रतिभाग कर तृतीय स्थान प्राप्त किया दोनों टीमों ने मेडल तथा सर्टिफिकेट प्राप्त किया बालक वर्ग ट्रेडिशनल इंडिविजुअल योगासन में सब जूनियर सुशांत, सुजात, कृष्णांश, संजीत वर्मा प्रतिभाग कर सर्टिफिकेट प्राप्त किया जिला योगासन में विद्यालय के छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग कर विद्यालय परिवार तथा अपने माता-पिता को गौरवान्वित किया है। उक्त उपलब्धि के लिए विद्यालय प्रबंधक सुरेंद्र पाल सिंह, अध्यक्ष रेनू मेहरोत्रा, उपाध्यक्षा एकता गुप्ता सहित समस्त प्रबंधन तंत्र ने बच्चों को बहुत-बहुत बधाई दी, प्रधानाचार्या अल्पना अवस्थी ने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए अपने आशीर्वचनों से भविष्य में निरंतर आगे बढ़ते रहने की शुभकामना दी।

दो बाइक में हुई जोरदार टक्कर पूर्व चेयरमैन समेत दो लोग घायल, एक को भेजा ट्रामा सेंटर

सीतापुर के लहरपुर कोतवाली क्षेत्र में सोमवार को एक गंभीर सड़क हादसा हुआ तंबौर मार्ग पर ग्राम गंगादीन पुरवा के पास दो बाइकों की आमने-सामने की टक्कर में पूर्व चेयरमैन समेत दो लोग घायल हो गए। घायलों में पूर्व चेयरमैन डॉक्टर सगीर उर्फ जग्गन (65) और उनके साथी उज़्हुल (55) शामिल हैं दोनों मोहल्ला तेलियन टोला तंबौर के रहने वाले हैं ये लहरपुर तहसील में पेशी के लिए जा रहे थे इस दौरान एक अज्ञात बाइक ने उनकी मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी हादसे के बाद दूसरा बाइक चालक मौके से फरार हो गया। घटना की जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में लोग मौके पर पहुंच गए एंबुलेंस के नहीं आने पर घायलों को निजी वाहन से स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर रूप से घायल पूर्व चेयरमैन डॉ सगीर को पहले जिला अस्पताल और फिर लखनऊ के ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया गया उल्लेखनीय है कि दुर्घटना के समय पूर्व चेयरमैन और उनके साथी ने हेलमेट नहीं पहन रखा था!!

विक्षिप्त युवक ने ट्रेन के आगे कूद कर दी जान

अहिरोरी/हरदोई- क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सभा बीकापुर मजरा राजा पुरवा निवासी अमित कुमार पुत्र मिश्रीलाल उम्र 24 वर्ष काफी दिनों से मानसिक रूप से बीमार था। घर वाले उसकी बराबर देख-रेख करते थे। कल की रात घर में सोया हुआ था। रात को 3:00 बजे चुपके से उठकर बाइक उठाकर सीधे बघौली रेलवे फाटक पर आया बाइक खड़ी करके रेलवे फाटक के पास खड़ा हो गया। उधर से ट्रेन आ रही थी। तभी लगभग 4:00 बजे ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। सुबह लोग टहलने के लिए निकले थे लोगों ने देखा की ट्रेन के आगे किसी व्यक्ति ने कूद कर जान दे दी है। तुरंत ही आनंन फानन में बघौली थाने व रेलवे पुलिस को जानकारी दी। पुलिस ने आकर युवक का पंचनामा कर पीएम के लिए जिला भेज दिया।

आपसी रंजिश के कारण हुई मारपीट में जान से मारने की दी धमकी

मोहनलालगंज। लखनऊ,मोहनलालगंज कोतवाली क्षेत्र हरिखेड़ा गांव में आपसी रंजिश के चलते एक महिला और उसके बेटे के साथ मारपीट की गई। पीड़िता सरवन देवी पत्नी अशोक कुमार ने थाने में दी तहरीर में बताया कि गांव के ही सचिन यादव पुत्र सिद्धनाथ और सिद्धनाथ पुत्र स्व. रामस्वरूप ने उनके और बेटे अभय यादव के साथ मारपीट की। पीड़ित सरवन देवी के अनुसार, मारपीट में उन्हें चोटें आई और सचिन यादव ने जान से मारने की धमकी भी दी। सूत्रों के मुताबिक, घटना के समय गांव में मौजूद कुछ लोगों ने दोनों पक्षों को छुड़ाया।पुलिस ने मामले में सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर आगे की कार्यवाही शुरू कर दी है।

अनीता देवी बनीं कोटेदार,86 मतों के अंतर से जीता कोटे का चुनाव

- तीसरी बैठक में सम्भव हो सका चुनाव।
- नोडल अधिकारी व प्रधान के समक्ष पंचायत सचिव ने की गिनती।
- थानाध्यक्ष सहित भारी पुलिस बल रहा मौजूद।

स्वतंत्र प्रभात

बिसवां (सीतापुर)। सकरन विकास खण्ड की रेवान ग्राम पंचायत में कोटे का चुनाव आखिरकार तीसरी बैठक में सोमवार को सम्पन्न हो गया।भारी मतों के अंतर से अनीता देवी ने अपनी प्रतिद्वंद्वी सीमा देवी को परास्त कर कोटेदार बन गयीं। लगभग चार माह पूर्व सकरन विकास खण्ड की रेवान ग्राम पंचायत में स्थित कोटे की दुकान में राशन वितरण में अनियमितता की शिकायत अधिकारियों द्वारा जांच में सही मिलने पर निरस्त कर दी गई थी। पहले यह कोटा खलीकुन के पास था। तब से अब तक दो बार कोटा चयन के लिए बैठकें बुलाई गयी किन्तु किन्हीं न किन्हीं कारणों से बैठकें निरस्त करनी पड़ीं। सोमवार को तीसरी बार रेवान ग्राम पंचायत की कोटे की दुकान के चयन के लिए बैठक बुलाई गई जिसमें भारी संख्या में ग्राम पंचायत की महिलाएं व पुरुष इकट्ठा हुये। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पूर्वाह्न 11 बजे नोडल अधिकारी (चुनाव) ए0डी0ओ0 पंचायत दिनेश कुमार यादव व ए0डी0ओ0 (आई.एस.बी.) विजय कुमार श्रीवास्तव एवं ग्राम विकास अधिकारी शशिकांत तिवारी व उनके एक अन्य सहयोगी ग्राम विकास अधिकारी प्रदीप कुमार तथा ग्राम प्रधान अवधराम, प्रधान प्रतिनिधि मनोज कुमार गौड़ की उपस्थिति में कार्यवाही शुरू हुई।

निर्धारित समय में मात्र अनीता देवी पत्नी सुशील कुमार मौर्य तथा सीमा देवी पत्नी अनूप कुमार ने नामांकन किया। निर्धारित समय में किसी के नाम वापस न लेने पर गिनती शुरू हुई। सीमा देवी पत्नी अनूप कुमार को 430 महिलाओं और 568 पुरुषों सहित कुल 998

लोगों का समर्थन मिला जबकि अनीता देवी पत्नी सुशील कुमार मौर्य को 456 महिलाओं व 628 पुरुषों सहित कुल 1084 लोगों का समर्थन मिला। इस प्रकार 86 मतों के भारी अंतर से अनीता ने सीमा को परास्त कर कोटे का चुनाव जीत लिया। चुनाव अधिकारी व सचिव सहित ग्राम प्रधान ने नवनिर्वाचित कोटेदार अनीता देवी को जीत की बधाइयां दीं। इस मौके पर थानाध्यक्ष रेउसा हनुमंत लाल तिवारी भारी पुलिस फोर्स के साथ मौके पर मौजूद रहे। इस दौरान दिनेश कुमार गौड़, बिंकटेश मौर्य,आकाश मौर्य, दयाराम,धीरज रेवनिया व तौफीक अहमद सहित हजारों लोग उपस्थित थे।

खेत जा रहे बुजुर्ग किसान की पिकअप की टक्कर से मौत.......

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज। लखनऊ, मोहनलालगंज कोतवाली क्षेत्र के उत्तरगांव में सोमवार सुबह खेत जा रहे एक बुजुर्ग किसान को तेज रफ्तार पिकअप वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में बुजुर्ग गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजते हुए मामले की जांच शुरू कर दी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, ग्राम राधाकृष्ण खेड़ा मजरा उत्तरगांव निवासी मैकूलाल (उम्र करीब 65 वर्ष) रोज की तरह सोमवार सुबह लगभग 7:30 बजे अपने खेत की ओर पैदल जा रहे थे। जैसे ही वे गांव के बाहर सड़क पार कर रहे थे, उसी समय सामने से आ रहे एक तेज रफ्तार महिन्द्रा पिकअप वाहन (वाहन संख्या UP 35 X 7341 ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि मैकूलाल सड़क पर दूर जा गिरे और गंभीर रूप से घायल हो गए।स्थानीय लोगों की मदद से

परिजन उन्हें तत्काल सीएचसी मोहनलालगंज लेकर पहुंचे, लेकिन डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही कोतवाली मोहनलालगंज पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।मृतक के पुत्र राजेश कुमार ने थाने में दी गई तहरीर में बताया कि उनके पिता सुबह खेत देखने जा रहे थे, तभी यह हादसा हुआ। उन्होंने वाहन चालक के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है।पुलिस का कहना है कि आरोपी वाहन और चालक की तलाश की जा रही है। सीसीटीवी फुटेज आदि के माध्यम से जांच की जा रही है और जल्द ही आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

चोरी के मामले में फरार चल रहे वांछित अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

नगराम, लखनऊ। पुलिस ने न्यायालय से फरार चल रहे एक वांछित को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया है। नगराम थाना प्रभारी विवेक चौधरी ने बताया कि बाराबंकी जनपद के लोनी कटरा थाना अन्तर्गत आने वाले मैला बाद निवासी अरविन्द पुत्र जवाहरलाल चोरी के मामले में वांछित चल रहा था, वह लम्बे समय से कोर्ट में तारीख पर नहीं आ रहा था। इस पर कोर्ट ने उसके विरुद्ध गैरजमानती वारंट जारी किए थे , तभी से पुलिस उसकी तलाश कर रही थी। रविवार की शाम पुलिस को सूचना मिली थी कि वह अपने घर आया हुआ है। सब इंस्पेक्टर उपेन्द्र यादव पुलिस टीम के साथ आरोपी के घर पर दबिश देकर गिरफ्तार कर लिया और थाने ले आई। थाना प्रभारी ने बताया कि सोमवार को अरविन्द को कोर्ट में पेश कर जेल भेजा गया है।

छात्र व छात्राओं के रिजल्ट कार्ड बटे, बच्चे हुए प्रोत्साहित

स्वतंत्र प्रभात

अहिरोरी हरदोई- ब्लॉक क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सभा गोपार में सरस्वती ज्ञान मंदिर गोपार में छात्र व छात्राओं को प्रबंधक मनोज कुमार पाल व प्रधानाध्यापक सुनील प्रताप शुक्ला व शिक्षक शिक्षकाओ ने रिजल्ट कार्ड बाटकर बच्चों को प्रोत्साहित किया कि आगे इससे भी बेहतर आप लोगों के रिजल्ट आना है व अपने मां-बाप का नाम का रोशन करना है। आगे भविष्य की उज्जवल कामना करते हुए सभी अध्यापकों ने बच्चों की भविष्य की उज्जवल कामना की छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित किया। कि इससे आगे और बढ़कर अपने स्कूल का नाम व मां-बाप का नाम क्षेत्र और जिला का नाम रोशन करें। इसके साथ ही

स्कूल में टॉपर रहे। सचिन कुमार 91.8 परसेंट नंबर प्राप्त किया दूसरे नंबर पर अजीत कुमार 85. 8 परसेंट दिव्या कुमारी 83.8 परसेंट नंबर हासिल किया। इसी के साथ सभी अभिभावक मौके पर मौजूद रह। स्कूल में प्रधानाचार्य व प्रबंधक को अध्यापक व अध्यापिका सभी लोगों ने बच्चों को कार्ड बाटकर बच्चों का प्रोत्साहन बढ़ाया आगे भविष्य की उज्जवल कामना की। मौके पर सभी लोग मौजूद अध्यापक उमेश कुमार रंजना कुमारी मंजुला कुमारी भावना कुमारी सुशील कुमार योगेश कुमार अंकित तिवारी शीलू कुमारी कुमकुम कुमारी योगेश कुमार व अभिभावक मौके पर मौजूद रहे।

प्रार्थना पत्रों का समयबद्ध निस्तारण करें लेखपाल व कानूनगो- एसडीएम

स्वतंत्र प्रभात

निजी जमीनों के मामलों में दोनों पक्षों के आपसी सहमति पर करें कार्यवाही

हरदोई। एसडीएम सदर सुशील कुमार मिश्र ने अपने दफ्तर में जनसुनवाई के दौरान लेखपाल और कानूनगो को निर्देश दिए है। उन्होंने अधीनस्थ मातहतों से कहा कि जमीनों के निजी मामलों को अधिकांश तौर पर दोनों पक्षों की आपसी सहमति पर निस्तातरित करें। सदर तहसील परिसर स्थित अपने दफ्तर में जनसुनवाई के दौरान क्षेत्र के विभिन्न गांवों से पहुंचें करीब 50 फरियादियों की समस्याएं सुनी। इस बीच कई शिकायतों के बारे में

उन्होंने लेखपालों को मौके पर बुलाकर प्रकरण से संबंधित जानकारी जुटाई और त्वरित आवश्यक कार्यवाही के फरमान जारी किए। एसडीएम सदर श्री मिश्र ने आगे कहा कि विरासत संबंधी मामलों को बारीकी छानबीन करते समय से निस्तारण करें। कहा कि आय प्रमाण, निवास प्रमाण पत्र आदि को नियत समय तक जारी किए जाये। एसडीएम सदर ने कहा कि शासकीय कार्यों में ढिलाई कतई बर्दाश्त नहीं की जायेगी।

गांव के बाहर ऑटो रिक्शा पलटने से मौत

स्वतंत्र प्रभात

कोथावां/हरदोई- बेनीगंज कोतवाली अंतर्गत कोथावां क्षेत्र के गोबरहा निवासी बीरेंद्र पुत्र स्व0 रोहन उम्र करीब 44 वर्ष की ऑटो रिक्शा पलटने से मृत्यु हो गई। मृतक के विकलांग भाई हेमराज ने गंभीर आरोप लगाते हुए बताया कि उनका भाई लखनऊ के किसी ईट भट्ठे पर दैनिक मजदूरी करता था। दीपावली से घर पर ही रहता था। कल रविवार दोपहर को बीरेंद्र घर से बीस हजार रुपए लेकर मल्हेरा सीमेंट चादर खरीदने गया था। चादर खरीददारी करने के पश्चात गांव के ही प्रकाश पुत्र मथुरी के ऑटो रिक्शा से सीमेंट पटरा लोडकर देर शाम करीब 8 बजे घर आ रहा था वही गांव के बाहर बनी पुलिया के पास ऑटो रिक्शा अनियंत्रित होकर पलट गया। जिसमें बैठे बीरेंद्र के सिर में

चोट लग गई और गंभीर रूप से घायल हो गया। गांव के ऑटो रिक्शा चालक प्रकाश जिसकी सूचना लेकर हेमराज के घर पहुंचा कि उनका भाई बीरेंद्र पुलिया के पास गंभीर रूप से घायल पड़ा है सूचना सुनते ही भाई हेमराज मौके पर पहुंच पाते की उससे पहले दूसरा साथी आशीष पुत्र सन्त निवासी मवई किसी तीन पहिया ठेलिया से शव को उठाकर घर ले आया शव देखते ही भाई हेमराज व माता कलावती के होश उड़ गए। जिसकी सूचना 112 पुलिस को दी मौके पर पहुंची पुलिस कोतवाली को सूचना की। उपरोक्त घटना पर कोतवाली प्रभारी ने बताया है एक्सीडेंट का मामला है शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है आगे विधिक कार्रवाई जारी है।

चोरों के हौसले बुलंद घर को बनाया निशाना, शादी में गए परिवार के घर से एक लाख नगद और सोने के जेवर चोरों ने किया पार

सीतापुर जनपद सीतापुर के महमूदाबाद कस्बे में चोरों ने एक बंद मकान को निशाना बनाया बीबीपुर मोहल्ले में कंचन सिंह के घर से एक लाख रुपये नकद और सोने के जेवरात चोरी हो गए कंचन सिंह 17 अप्रैल को अपने परिवार के साथ सुरजनपुर गांव में एक विवाह समारोह में गई थीं 21 अप्रैल की सुबह लगभग 7 बजे जब वह घर लौटीं, तो मेन गेट टूटा हुआ मिला चोरों ने घर के ताले और कुंडे काट दिए थे मुख्य कमरे के ताले भी टूटे हुए थे और सारा सामान बिखरा पड़ा था। पीड़िता ने बताया कि घर से एक लाख रुपये नकद के अलावा सोने की दो चैन और एक अंगूठी गायब हैं घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है पुलिस ने चोरों को जल्द पकड़ने का आश्वासन दिया है इलाके में लगातार हो रही चोरी की घटनाओं से स्थानीय लोगों में भय का माहौल है!!

दिव्यांग नारायणा की अनोखी मुहिम ट्राई साइकिल से 59 देशों में फैला रहे जागरूकत, 96 हज़ार किमी की यात्रा पूरी

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर कर्नाटक के समाजसेवी बी.वी. नारायणा ने दिव्यांगता को अपनी ताकत बना लिया है वे मोटर चालित ट्राई साइकिल से दुनिया भर में जागरूकता का संदेश फैला रहे हैं अब तक उन्होंने 96,000 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर ली है नारायणा ने 1978 में महज 18 साल की उम्र में अपनी यात्रा शुरू की थी उन्होंने गल्फ देश, अफ्रीका, नॉर्थ अमेरिका, कनाडा और इंग्लैंड समेत 59 देशों का भ्रमण किया है वे दिव्यांगता, सड़क सुरक्षा, रक्तदान, अंगदान और सामाजिक जिम्मेदारियों के बारे में लोगों को जागरूक कर रहे हैं सोमवार को नारायणा अयोध्या होते हुए सीतापुर पहुंचे जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने उनका स्वागत किया प्रशासन ने उनके रहने और खाने की व्यवस्था की नारायणा का मानना है कि समाज की सजगता से कई तरह की दिव्यांगता को रोका जा सकता है वे लोगों को कई महत्वपूर्ण सुझाव देते हैं बच्चों को समय पर पोलियो का टीका लगवाएं विवाह से पहले रक्त की जांच जरूर करवाएं छोटी उम्र के बच्चों को वाहन न दें नशे में या मोबाइल का इस्तेमाल करते हुए वाहन न चलाएं दसवीं तक पढ़े नारायणा का कहना है कि दिव्यांगों को सरकारी मदद पर निर्भर नहीं रहना चाहिए उन्हें अच्छी क्वालिटी के उपकरणों का उपयोग कर आत्मनिर्भर बनना चाहिए वे नहीं चाहते कि कोई और बच्चा दिव्यांग हो यही सोच उनके जीवन का लक्ष्य बन गई है!!

एक साथ चुनाव कराने से सरकारी खजाने पर वित्तीय बोझ कम होगा- अलका गुप्ता

स्वतंत्र प्रभात

हरदोई आर्यकन्या महाविद्यालय में एक राष्ट्र एक चुनाव पर महिला गोष्ठी का आयोजन किया गया गोष्ठी की मुख्य अतिथि अलका गुप्ता ने कहा एक साथ चुनाव कराने से मतदाताओं के लिए सुविधा और आसानी सुनिश्चित होती है, मतदाता थकान से बचते हैं, तथा मतदान प्रतिशत में वृद्धि होती है। एक राष्ट्र एक चुनाव से नीतियों में अधिक निश्चितता आएगी बार-बार चुनाव होने से अनिश्चितता का माहौल बनता है और इससे नीतिगत निर्णय प्रभावित हो सकते हैं। चुनावों के एक साथ होने से आर्थिक स्थिरता और विकास में वृद्धि होगी, जिससे व्यवसाय प्रतिकूल नीतिगत परिवर्तनों के भय के बिना निर्णय लेने में सक्षम होंगे। जब सरकार के तीनों स्तरों पर एक साथ चुनाव कराए जाएंगे, तो इससे उत्पादन और आपूर्ति श्रृंखला चक्र में व्यवधान से बचा जा सकेगा, क्योंकि इससे प्रवासी श्रमिकों को वोट डालने के लिए छुट्टी लेने से रोका जा सकेगा।

एक राष्ट्र एक चुनाव नीतिगत निष्क्रियता को रोकता है और शासन पर ध्यान केंद्रित बढ़ाता है।एक साथ चुनाव कराने से सरकारी खजाने पर वित्तीय बोझ कम होगा, क्योंकि इससे बीच-बीच में होने वाले चुनावों पर होने वाले व्यय का दोहराव नहीं होगा। एक राष्ट्र एक चुनाव के कार्यान्वयन से दुर्लभ संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग, पूंजी निवेश में वृद्धि और परिसंपत्ति सृजन होगा। एक राष्ट्र एक चुनाव चुनावी कैलेंडर को समन्वित करता है, जिससे शासन के लिए अधिक समय की उपलब्धता सुनिश्चित होगी तथा नागरिकों को निर्बाध सार्वजनिक सेवा प्रदान की जा सकेगी। एक राष्ट्र एक चुनाव से चुनाव संबंधी विवाद और अपराध कम होंगे, जिससे अदालतों पर बोझ कम होगा। एक राष्ट्र एक चुनाव से प्रयासों का दोहराव टाला जा सकेगा तथा राजनीतिक कार्यकर्ताओं, सरकारी अधिकारियों और सुरक्षा बलों का समय और ऊर्जा बचेगी। एक राष्ट्र एक चुनाव से चुनावों के दौरान अक्सर होने वाली सामाजिक असामंजस्यता और संघर्ष में कमी आएगी, क्योंकि चुनाव हर पांच साल में एक बार होते हैं। आर्यकन्या कॉलेज की प्राचार्य डॉक्टर सुमन वर्मा द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई तथा कुशल संचालन डॉक्टर अंजू श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय की एवं अन्य शिक्षिकाएं, छात्राएं , महिला मोर्चा नगर अध्यक्ष मधुबाला , महिला मोर्चा मीडिया प्रभारी कविता टंडन , जिला कार्यकारिणी सदस्य सुमन सिंह आदि अन्य उपस्थित रहे। इसी क्रम में ब्लॉक सभागार संडीला में आयोजित सर्राफ व्यापारी सम्मेलन में मुख्य अतिथि सांसद अशोक रावत विशिष्ट अतिथि सदस्य विधान

परिषद अशोक अग्रवाल ने व्यापारियों को संबोधित किया।

सांसद अशोक रावत ने बताया एक राष्ट्र एक चुनाव से हमारा लोकतंत्र सशक्त होगा व समय,संसाधन,धन की बचत होगी एक साथ चुनाव होने से हमारे विकास कार्यों में तेजी आएगी। अशोक अग्रवाल ने व्यापारियों को संबोधित करते हुए कहा 1947 में आजादी के बाद भारत में 1951-52, 1957,1962 और 1967 में देश में चार बार एक साथ चुनाव हुए। उन्होंने बताया एक साथ चुनाव से मतदाताओं में अधिक जागरूकता और उत्साह आएगा जिससे मतदान प्रतिशत बढ़ेगा। मंच का संचालन भाजपा जिला मंत्री अजय शुक्ला ने किया सम्मेलन की अध्यक्षता सर्राफ व्यापारी समिति के अध्यक्ष प्रेमप्रकाश गुप्ता ने की। इस अवसर पर अमित गुप्ता अभय गुप्ता अजय द्विवेदी नन्हेलाल व समस्त व्यापारी गण उपस्थित रहे।

तेज रफ्तार का कहर ट्रक ने दो साइकिल सवारों को रौंदा हुई मौत, बैंड बजाकर लौट रहे दो किशोर, चालक फरार

रामकोट सीतापुर के रामकोट थाना क्षेत्र में एक दुखद घटना सामने आई है दिल्ली-सीतापुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर कटीली पेपर मिल के पास एक तेज रफ्तार ट्रक ने साइकिल सवार दो किशोरों को कुचल दिया दोनों किशोर एक शादी समारोह में बैंड बजाकर घर लौट रहे थे घायल किशोरों को तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया मृतक किशोरों की पहचान ग्राम इंद्रानगर के सौरभ (15 वर्ष) और राजकुमार (16 वर्ष) के रूप में हुई है। दोनों रामकोट थाना क्षेत्र के रहने वाले थे वे बैंड पार्टी में काम करके अपने परिवार की आर्थिक मदद करते थे रामकोट थाने की पुलिस ने मौके पर पहुंचकर ट्रक को जब्त कर लिया है हादसे के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस उसकी तलाश कर रही है जिला अस्पताल में मृतक किशोरों के परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है उन्होंने ट्रक चालक के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है इस हादसे से पूरे इलाके में शोक की लहर है!!

संडीला नगर पालिका के वार्ड नंबर 25 में सीसी रोड का लोकार्पण, चेयरमैन व अधिशाषी अधिकारी ने किया उद्घाटन

स्वतंत्र प्रभात

संडीला(हरदोई)। नगर की आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए नगर पालिका चेयरमैन मोहम्मद रईस अंसारी एवं अधिशाषी अधिकारी विजेता गुप्ता ने वार्ड 25 स्थित मोहल्ले में नवनिर्मित सीसी रोड का विधिवत लोकार्पण किया। इस अवसर पर स्थानीय नागरिकों ने दोनों अधिकारियों का गर्मजोशी से स्वागत किया तथा माल्यार्पण कर आभार प्रकट किया।

सीसी रोड का निर्माण कार्य ठेकेदार द्वारा मानक अनुरूप एवं गुणवत्ता के साथ पूर्ण किया गया, जिसे लेकर मोहल्ला वासियों ने संतोष व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान अवर अभियंता सिविल गौरव शुक्ला एवं वार्ड के सभासद मदन गोपाल कश्यप का भी नागरिकों ने माल्यार्पण कर स्वागत किया और उनके सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

लोकार्पण कार्यक्रम के दौरान चेयरमैन रईस अंसारी ने कहा कि नगर का सर्वांगीण विकास ही हमारी प्राथमिकता है। प्रत्येक वार्ड में सड़कों, नालियों, जल निकासी एवं स्वच्छता संबंधी कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों के सहयोग से नगर को एक आदर्श नगरी के रूप में विकसित किया जाएगा। अधिशाषी अधिकारी विजेता गुप्ता ने भी नागरिकों को आश्वस्त किया कि नगर पालिका प्रशासन पारदर्शिता और गुणवत्ता के साथ विकास कार्यों को समयबद्ध तरीके से पूर्ण कर रहा है। उन्होंने आमजन से अपील की कि नगर की सफाई एवं सौंदर्यीकरण में सहयोग करें। इस अवसर पर इरफान हमीद ,मो0 हसीब, मोहल्ले के वरिष्ठ नागरिक फहीम मंसूरी, सफीक अहमद, बंटी एवं नगर पालिका कर्मचारी उपस्थित रहे।

ई-रिक्शा बना सड़क पर जाम का कारण

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज। लखनऊ, मोहनलालगंज कस्बा एक बार फिर बेतरतीब यातायात और सड़क जाम की चपेट में आ गया है। मौरावां मोड़ चौराहा, बस स्टैंड, जेल रोड, तेलीबाग रोड और लखनऊ-रायबरेली मुख्य मार्ग पर हर रोज घंटों तक जाम की स्थिति बनी रहती है। इसका सबसे बड़ा कारण हैं सड़कों पर अनियंत्रित रूप से खड़े होकर ओवरलोड सवारियां भरते ई-रिक्शा, जो न सिर्फ यातायात व्यवस्था को बाधित कर रहे हैं, बल्कि आमजन की दिनचर्या को भी प्रभावित कर रहे हैं।गैर जनपदीय और प्रतिबंधित ई-रिक्शा बने सिरदर्द कस्बा पुलिस चौकी के आसपास, तहसील, डाकघर और कोतवाली गेट तक प्रतिबंधित और बाहर जनपद से चलने वाले ई-रिक्शा बेतरतीब ढंग से खड़े होकर सवारियों की भरमार कर रहे हैं। इनकी वजह से मुख्य मार्गों पर वाहनों की लंबी कतारें लग जाती हैं। यह स्थिति स्कूल, कॉलेज, अस्पताल और कार्यालय जाने वाले लोगों के लिए गंभीर परेशानी का सबब बन गई है।प्रशासनिक निर्देश हवा में, कार्रवाई सीमित तेज तर्रार एसीपी रजनीश वर्मा ने स्थिति सुधारने के लिए समय-समय पर ई-रिक्शा चालकों के साथ बैठकें कीं और उन्हें सख्त चेतावनी दी कि वे सड़कों पर खड़े होकर सवारियां न भरें और नियमों का पालन करें। इसके साथ ही थाना प्रभारियों व चौकी इंचार्जों को निर्देश दिए गए कि प्रमुख चौराहों पर पुलिस बल तैनात कर चालान और वाहन सीज की कार्रवाई की जाए। हालांकि, कुछ समय के लिए अभियान चलाया गया और व्यवस्था में सुधार भी दिखा, लेकिन जैसे ही सख्ती कम हुई, रिक्शा चालकों की मनमानी फिर लौट आई।

मुख्यमंत्री के निर्देशों का असर क्षणिक प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री द्वारा ई-रिक्शा संचालन को लेकर जारी किए गए निर्देशों के बाद शासन स्तर से पुलिस को कार्रवाई के स्पष्ट आदेश दिए गए थे। शुरुआत में असर भी देखने को मिला, लेकिन निचले स्तर पर अधिकारियों की उदासीनता के चलते व्यवस्था फिर पटरी से उतर गई।स्थानीय जनता में आक्रोश, समाधान की मांग तेज स्थानीय निवासियों, व्यापारियों और सामाजिक संगठनों ने इस बढ़ती अव्यवस्था को लेकर आक्रोश व्यक्त किया है। लोगों का कहना है कि जब तक ई-रिक्शा संचालन के लिए अलग स्थान निर्धारित नहीं किया जाएगा या नियमों का कठोर पालन नहीं होगा, तब तक सड़क जाम की समस्या यूं ही बनी रहेगी।

स्थानीय लोगों की मांग... स्थायी समाधान और सतत निगरानी

जनता ने प्रशासन से मांग की है कि ई-रिक्शा संचालन के लिए वैकल्पिक मार्ग या स्टैंड निर्धारित किए जाएं, साथ ही ट्रैफिक पुलिस द्वारा नियमित निगरानी की जाए ताकि कस्बे की यातायात व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहे।

पृथ्वी दिवस- प्रकृति के साथ एक नई शुरुआत का संकल्प

धरती का दर्द- हमने लिया सब कुछ, लौटाया क्या? क्या हम तैयार हैं बदलाव के लिए?

धरती की पुकार आज हर दिन तक पहुँच रही है। उसके जंगल आग की लपटों में सुलग रहे हैं, नदियाँ सिसकियों में सूख रही हैं, और हवा, जो कभी जीवन की ताजगी थी, अब जहर बन चुकी है। यह धरती—हमारा एकमात्र आश्रय—हमसे सवाल कर रही है—हमने उसे क्या दिया, जिसने हमें अनमोल जीवन, शुद्ध जल, और हरियाली की गोद दी विश्व पृथ्वी दिवस, जो हर साल 22 अप्रैल को मनाया जाता है, केवल एक दिन नहीं, बल्कि एक जागृति का आलम है। यह वह क्षण है जब हमें रुकना होगा, अपने कर्मों पर विचार करना होगा, और उस ग्रह की रक्षा के लिए कदम उठाना होगा, जिसने हमें सब कुछ दिया। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हम धरती के मालिक नहीं, बल्कि इसके रखवाले हैं। इसका स्वास्थ्य ही हमारी आने वाली पीढ़ियों का भविष्य है। 1970 में अमेरिकी सीनेटर गेलॉर्ड नेल्सन ने पर्यावरणीय तबाही के खिलाफ एक क्रांतिकारी कदम उठाया। उस दौर में औद्योगिक प्रगति ने प्रकृति का बेरहमी से दोहन किया था। कारखानों का धुआं आकाश को ढँक रहा था, नदियाँ रसायनों से जहरीली हो रही थीं, और प्राकृतिक संसाधनों की लूट मानवता को विनाश की ओर धकेल रही थी। 22 अप्रैल 1970 को पहले पृथ्वी दिवस में दो करोड़ लोगों ने हिस्सा लिया। यह एक ऐतिहासिक पल था, जिसने पर्यावरण संरक्षण की वैश्विक चेतना को जागृत किया। इस आंदोलन ने अमेरिका में स्वच्छ वायु अधिनियम (1970) और स्वच्छ जल अधिनियम (1972) जैसे कानूनों को जन्म दिया। आज 193 से अधिक देश इस दिन को मनाते हैं, जो इसे दुनिया का सबसे बड़ा धर्मनिरपेक्ष उत्सव बनाता है। यह दिन हमें अतीत की गलतियों से सीखने और भविष्य को संवारने की प्रेरणा देता है।

धरती आज अभूतपूर्व संकटों से गुजर रही है। संयुक्त राष्ट्र की 2023 की जलवायु रिपोर्ट चेतावनी देती है कि यदि तुरंत कार्रवाई न हुई, तो 2050 तक वैश्विक तापमान 2.7 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। इसके परिणामस्वरूप सूखा, बाढ़, और तूफान 30% अधिक तीव्र और बार-बार होंगे। जैव विविधता का ह्रास भी भयावह है—10 लाख प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं। समुद्र का स्तर 2100 तक 1 मीटर तक बढ़ सकता है, जिससे कोलकाता, मुंबई जैसे तटीय शहर डूबने के खतरे में हैं। प्लास्टिक प्रदूषण ने स्थिति को और गंभीर किया है। हर साल 400 मिलियन टन प्लास्टिक उत्पादित होता है, जिसमें से 14 मिलियन टन समुद्रों में पहुँचता है, जो समुद्री जीवन और मानव खाद्य श्रृंखला को नष्ट कर रहा है। भारत में स्थिति चिंताजनक है—गंगा और यमुना जैसी नदियाँ 70% तक प्रदूषित हैं, और दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक अक्सर 300 से ऊपर रहता है, जो "खतरनाक"स्तर है। ये आँकड़े हमें बताते हैं कि अब और देर नहीं की जा सकती।

पृथ्वी दिवस केवल सामूहिक अभियानों का दिन नहीं है; यह हमारी जीवनशैली को बदलने का अवसर है। यह हमें मजबूर करता है कि हम अपनी आदतों पर सवाल उठाएं। छोटे-छोटे कदम बड़े बदलाव की नींव रख सकते हैं। मसलन, एक रीयूजेबल बोतल अपनाने से हर व्यक्ति सालाना 156 प्लास्टिक बोतलों का कचरा रोक सकता है। एक पेड़ अपने जीवनकाल में 48 पाउंड कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है। अगर भारत का हर नागरिक एक पेड़ लगाए, तो 1.4 अरब पेड़ जलवायु परिवर्तन से लड़ सकते हैं। एलईडी बल्ब इस्तेमाल करने से 50% तक बिजली बचेगी। 5 मिनट की छोटी शॉवर से 10 गैलन पानी की बचत हो सकती है। ये कदम न केवल पर्यावरण की रक्षा करते हैं, बल्कि हमारे संसाधनों को भी संरक्षित करते हैं।

पृथ्वी दिवस की सबसे बड़ी ताकत यह है कि यह हर व्यक्ति को बदलाव का हिस्सा बनने का मौका देता है। स्कूलों में बच्चे पौधे रोपते हैं, युवा साइकिल रैलियों में उत्साह दिखाते हैं, और समुदाय कचरा प्रबंधन में जुटते हैं। लेकिन बदलाव केवल बाहरी प्रयासों तक सीमित नहीं है। यह हमारी रोजमर्रा की आदतों में झलकना चाहिए। कपड़े का थैला अपनाना, बिजली बचाना, पानी का दुरुपयोग रोकना, या कार पूलिंग जैसे कदम सामूहिक रूप से धरती के लिए चमत्कार कर सकते हैं। भारत में स्वच्छ गंगा मिशन, 2030 तक 50% नवीकरणीय ऊर्जा का लक्ष्य, और 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन का संकल्प जैसे प्रयास प्रेरणा देते हैं। पृथ्वी दिवस हमें इन पहलों का हिस्सा बनने और स्थानीय स्तर पर बदलाव लाने का आह्वान करता है।

यह दिन हमें एक गहरे नैतिक दायित्व की याद दिलाता है। धरती हमारी माता है, और उसकी रक्षा हमारा कर्तव्य। हमने उससे शुद्ध हवा, पानी, और उपजाऊ मिट्टी जैसे अनमोल उपहार लिए, लेकिन बदले में उसे प्रदूषण, कचरा, और विनाश दिया। पृथ्वी दिवस हमें सिखाता है कि हमें उपभोक्ता नहीं, संरक्षक बनना होगा। यह सोच केवल 22 अप्रैल तक सीमित नहीं रहनी चाहिए; इसे हमारी जीवनशैली का हिस्सा बनना होगा। हर निर्णय—चाहे वह खरीदारी हो, यात्रा हो, या भोजन हो—धरती के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर लेना होगा। बेवजह बिजली जलाना या कचरे को बिना छाँटे फेंकना जैसे छोटे-छोटे काम धरती पर भारी बोझ डालते हैं। पृथ्वी दिवस की असली ताकत इसकी वैश्विक एकता में है। यह वह दिन है जब अमीर-गरीब, विकसित और विकासशील देश एक साझा लक्ष्य के लिए एकजुट होते हैं। 2016 का पेरिस समझौता, जिसमें 196 देशों ने जलवायु परिवर्तन से लड़ने का वादा किया, इसी एकता का प्रतीक है। लेकिन यह एकता केवल नीतियों और समझौतों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए; इसे हर व्यक्ति के दिल और दिमाग में उतरना होगा। धरती हमारी साझा विरासत है, और इसे बचाना हमारी साझा जिम्मेदारी। अगर हम आज चुप रहे, तो कल की पीढ़ियाँ हमें कभी माफ नहीं करेंगी। वे एक ऐसी धरती पर जीने को मजबूर होंगी जहाँ शुद्ध हवा, पानी, और हरियाली दुर्लभ होंगे। वर्तमान में धरती की हालत चिंताजनक है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, और चरम मौसमी घटनाएँ बढ़ रही हैं। भारत जैसे देश में, जहाँ जनसंख्या का दबाव और औद्योगिक विकास पर्यावरणीय चुनौतियों को और जटिल बनाते हैं, पृथ्वी दिवस का महत्व और बढ़ जाता है। फिर भी, भारत ने राष्ट्रीय स्वच्छ वायु मिशन और 2030 तक कार्बन उत्सर्जन कम करने का संकल्प जैसे कदम उठाए हैं। यह दिन हमें इन प्रयासों में हिस्सेदार बनने की प्रेरणा देता है। पृथ्वी दिवस हमें सिखाता है कि धरती का हर प्राणी, हर पेड़, और हर नदी हमारे जीवन का हिस्सा है। हमारा अस्तित्व प्रकृति के साथ संतुलन में ही संभव है। यह दिन एक संकल्प लेने का अवसर है—कि हम अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के प्रति जागरूक रहेंगे। धरती ने हमें जीवन का अनमोल उपहार दिया है; अब हमारी बारी है कि हम उसे प्यार, देखभाल, और सम्मान लौटाएँ। आइए, इस पृथ्वी दिवस पर वादा करें कि हम हर बदलाव बनेंगे जो धरती को फिर से हरा-भरा और जीवंत बनाएगा। क्योंकि धरती बचेगी, तभी हम बचेंगे।

प्रो. आरके जैन

रोजगार की तलाश में युवा देश की जनसंख्या

युवा नियोजन योजना की जरूरत

भारत एक दशक के बाद सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश होगा और सबसे ज्यादा युवा जनसंख्या वाला भी देश होगा निश्चित तौर पर यह हमारे ऊपर है यह हमारी युवा जनसंख्या का उपयोग हम किस तरह विकास की गति के साथ साथ तालमेल बिठाकर भारत राष्ट्र का गौरव किस तरह बढ़ाते हैंद्य भारत का अधिकांश युवा रोजगार का तलबगार हो गया है,उसे सही मार्गदर्शन और नियोजन की योजना की जरूरत भी है। भारत की युवा और दीवा शक्ति के माध्यम से साइंस, टेक्नोलॉजी,मेडिकल, सेना, कंप्यूटर साइंस और स्वयं उद्यम के माध्यम से वैश्विक स्तर पर भारत को अग्रणी देश बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए द्य अब इस विशाल जनसंख्या का सीमित संसाधन पर कितना दबाव होगा, आप ये कल्पना कर सकते हैं। बहुत अधिक जनसंख्या देश में अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक समस्याओं को जन्म भी देती है। वर्तमान में भारत 141करोड़ जनसंख्या (अनुमानित) के साथ विश्व में दूसरे नंबर पर है पहले नंबर पर चाइना 145(अनुमानित)करोड़ की आबादी वाला देश है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1989 से 11 जुलाई को हर वर्ष जनसंख्या दिवस के रूप में मनाता है पर जनसंख्या नियंत्रण या जनसंख्या नियोजन पर भारत जैसे देश में कोई भी योजना नहीं बनती है। यही जनसंख्या बढ़ चुकी है और भारत में युवा जनसंख्या 60% से ज्यादा है तो इसका सकारात्मक उपयोग ही किया जाना युक्ति युक्त होगा। व्यापारिक दृष्टिकोण से भारत की जनसंख्या बाजार की ताकत है पर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से जनसंख्या विकास के लिए बड़ी बाधक भी है। अधिक जनसंख्या के दबाव में सीमित संसाधन छिन्न-भिन्न हो जाते हैं आम जनता को उनकी मूल जरूरतों की आवश्यक वस्तुएं नहीं मिल पाती और यदि मिलती भी है तो बहुत ऊंची दरों में या बहुत महंगाई के बाद।ऐसे में देश में अनेक समस्याएं पैदा होती है, और सबसे ज्यादा जनसंख्या के दबाव से विकास के लिए संकट खड़ा हो जाता है। विकास धीरे-धीरे मध्यम का अवरुद्ध हो जाता है। देश का आर्थिक नियोजन चरमराने लगता है। वर्ष 1951 से 81 के दशक को भारत की जनसंख्या की विस्फोटक अवधि के रूप में जाना जाता है। यह देश में मृत्यु दर के तीव्र स्खलन और जनसंख्या की उच्च प्रजनन दर के कारण हुआ है। वर्ष 1921 तक की अवधि में भारत की जनसंख्या की वृद्धि स्थिर अवस्था में रही क्योंकि इस अवधि में जनसंख्या वृद्धि की दर काफी निम्न थी। 1981 से लगातार अभी तक जनसंख्या की दर बढ़ती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा बढ़ती जनसंख्या के मुद्दों के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य इस वर्ष विश्व जनसंख्या दिवस स्लोगन 'परिवार नियोजन मानव का अधिकार 'रखा गया है, ताकि बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं के प्रति जागरूक होकर लोगों द्वारा परिवार नियोजन पर उत्साहजनक जोर दिया जाए।

यह स्लोगन यह संकेत करता है कि सुरक्षित एवं शैक्षिक परिवार नियोजन एक जिम्मेदार नागरिक का अधिकार है और यह सभी लोगों को सशक्त बनाएगा और देश में विकास की गति को तेज करने में सहायक भी होगा। भारत की जनसंख्या बढ़ने का प्रमुख कारण बढ़ती जन्म दर और कम मृत्यु दर भी है। जनसंख्या वृद्धि के कारण देश मैं बेरोजगारी गरीबी पर्यावरण प्रदूषण जैसी समस्याएं चुनौती बनकर सामने आई जो समाज व्यक्ति और राष्ट्र सभी के विकास को अवरुद्ध करती है। हमारे पास उपलब्ध संसाधन इतनी बड़ी आबादी के लिए कतई पर्याप्त नहीं है। विकास और देश की समृद्धि के लिए जनसंख्या नियंत्रण एक आवश्यक अंग हो सकता है। कई यूरोपीय देशों ने अपनी बढ़ती जनसंख्या एवं संसाधनों में उचित तालमेल हेतु परिवार नियंत्रण प्रणाली को का निर्णय लिया किंतु एक समय बाद वहां कार्यशील जनसंख्या की अपेक्षा वृद्धों की संख्या में वृद्धि हुई जिससे मानव संसाधन की समस्याएं उनके सामने आने लगी हैं। चीन में पहले जनसंख्या नियंत्रण किया गया था। सरकार ने वैधानिक रूप से एक या दो बच्चे पैदा करने की शर्तें लागू की थी, पर

वहां बुजुर्गों, वृद्धों की संख्या में भारी वृद्धि होने के पश्चात चीन की सरकार ने ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने की अपनी जनता से अपील की है। जापान एक छोटा सा देश होने के बावजूद अपने सीमित संसाधनों के चलते अपने नवाचार तथा तकनीकी शक्ति के बल पर विकासशील देशों के समकक्ष खड़ा है। भारत जैसे विशाल देश में जहां बहुत बड़ी जनसंख्या भी है और विकास के लिए आवश्यक संसाधन भी हैं, विकास करने के लिए केवल विशाल जनसंख्या के साथ सामंजस्य बिठाने की आवश्यकता होगी। भारत में जनसंख्या नियंत्रण के साथ-साथ उसके अनुपात में संसाधनों का संतुलन बना कर विकास की नई दिशा दी जा सकती है।

संसाधनों की उचित दोहन हेतु सही और सटीक नीति तथा उसके क्रियान्वयन की आवश्यकता होगी। इसके अलावा नवाचार एवं उचित तकनीक प्रौद्योगिकी को भी अमल में लाना होगा। भारत विश्व का प्रथम देश है जिसने 1952 में परिवार नियोजन कार्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर शुरू किया इसका परिणाम भी अच्छा हुआ था कि पिछले कुछ दशकों में जनसंख्या की वृद्धि में संतोषजनक गिरावट आई है। यह तो विदित है कि किसी भी राष्ट्र की संतुलित विकास की धारा तभी संभव है जब वहां के विकास में सहायक संसाधनों का संतुलन बना रहे। किसी एक घटक का संतुलन यदि गड़बड़ होता है तो विकास के लिए गंभीर समस्याएं जन्म लेना शुरू करती हैं। भारत की जनसंख्या इसी रफ्तार से बढ़ती रही तो दिन दूर नहीं जब संसाधनों की कमी से भारत को जूझना होगा फिर विकास की बात बेमानी हो जाएगी। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जनसंख्या दिवस मनाने का उद्देश्य है कि व्यक्ति समाज सरकार और योजना कानों के मन में इस विषय से संबंधित समस्याओं के प्रति चेतना संवेदना जगाना ही है ताकि लोगों में बढ़ती जनसंख्या से जुड़ी समस्याएं एवं अवरोधों के बारे में जागरूकता ज्यादा से ज्यादा विस्तारित हो। भारत के पास विकास के सभी मापदंड होते हुए भी देश पिछड़ा हुआ है, भारत में तकनीकी का कम विकास, कमजोर शिक्षा ,परंपरागत स्रोत, कृषि का निम्न स्तर, आर्थिक असमानता जैसी अनेक समस्याएं हैं जो विकास मैं बाधक बनती रही है। वर्तमान में देश के पास प्राकृतिक एवं मानव संसाधन इतना है कि बढ़ती जनसंख्या की समस्याओं से आसानी से निपटा जा सके पर इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि संसाधनों का उचित दोहन तथा उसका सही उपयोग विकास की दिशा में भ्रष्टाचार से बचाकर किया जाए। यह अत्यंत उल्लेखनीय है कि जनसंख्या की समस्या से निपटने तथा विकास की दर को बढ़ाने की जिम्मेदारी केवल शासन प्रशासन की ही नहीं है इसके लिए आम नागरिक भी जिम्मेदार है क्योंकि समस्याएं खड़ी करने में आमजन का एक बड़ा वर्ग भी है, इसीलिए हम सबको जनसंख्या नियंत्रण और विकास की धारा को सही दिशा प्रदान करने के लिए सक्रिय सहयोग देना होगा तब ही देश एक सशक्त राष्ट्र बन पाएगा।

संजीव ठाकुर

संपादकीय

कब रुकेगा नवजात बच्चों की खरीद फरोख्त का सिलसिला?

सुप्रीम कोर्ट ने नवजात बच्चों को खरीद-फरोख्त रोकने के लिए देश के अस्पतालों को जो दिशा-निर्देश जारी किया है, वह ऐतिहासिक होने के साथ ही मानवीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। एक मां जो अपने बच्चे को नौ महीने कोख में रखने के बाद तमाम पीड़ा सहते हुए उसे जन्म देती है और उसको यह पता चले कि उसका बच्चा चोरी हो गया है, तो इससे ज्यादा असहनीय पीड़ा और दर्द किसी मां के लिए हो ही नहीं सकती है। हालांकि अपने देश में यह आम बात हो गया है, क्योंकि प्रतिदिन ऐसे गिरोह का पर्दाफाश होते ही रहता है, जो नवजातों की तस्करी में शामिल हैज गिरोह प्रतिदिन कई माताओं की गोद के सूनी कर देते हैं औरध्यन्यन्यन्यल उनको जिंदगी भर का ऐसा काट और पीड़ा देते हैं, जिसको वह जीते जी नहीं भूल पाती हैं। इसलिए देश की सबसे बड़ी अदालत ने इस मामले में जो फैसला सुनाया है और दिशा-निर्देश जारी किया है, वह बाल तस्करी रोकने के मामले में मील का पत्थर साबित हो सकता है। अदालत ने बाल तस्करी के मामलों से निपटने के तरीके को लेकर यूपी सरकार और इलाहाबाद हाईकोर्ट को फटकार लगाई है और साथ हो बच्चों की तस्करी को रोकने और बाल तस्करी अपराधों से जुड़े मामलों से निपटने के लिए राज्य सरकारों के लिए व्यापक दिशा-निर्देश निर्धारित किए हैं। दरसअल वाराणसी और उसके आसपास के अस्पतालों में हुई बच्चा चोरी की घटनाओं के आरोपियों को इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 2024 में जमानत दे दी थी और इसके खिलाफ बच्चों के परिवारों ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। सुप्रीम कोर्ट ने मामले को सुनते हुए इसका दायरा बढ़ा दिया था और राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग और भारतीय इंस्टीट्यूट ऑफ डेवेलपमेंट से रिपोर्ट मांगी थी। इसके आधार पर अब दिए फैसले में सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस जे वी पारडीबाला की अध्यक्षता वाली बेंच ने आरोपियों की जमानत रद्द कर दी है। कोर्ट ने इस बात को फैसले में दर्ज किया है कि यह देशव्यापी गिरोह था और इसके चुराए हुए बच्चे पश्चिम बंगाल, झारखंड और राजस्थान तक से बरामद हुए हैं। सुप्रीम कोर्ट ने आरोपियों को समाज के लिए खतरा बताया और कहा कि इन्हें जमानत देना हाई कोर्ट के लापरवाह रवैये को दिखाता है। जमानत के आदेश को चुनौती न देने के लिए

उत्तर प्रदेश सरकार की भी आलोचना की है। शीर्ष न्यायालय ने बाल तस्करी के मामले में भारतीय इंस्टीट्यूट की तरफ दिए गए सुझावों को अपने फैसले में जगह दी है और सभी राज्य सरकारों कहा है कि उसे पढ़ कर अमल करें। एक अहम निर्देश देते हुए कोर्ट ने कहा है कि अगर कोई महिला बच्चे को जन्म देने के लिए हॉस्पिटल आती है और वहां से नवजात बच्चा चोरी हो जाए, तो सबसे पहले हॉस्पिटल का लाइसेंस सरकार को रद्द कर देना चाहिए। इससे बच्चा चोरी की घटनाओं में कुछ हद तक लगाम लग सकेगी। कोर्ट ने सभी माता-पिता को सलाह दी है कि वह अस्पताल में अपने नवजात बच्चों की सुरक्षा को लेकर ज्यादा सतर्क रहें। सबसे बड़ी बात है कि शीर्ष न्यायालय ने सभी हाई कोर्ट से कहा है कि वह चाइल्ड ट्रैफिकिंग के लंबित मुकदमों का ब्यौरा लें और ट्रायल कोर्ट को उनका निपटारा 6 महीने में करने का निर्देश दें। इसके साथ अदालत ने राज्य सरकारों को निर्देश दिया है वह फैसले के पैराग्राफ 34 में दर्ज की गई सिफारिशों को पड़े और उन पर अमल शुरू करें। अदालत के अनुसार बच्चों के गायब होने की घटनाओं को तब तक अपहरण या मानव तस्करी की तरह देखा जाए, जब तक जांच में कोई और बात सामने नहीं आती। जो लोग पीड़ित हैं, पुलिस उनका विश्वास जीतने की कोशिश करें। उन्हें ऐसा न महसूस कराए जैसे उनके खिलाफ ही जांच हो रही है। मानव तस्करी में शामिल लोगों से सख्ती हो और उनके खिलाफ बैंक खाता फ्रीज करने और अवैध संपत्ति जब्त करने जैसी कार्रवाई हो। मानवीय संवेदनाओं पर अहम टिप्पणी करते हुए अदालत ने कहा है कि अगर किसी माता-पिता का नवजात बच्चा मर जाए, तो उन्हें दुख होता है। वह सोचते हैं कि बच्चा ईश्वर के पास वापस चला गया है, लेकिन अगर उनका नवजात बच्चा चोरी हो जाए, तो उनके दुख का अनुमान नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि अब उनका बच्चा एक अज्ञात गिरोह के पास है। देखा जाए तो शायद ही ऐसा कोई सप्ताह जाता है, जब बच्चों की तस्करी का मामला सामने नहीं आता हो। दो दिन पहले ही देश की राजधानी दिल्ली में नवजात बच्चों की खरीद-फरोख्त का घिनौना कारोबार का मामला सामने आया है। दिल्ली पुलिस ने 'ऑपरेशन नवजात 'के तहत एक ऐसे अंतरराज्यीय मानव तस्करी गिरोह का पर्दाफाश किया है जो गरीब परिवारों के मासूम बच्चों को उठाकर दिल्ली-एनसीआर के अमीर निःसंतान कपल को बेचता था। द्वारका जिला पुलिस ने इस मामले में त्वरित कार्रवाई करते हुए गुजरात, राजस्थान और दिल्ली में फैले इस सिंडिकेट के तीन सदस्यों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से महज 3-4 दिन का एक नवजात शिशु भी बरामद किया है। पुलिस जांच में जो बातें सामने आई हैं वह और भी चौंकाने वाली हैं, क्योंकि अब तक इस गिरोह ने 30 से ज्यादा बच्चों को दिल्ली-एनसीआर के अमीर परिवारों को बेचा है। गिरोह के सदस्य राजस्थान और गुजरात के सीमावर्ती इलाकों से गरीब तबके के बच्चों को चोरी करते थे। खासकर गुजरात-राजस्थान बॉर्डर के पाली इलाके में आदिवासी समाज के बच्चों को निशाना बनाया जाता था। कुछ मामलों में तो परिवारों को गुमराह कर या फुसलाकर उनके बच्चों को ले जाया जाता था। इसके बाद इन बच्चों को 5 लाख से लेकर 10 लाख रुपये में बेच दिया जाता था। ऐसा गिरोह सिर्फ दिल्ली में ही नहीं, बल्कि देश के प्रत्येक राज्य में फैला हुआ है और समय-समय पर राज्य पुलिस के द्वारा कार्रवाई भी की जाती है। लेकिन यह गिरोह जिस प्रकार से पूरे देश में अपनी जाल बिछा चुका है, उसको तोड़ने की जरुरत है। इसके लिए राज्य पुलिस और खुफिया विभाग को मिलकर इस गिरोह पर शिंकजा कसना होगा। अच्छी बात है कि जिस प्रकार से सुप्रीम कोर्ट ने सख्त आदेश देते हुए नवाजातों के मामलो को छह महीने के भीतर निपटाने और अस्पतालों का लाइसेंस रद्द करने का निर्देश दिया है, इससे उम्मीद की किरण दिखायी देने लगी है कि देश में नवजातों का खरीद-फरोख्त का अवैध धंधा बंद होगा और फिर से किसी मां की कोख सूनी नहीं होगी।

मनोज कुमार अग्रवाल

कूड़ेदान से उठाई रोटी और गिरती हुई मानवता - एक राष्ट्र की मौन स्वीकृति

हर सुबह जब शहर की रफ्तार दौड़ने लगती है, दफ्तरों की गाड़ियाँ सरपट सड़कों पर भागने लगती हैं, दुकानों के शटर उठते हैं, चाय की दुकानों पर चर्चाएँ गरम होती हैं, और रेड लाइट्स पर भीड़ अपनी मंज़िलों की ओर देखने लगती है उसी समय किसी गली के मोड़ पर, किसी कूड़ेदान के सामने, एक नन्हा सा बच्चा खड़ा होता है। उसका चेहरा धूल से ढका होता है, उसके नंगे पाँवों पर बीते कल की थकान होती है, और उसकी आँखों में वह भूख तड़पती है जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता। वह झुकता है, अपने नन्हें हाथों से कूड़े के ढेर को टटोलता है, सड़ी हुई सब्ज़ियाँ, जूठे डिब्बे और फेंके गए ब्रेड के टुकड़े उसकी आशा बन जाते हैं। उसके लिए वह कूड़ेदान केवल गंदगी का ढेर नहीं होता, बल्कि जीवित रहने की सबसे बड़ी उम्मीद होता है। यह दृश्य सिर्फ़ एक बच्चे का नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आत्मा का आईना है एक आईना जो टूट चुका है, बिखर चुका है, और हमने उससे मुँह मोड़ लिया है। उस बच्चे के पास कोई स्कूल नहीं, कोई घर नहीं, कोई अधिकार नहीं सिर्फ़ भूख है, अभाव है और बेबसी है। और यह सब उस देश में हो रहा है जो दुनिया की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक व्यवस्था होने का दावा करता है, जो अमृतकाल की बात करता है, और जो यह कहता है कि उसके बच्चों में विश्वगुरु बनने की क्षमता है। पर क्या वाकई कोई देश तब तक महान कहलाने का अधिकारी है जब उसके भविष्य उसके बच्चे कूड़ेदान से रोटी उठाने को मजबूर हों? क्या हमने यह मान लिया है कि ऐसे दृश्य इस देश का सामान्य हिस्सा हैं? और यदि हाँ, तो यह स्वीकारोक्ति नहीं, यह हमारी राष्ट्रीय चेतना का पतन है। हमारे संविधान ने हर नागरिक को गरिमा के साथ जीवन का अधिकार दिया है। बच्चों को शिक्षा, पोषण, स्वास्थ्य और सुरक्षा देना राज्य का दायित्व है। लेकिन इन काग़ज़ी घोषणाओं की कोई अर्थवत्ता तब नहीं रह जाती, जब करोड़ों बच्चे आज भी भूखे पेट सोते हैं, जब वे स्कूल की बजाय होटल, ढाबे, कूड़ा-बीनने और भीख माँगने में लगे हैं। वे संविधान के पन्नों पर दर्ज अधिकारों को न जानते हैं, न समझते हैं। उनके लिए देश एक ऐसा शब्द है जिसका कोई मूर्त रूप नहीं उनके लिए सिर्फ़ रोटी है, भूख है, और जीने की जद्दोजहद है। हमारे चारों ओर ऐसे

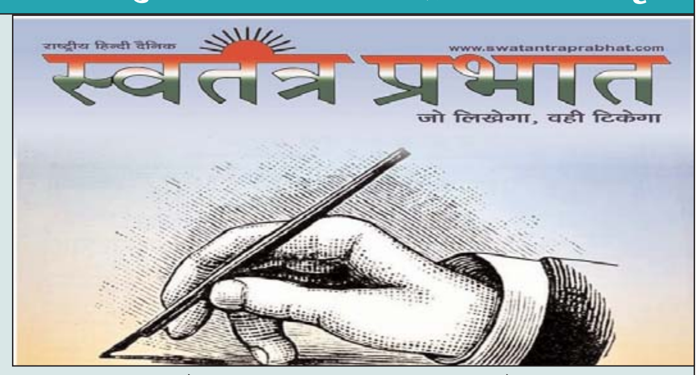

हजारों, लाखों बच्चे हैं जो बचपन में ही जीवन की कठोरता से परिचित हो जाते हैं। वे खेलते नहीं, गाते नहीं, हँसते नहीं वे जीते नहीं, वे बस ज़िंदा रहते हैं। उनके चेहरे पर जो सूखापन है, वह सिर्फ़ गरीबी का नहीं है, वह उपेक्षा का है हम सबकी सामूहिक उपेक्षा का। जब समाज का सबसे मासूम, सबसे निर्बल हिस्सा इस तरह भूख और अपमान के साथ जीने को मजबूर हो, तब किसी भी प्रगति, किसी भी उपलब्धि, किसी भी वैश्विक सम्मान का कोई मूल्य नहीं बचता। समस्या केवल गरीबी की नहीं है, समस्या संवेदनहीनता की है। हमने इन बच्चों को देखना बंद कर दिया है। हमने उन्हें कूड़े के ढेर का हिस्सा मान लिया है। अगर कोई बच्चा रोटी माँगे तो हम उसे डाँटते हैं, अगर वह ट्रैफिक सिग्नल पर काँच साफ़ करे तो हम गाड़ी आगे बढ़ा लेते हैं। हम भूल जाते हैं कि वह बच्चा दरअसल अपने हिस्से का जीवन हमसे माँग रहा है वह कोई एहसान नहीं चाहता, वह सिर्फ़ एक समान अधिकार चाहता है। किसी भी राष्ट्र की असली ताक़त उसके बच्चे होते हैं। पर जब वही बच्चे कुपोषित हों, अशिक्षित हों, असहाय हों, तो वह राष्ट्र आत्मिक रूप से दुर्बल हो जाता है। कूड़ेदानों में सिर झुकाकर रोटी खोजते ये बच्चे दरअसल हमारे समाज की आत्मा को आईना दिखाते हैं। वे हमें बार-बार सवाल करते हैं कहाँ है तुम्हारी मानवता? कहाँ है तुम्हारा धर्म? कहाँ हैं वे मूल्य जिन पर यह राष्ट्र खड़ा हुआ था? धर्मशास्त्रों में अन्न दान को सबसे श्रेष्ठ दान कहा गया है। सेवा को ईश्वर की उपासना माना गया है। हर धर्म ने भूखे को खाना खिलाना, गरीब की मदद करना, और बच्चों की रक्षा को सर्वोपरि बताया है। फिर भी आज जब कोई बच्चा मंदिर के सामने भूखा खड़ा होता है, मस्जिद के बाहर सूखी रोटियों की उम्मीद करता है, चर्च की सीढ़ियों पर काँपता है, गुरुद्वारे की ओर देखता है तो हमारी धार्मिकता की पोल खुल जाती है। सेवा अब केवल सोशल मीडिया के स्टेटस तक सीमित हो गई है, और ज़मीन पर भूख, बेघरपन और असहायता अपने चरम पर है। यह केवल सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं है। यह हमारी भी ज़िम्मेदारी है एक नागरिक के रूप में, एक माता-पिता के रूप में, एक शिक्षित समाज के सदस्य के रूप में। अगर हर मोहल्ले में, हर कॉलोनी में, हर स्कूल में, हर धर्मस्थल में हम यह प्रण लें कि हम कम-से-कम एक भूखे बच्चे के लिए भोजन, शिक्षा और सम्मान सुनिश्चित करेंगे, तो यह दृश्य बदल सकता है। यह समय है कि हम सिर्फ़ चंदे या घोषणाओं से आगे बढ़ें। यह समय है कि हम अपनी ज़िम्मेदारी को व्यक्तिगत और प्राथमिक समझें। हमें बच्चों को दया की नहीं, अधिकार की दृष्टि से देखना होगा। हमें उनकी भूख को अपनी आत्मा की भूख समझना होगा। कूड़ेदान से उठाई गई रोटी से पेट तो भर सकता है, पर जीवन नहीं बनता। जीवन तब बनता है जब बच्चे को प्यार मिले, सुरक्षा मिले, शिक्षा मिले और सपने देखने का हक़ मिले। जब तक हम इन बच्चों को वह हक़ नहीं देंगे, तब तक हम सच्चे अर्थों में स्वतंत्र नहीं हैं, विकसित नहीं हैं, और मानव नहीं हैं। जब अगली बार आप किसी सड़क पर जाएँ और कोई बच्चा कूड़ेदान में कुछ खोजता दिखे तो मत गुजरिए चुपचाप। उसकी आँखों में झाँकिए, उसकी भूख को महसूस कीजिए। और फिर सोचिए, क्या यही वह भारत है जिसे हम गौरव से माँ कहते हैं? यदि नहीं, तो फिर कुछ कीजिए अभी, यहीं, आज। क्योंकि हर भूखा बच्चा, हर टूटा हुआ बचपन, हर गली का यह दृश्य हमारे संवेदी मौन के विरुद्ध उठती एक जीवंत पुकार है। और इस पुकार का उत्तर हमें देना ही होगा।

हंसराज चौरसिया

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवि कुमार अवस्थी द्वारा अनवर ऑफसेट एम्- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उप्मान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित **संपादक-राजीव कुमार शुक्ल,** मो0- 7499472288
E-Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं संपादन हेतु पी आर बी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त खबरें

जिगर इंटर कॉलेज मैदान में हुआ रोमांचक क्रिकेट मैच, खिलाड़ियों ने दिखाया शानदार प्रदर्शन

गोंडा। जिगर इंटर कॉलेज के मैदान पर रविवार को एक रोमांचक 12-12 ओवर का क्रिकेट मैच खेला गया, जिसमें क्रिकेट प्रेक्टिस गोन्डा के प्रसिद्ध कोच और वरिष्ठ क्रिकेट खिलाड़ी अख्तर अंसारी द्वारा प्रशिक्षित खिलाड़ियों ने भाग लिया। इस मैच में दोनों टीमों के बीच कड़ा और बराबरी का मुकाबला देखने को मिला।मैच में भाग लेने वाले खिलाड़ियों में प्रियांशु, दिव्यांशु, ज़ैद, अगम, अर्णव, अथर्व मित्तल, शिवांश, हुसैन, सैयद फ़राज़ अहमद, सैय्यद फ़हाद, मयंक तिवारी, अश्हद ,अन्नत श्रीवास्तव,सौरभ, रेहान, हमज़ा, अशफाक ,शादबारी जैसे होनहार युवाओं ने अपने खेल कौशल से सभी को प्रभावित किया।मैच के समापन पर खिलाड़ियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर खिलाड़ियों के उत्साहवर्धन के लिए उनके अभिभावक (गार्जियन) भी उपस्थित रहे, जिन्होंने बच्चों की सराहना करते हुए आयोजन की सराहना की।कोच अख्तर अंसारी ने खिलाड़ियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसी प्रतियोगिताएं न केवल खेल भावना को बढ़ावा देती हैं, बल्कि बच्चों के आत्मविश्वास और प्रतिभा को निखारने में भी सहायक होती हैं।

किसी भी कीमत में राजस्व वसूली में लापरवाही नहीं होगी बर्दाश्तःड़ीएम

अलीगढ़। जिलाधिकारी संजीव रंजन की अध्यक्षता में कलैक्ट्रेट सभागार में कर-करेत्तर, राजस्व वसूली की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। जिलाधिकारी ने सभी विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि नया वित्तीय वर्ष आरंभ हो गया है। शुरुआत से ही प्रगति को बनाए रखें। पोर्टल फीडिंग पर विशेष ध्यान रखें। आईजीआरएस पर प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के साथ ही डिफॉल्टर एवं असंतोषजनक फ़ीडबैक पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि राजस्व वसूली के कार्यों में गति लाएं और निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति समयबद्ध रूप से सुनिश्चित की जाए। उन्होंने लंबित वसूली प्रकरणों की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को प्रभावी ढंग से वसूली कार्य मे तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राजस्व वसूली शासन की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में विशेष रूप से भू-राजस्व, जलकर, विद्युत बकाया, स्टांप एवं निबंधन शुल्क, परिवहन, आबकारी, नगरीय निकाय, मंडी, खनन, बाट माप, लोनिवि, वन समेत अन्य मदों की वसूली पर विस्तार से चर्चा की गई। जिलाधिकारी ने विभागवार वसूली की प्रगति समीक्षा की और विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि आरंभ से ही अच्छे से कार्य करते हुए लक्ष्य हासिल करें। बैठक के अंत में जिलाधिकारी ने आगामी समीक्षा बैठक तक ठोस प्रगति प्रस्तुत करने के निर्देश दिए और सभी अधिकारियों से समन्वय के साथ कार्य करने का आह्वान किया। बैठक में एडीएम वित्त मीनू राणा एवं सबंधित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

शहर में से हटाई नगर निगम ने अवैध प्रचार सामग्री

अलीगढ़। शासन के दिशा निर्देशों का शत प्रतिशत अनुश्रवण कराते हुए नगर आयुक्त विनोद कुमार के निर्देश पर दो दिवसीय अवैध प्रचार सामग्री को हटाने का अभियान नगर निगम द्वारा युद्ध स्तर पर चलाया जा रहा है। अभियान की अगुवाई सहायक नगर आयुक्त वीर सिंह कर रहे है दो दिवसीय अभियान के तहत अलीगढ़ नगर निगम ने स्मार्ट रोड दीवानी कचहरी रामघाट रोड आगरा रोड सेंटर पॉइंट रेलवे रोड सहित शहर की प्रमुख सड़क और चौराहा से अवैध प्रचार सामग्री के अंतर्गत होर्डिंग बैनर पोस्टर को हटाया गया है।नगर आयुक्त विनोद कुमार ने कहा शहर की सुंदरता को बनाए रखने के लिए सभी को एक साथ मिलकर नगर निगम का सहयोग करना चाहिए जिस तरह सड़क पर कचरे को फेंकने से शहर की स्वच्छता खराब होती है। तो वहीं अवैध प्रचार सामाग्री से शहर की सुंदरता भी खराब होती है शहर की सुंदरता को बनाए रखने के लिए नगर निगम का सहयोग करें।

खजनी में खनन माफियाओं का आतंक- खजनी बना अवैध खनन का गढ़, प्रशासन की चुप्पी पर सवाल!

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- जिले के खजनी थाना क्षेत्र में अवैध खनन का काला कारोबार चरम पर है। सतुआभार, रावतडाड़ी डोडो नैपुरा, बसियखोर और सहीदाबाद जैसे इलाकों में खनन कर्ता बेखौफ होकर दिन-रात मशीनें चला रहे हैं। ट्रक और ट्रैक्टर-ट्रॉलियां धूल के गुबार के साथ खनिज लादकर निकल रही हैं, लेकिन खनन विभाग और जिला प्रशासन की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो रही। स्थानीय लोगों का आरोप है कि यह खेल प्रशासनिक मिलीभगत के बिना संभव नहीं।'

जेम दर्शन' पोर्टल बना मजाक, रॉयल्टी स्लिप गायब

सरकार ने अवैध खनन पर लगाम कसने के लिए 'जेम दर्शन' पोर्टल शुरू किया, जिसमें हर खनन गतिविधि और रॉयल्टी की एंट्री अनिवार्य है। लेकिन खजनी क्षेत्र में यह व्यवस्था कागजों तक सिमटकर रह गई है। सूत्रों के मुताबिक, अधिकांश ट्रकों के पास न तो रॉयल्टी स्लिप है और न ही कोई वैध दस्तावेज। इसके बावजूद खनन माफिया बेरोकटोक कारोबार चला रहे हैं। सवाल उठता है कि क्या जिम्मेदार अधिकारी जानबूझकर आँखें मूंदे हुए हैं? मुखबिरों की सूचना पर भी कार्रवाई नहीं

स्थानीय लोगों और सूत्रों का दावा है कि खनन विभाग को बार-बार अवैध खनन की सूचना दी जा रही है, लेकिन अधिकारी मौके पर पहुँचकर भी अनदेखी करते हैं। एक ग्रामीण ने गुस्से में कहा, खनन की गाड़ियाँ सड़कों पर दौड़ रही हैं, धूल से साँस लेना मुश्किल हो गया है, लेकिन अधिकारियों को कुछ दिखता ही नहीं। क्या उनकी आँखों पर पट्टी बंधी है?

पर्यावरण और जनजीवन पर खतरा

अवैध खनन से खजनी क्षेत्र का भू-भाग तेजी से खोखला हो रहा है। पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ने के साथ-साथ भूजल स्तर भी प्रभावित हो रहा है। विशेषज्ञों की मानें तो अगर यह सिलसिला नहीं रुका, तो आने वाले समय में यह क्षेत्र पर्यावरणीय आपदा का शिकार बन सकता है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि धूल और शोर से उनका जीना मुहाल हो गया है, और प्रशासन की चुप्पी उनकी मुश्किलें बढ़ा रही है।

क्या कहते हैं नियम?

उत्तर प्रदेश सरकार के खनन नियमों के अनुसार, बिना अनुमति और बिना रॉयल्टी के खनन पूरी तरह अवैध है। 'जेम दर्शन' पोर्टल पर हर खनन गतिविधि का रिकॉर्ड रखना अनिवार्य है। नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई, जैसे जुर्माना, वाहन जब्ती और मुकदमा दर्ज करने का प्रावधान है। लेकिन गोरखपुर के खजनी में ये नियम सिर्फ कागजों पर नजर आते हैं।

प्रशासन की चुप्पी, मिलीभगत का शक

खनन माफियाओं की बेखौफ हरकतें और प्रशासन की निष्क्रियता से मिलीभगत के आरोप तेज हो रहे हैं। एक सामाजिक कार्यकर्ता ने नाम न छापने की शर्त पर बताया, ÷बिना ऊपरी संरक्षण के इतना बड़ा खेल नहीं चल सकता। मलाई में कई लोग हिस्सेदार हैं।" हाल ही में ङ्क पर एक पोस्ट में भी खनन विभाग और पुलिस पर मिलीभगत का आरोप लगाया गया, जिसमें कहा गया कि "अधिकारियों की चुप्पी स्पष्ट संकेत देती है कि वे या तो सब जानते हैं या जानबूझकर अनदेखी कर रहे हैं।" जिला प्रशासन से सवालखनन माफियाओं पर कार्रवाई कब होगी?'जेम दर्शन' पोर्टल के नियमों की अनदेखी क्यों हो रही है? क्या

जिम्मेदारों की चुप्पी महज लापरवाही है या साठगांठ का नतीजा?
पर्यावरण और जनजीवन को खतरे में डालने वाला यह खेल कब रुकेगा?
जागो, गोरखपुर प्रशासन!

खजनी क्षेत्र में अवैध खनन का तांडव अब बर्दाश्त के बाहर हो चुका है। जिला प्रशासन और खनन विभाग को तत्काल कठोर कदम उठाने होंगे। अगर समय रहते कार्रवाई नहीं हुई, तो खजनी का यह 'खनन हॉटस्पॉट' एक बड़े पर्यावरणीय और सामाजिक संकट का कारण बन सकता है। जनता अब जवाब माँग रही है—क्या प्रशासन अपनी जिम्मेदारी निभाएगा, या माफियाओं के सामने घुटने टेकेगा?

एसपी ने ली बीट अधिकारियों की बैठक

चित्रकूट – पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने सोमवार को पुलिस कार्यालय चैम्बर में थाना व चौकियों में तैनात बीट पुलिस अधिकारियों की बीट बुक चेक की। साथ ही बीट प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बीट प्रणाली के प्रभावी रूप से क्रियान्वयन कराने के सम्बन्ध में पुलिस कार्यालय चैंबर में पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह ने थाना व चौकी में तैनात बीट पुलिस अधिकारियों की बीट बुक को चेक किया। साथ ही बीट प्रणाली को सुदृढ़ बनाए जाने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कानून व्यवस्था एवं अपराध पर नियंत्रण के लिए पुलिस हल्कों का जानकारी दी। एसपी ने बीट अधिकारियों को उनके कर्तव्य एवं अधिकार, ग्राम प्रहरियों का दायित्व, सी-प्लान एप का उपयोग, बीट क्षेत्र में लाइसेन्स धारकों, पासपोर्ट धारकों, सम्भ्रान्त व्यक्तियों के नाम बीट बुक में दर्शाने, थाने पर प्राप्त सभी प्रकार के बीट सम्मन, नोटिस, वारण्ट, प्रार्थना पत्र जांच, चरित्र सत्यापन, विवेचना सम्बन्धित पासपोर्ट, तामिला, क्षेत्रीय त्यौहारों के सम्बन्ध में जानकारी दी।

खोड़ारे की एंटी रोमियो टीम ने महाविद्यालय मे छात्राओं को जागरूक किया

स्वतंत्र प्रभात

मनकापुर गोण्डा – थाना क्षेत्र अंतर्गत मिशन शक्ति के अंतर्गत थाने द्वारा गठित एंटी रोमियो टीम द्वारा हकीकुल्लाह चौधरी महा विद्यालय घारीघाट गोण्डा के परिसर मे पहुंच कर उपस्थित छात्र छात्राओं को महिला कांस्टेबल रितिका सिंह ने महिला सुरक्षा संबंधित साइबर क्राइम 1930, 1090, 1076, आपात कालीन सेवा डायल 112, एम्बुलेंस सेवा 108,102 सहित अन्य एमरजेंसी नंबरों जानकारी देते हुए कहा कि अगर आपको कहीं भी आने जाने मे असुविधा होती है तो तुरंत उपरोक्त नंबरों पर काल करके जानकारी दे है सकते फोन करने वाले का नाम और डीटियल गोपनीय रखी जाएगी साथ ही साथ महिला कांस्टेबल रितिका सिंह ने कहा कि अगर किसी के पास अनजाने नम्बर से व्हाट्सप काल या फोन अथवा आडियो काल आए तो उसे रिसिब न करे,अगर आप लोगो को कोई अनावश्यक रूप से परेशान कर रहा हो तो तुरंत फोन से हमारे पुलिस को सूचित करे। तुरंत आपके सहयोग के लिए हमारी पुलिस पहुंचकर सहयोग करेंगे,आप लोग भी जागरूक हो और अपने आस पास के लोगो को भी जागरूक करे। इस अवसर पर एस आई कपिल गिरी, महिला कांस्टेबल रितिका सिंह, कॉंस्टेबल आदर्श वर्मा, कांस्टेबल मिथलेश साह सहित विद्यालय के डॉक्टर प्रमोद कुमार दुबे, धर्मेंद्र गौड़,गनेश पटेल, दिनेश कुमार वर्मा, एजाज अहमद, कोमल शर्मा महेश कुमार यादव, शिव शंकर यादव सहित समस्त स्टॉफ और छात्रा मौजूद रहे।

गोरखपुर में पुलिस की बड़ी कामयाबी- हत्या के तीन आरोपी धराए, खून से सने डंडे और पल्सर बाइक बरामद

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- गोरखपुर पुलिस ने अपराधियों पर नकेल कसते हुए एक जघन्य हत्या के मामले में तीन खूंखार आरोपियों को गिरफ्तार कर सनसनीखेज खुलासा किया है। सहजनवां पुलिस ने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गौरव ग्रोवर के निर्देश पर चलाए गए अभियान में हिंमाशु सिंह, रितेश यादव और बृजेश को दबोच लिया। इनके कब्जे से हत्या में इस्तेमाल तीन खून से सने डंडे और एक पल्सर मोटरसाइकिल (P53DJ9644) बरामद की गई है।

क्या है पूरा मामला?

डाइनामाइट न्यूज संवादाता अनुसार 18 अप्रैल 2025 को सहजनवां थाने में वादिनी ने तहरीर दी कि पुराने विवाद के चलते रामसिंह और उसके साथियों ने उसके सहयोगी को घेरकर लाठी-डंडों से बेरहमी से पीटा, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने तुरंत मुकदमा संख्या 230/2025 धारा 103(1)/126(2) BNS दर्ज कर जांच शुरू की। थानाध्यक्ष महेश कुमार चौबे की अगुवाई में गठित टीम ने ताबड़तोड़ कार्रवाई करते हुए तीनों आरोपियों को धर दबोचा।आरोपियों का काला चिट्ठाहिंमाशु सिंह (मुस्तफाबाद उर्फ मलऊर, सहजनवां)- पहले से कई आपराधिक मामलों में लिप्त। हाल के मुकदमों में गीडा थाने में दर्ज मुकदमा संख्या 194/25 शामिल।रितेश यादव (बस्तीदेवा, खलीलाबाद, संतकबीर नगर)- हत्या के इस मामले में मुख्य साजिशकर्ताओं में से एक।बृजेश (धर्मदास पट्टी, सहजनवां)- हत्या में सक्रिय भूमिका है ।

पुलिस की जांबाज टीम

थानाध्यक्ष महेश कुमार चौबे के नेतृत्व में उपनिरीक्षक घनश्याम उपाध्याय, विनोद कुमार, संदीप चौधरी, रमेश यादव, मृत्युंजय कुमार और कांस्टेबल विकास यादव, रूद्र सिंह, सुरेंद्र रावत की टीम ने दिन-रात मेहनत कर इस मामले को सुलझाया। पुलिस अधीक्षक उत्तरी और गीडा क्षेत्राधिकारी के मार्गदर्शन में यह ऑपरेशन कामयाब रहा।क्षेत्र में दहशत, जनता में भरोसा इस त्वरित कार्रवाई से अपराधियों में खौफ का माहौल है, वहीं आम जनता में पुलिस के प्रति विश्वास बढ़ा है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गौरव ग्रोवर ने टीम की तारीफ करते हुए भविष्य में भी ऐसी ही तेजी से कार्रवाई के निर्देश दिए हैं।

जर्जर भवन होने से कभी भी हो सकती है दुर्घटना

खाद बीज के रख रखाव एवं वितरण करने में हो रही है परेशानी सुशील कुमार सिंह सचिव

- खजनीगोरखपुर खजनी तहसील अन्तर्गत नगर पंचायत उनवल मे स्थित
- बहुउद्देशीय प्राथमिक ग्रामीण सहकारी समिति लिमिटेड कस्बा संग्रामपुर उर्फ उनवल विभागीय उपेक्षा का शिकार
- भवन जर्जर होने के कारण कभी भी हो सकती है अप्रिय घटना
- उन्नीस दिसम्बर उन्नीस सौ पैंसठ में निर्मित किया गया था
- स्व मुख्यमंत्री चंद्रभान गुप्ता के मंत्रीमंडल में सहकारिता मंत्री रहे बनारसी दास ने निर्मित भवन का किया था उद्घाटन

स्वतंत्र प्रभात

खजनी- गोरखपुर के सबसे बड़ी आबादी का क़स्बा संग्रामपुर उर्फ उनवल क्षेत्र के किसानों को खाद, उन्नतशील बीज, आदि वितरण के लिए उनवल निवासी तथा बांसगांव विधान सभा के प्रथम विधायक स्व गणेश दत्त पांडेय के प्रयास से सहकारिता विभाग के तत्कालीन मंत्री बनारसी दास ने बहुउद्देशीय प्राथमिक ग्रामीण सहकारी समिति लिमिटेड कस्बा संग्रामपुर का निर्माण कराया गया था तथा किसानों की समिति बनाकर उन्हें सस्ते दर पर कर्ज देकर खाद, उन्नतशील बीज, कीटनाशक दवाएं वितरण करने के उद्देश्य से जनपद का पहला सहकारिता विभाग ने भवन का निर्माण साठ वर्ष पूर्व कराया था जिसका छत ईंट से लगा था पूरा छत फट गया है छड़ दिखाई दे रहा है भवन में खाद,बीज रखने की बात तो बहुत दूर है आवश्यक पत्रावलियां भी रखने एवं कुर्सी,मेज रखकर बैठना खतरे से खाली नहीं है सचिव पत्रावलियां मजबूरन अपने घर रखते हैं वर्षात के दिनों में पूरे भवन से पानी टपकता नहीं है बल्कि तेज पारी गिरता है ।

सहकारिता विभाग की घोर लापरवाही तथा जन प्रतिनिधियों की उदासीनता के कारण साठ साल पुराने भवन का निर्माण तो दूर की बात है मरम्मत भी नहीं हो सकी जिसके कारण सहकारिता भवन खंडहर में तब्दील हो गया है खाद,बीज रखने के लाले पड़े हुए हैं खाद ,बीज आने पर बाहर से ही वितरण करना सचिव की मजबूरी बन गई है जर्जर भवन आगामी वर्षात में कभी भी जमींदोज हो सकता है तथा कोई अप्रिय घटना को भी नकारा नहीं जा सकता है। बहुउद्देशीय प्राथमिक ग्रामीण सहकारी समिति लिमिटेड कस्बा संग्रामपुर उर्फ उनवल के सचिव सुशील कुमार सिंह व अध्यक्ष सतीश कुमार सिंह का कहना है कि विगत तीन वर्षों से सहकारिता विभाग को लिखित जानकारी दिया गया तथा विभाग के जे ई द्वारा स्टीमेट बनाकर विभाग को दिया गया और विभाग ने भवन निर्माण हेतु धन के लिए उत्तर प्रदेश शासन को लिखा लेकिन आज तक भवन निर्माण हेतु धन की स्वीकृति नहीं हुई है भवन अंतिम स्थिति में है बाहर बैठ कर किसी तरह किसानों को खाद का वितरण किया जाता है। सहकारिता विभाग के आर ओ तथा ए आर ओ ने बताया की स्टीमेट बनाकर शासन को धन स्वीकृति हेतु लिखा गया है अभी तक धन की स्वीकृति नहीं हुई जिसके कारण जर्जर भवन का निर्माण अधर में लटका हुआ है।

गोरखपुर- लावारिस बच्चे को मिला नया आसरा, पुलिस का बाल सुरक्षा अभियान बना मिसाल

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- गोरखपुर में बच्चों के अधिकारों और उनकी सुरक्षा के लिए चलाया गया बाल सुरक्षा अभियान एक मर्मस्पर्शी कहानी बनकर सामने आया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ गौरव ग्रोवर के निर्देश पर और पुलिस अधीक्षक अपराध के मार्गदर्शन में थाना एएचटी की टीम ने बाल श्रम, भिक्षावृत्ति, बाल विवाह, बंधुआ मजदूरी और नशे के खिलाफ एक विशेष जागरूकता और चेकिंग अभियान चलाया। यह अभियान कैण्ट, रामगढ़ताल और राजघाट क्षेत्रों में सक्रियता से संचालित हुआ, जहां दुकानों, वर्कशॉपों और बस स्टैंड जैसे संवेदनशील स्थानों की गहन जांच की गई।इसी अभियान के दौरान पुलिस की सजग नजरों ने एक लावारिस बच्चे की जिंदगी को नई उम्मीद दी। सड़क पर अकेले भटक रहे इस मासूम को पुलिस ने तुरंत रेस्क्यू किया और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सिटी चाइल्ड हेल्पलाइन गोरखपुर को सौंप दिया। अब यह बच्चा सुरक्षित हाथों में है, जहां उसकी देखभाल और भविष्य को संवारने की हर संभव कोशिश की जाएगी। यह घटना न केवल गोरखपुर पुलिस की संवेदनशीलता और कर्तव्यनिष्ठा को दर्शाती है, बल्कि समाज को भी एक संदेश देती है कि हर बच्चा अनमोल है और उसकी सुरक्षा हम सबकी जिम्मेदारी है। यह अभियान उन तमाम बच्चों के लिए एक नई रोशनी है, जो अंधेरे में अपने अधिकारों से वंचित हैं। गोरखपुर पुलिस का यह प्रयास निश्चित रूप से एक प्रेरणा है, जो हमें बताता है कि मानवता और कर्तव्य के रास्ते पर चलकर हम एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकते हैं।

मानव शिक्षा सेवा संस्थान ने विकलांगों को दिया रोजगार, खुशी से खिले चेहरे

- असहायों के लिए बरदान हैं संस्थान- आलोक गुप्ता

स्वतंत्र प्रभात

गोलाबाज़ार /गोरखपुर। गोला तहसील क्षेत्र के ब्लॉक बड़हलगंज स्थित खड़ेसरी साई मंदिर स्थित संचालित मानव शिक्षा सेवा संस्थान ने बेरोजगार विकलांग विद्यार्थियों को रोजगार प्रदान कर एक और समाजसेवा की नई पहचान स्थापित किया है। प्राप्त बिबरण के अनुसार रविवार को मानव शिक्षा सेवा संस्थान ने संस्था मे बड़हलगंज के अभयनाथ पासवान, रामदरस पाल व अन्य को कंप्यूटर ऑपरेटर के पद पर चयन कर रोजगार प्रदान किया ।. शिक्षित बिकलांग बेरोजगार विद्यार्थियों को रोजगार मिलने पर चेहरे खुशी से खिले उठे. । संस्था के प्रवंधक आलोक गुप्ता ने बताया की यह संस्था असहायों के लिए बरदान साबित हो रही है. अब तक सैकड़ो को रोजगार प्रदान मिला है. अब बिकलांगो के जीवन में भी खुशी भर रहे.संस्थान ने हजारों की जिंदगी से बैसाखी छीन कर अपने सहारे कदमों पर चलाने का काम कर रहे हैं। जरूरतमंदों के लिए अभावों में गुजर-बसर कर रहे लोगों का मददगार भी बना है। उद्देश्य सिर्फ डिग्री से नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को रोजगार योग्य बनाकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। शिक्षा के साथ रोजगार जरुरी है. आज के बदलते युग में अवधारणाओं से निकलने की जरूरत है। प्रतिस्पर्धा के दौर में जॉब की कोई कमी नहीं है, लेकिन जॉब के लिए स्वयं को सिद्ध करने की आवश्यकता है। वही रोजगार मिलने पर विकलांगो ने संस्थान का आभार व्यक्त कर कहा, बढ़ते महगाई के दौर मे आर्थिक परेशानियो का सामना करना पड़ रहा था, संस्थान के पहल से हम सभी को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए.इस मौके पर संस्था के सभी कर्मचारी गण मौजूद रहे।

खजनी- सेमरडाड़ी में मां भगवती भूवनेश्वरी देवी धाम में वार्षिकोत्सव समारोह की भव्य तैयारी, भंडारे व रामचरितमानस पाठ का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

खजनी- सेमरडाड़ी ग्राम सेमरडाड़ी स्थित मां भगवती भूवनेश्वरी देवी धाम में आगामी 30 अप्रैल 2025, दिन बुधवार को वार्षिकोत्सव समारोह धूमधाम से मनाया जाएगा। इस शुभ अवसर को भव्य एवं सफल बनाने हेतु ग्राम के वयोवृद्ध एवं नवयुवक वर्ग द्वारा एक संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता मंदिर कमेटी के अध्यक्ष श्री केशव प्रसाद मिश्र ने की। उन्होंने जानकारी दी कि समारोह के दिन संगीत मय रामचरितमानस पाठ का आयोजन किया जाएगा, जिसमें क्षेत्र के सुप्रसिद्ध दिग्गज कलाकारों को आमंत्रित किया गया है। श्री मिश्र ने बताया कि आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर प्रस्तुति देने वाले ख्यातिप्राप्त कलाकार ने भी कार्यक्रम में आने की सहमति दी है, जिससे आयोजन की गरिमा और बढ़ेगी।

तैयारी के संबंध में कोषाध्यक्ष श्री गिरिजेश मिश्र ने बताया कि ग्राम के नवयुवक मंडल के सभी पदाधिकारियों के साथ मिलकर कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जा रही है। उन्होंने बताया कि वार्षिकोत्सव के दिन विशाल भंडारे का आयोजन भी किया जाएगा, जिसमें क्षेत्र के सभी श्रद्धालु प्रसाद ग्रहण कर सकेंगे। समिति ने सभी ग्रामवासियों से अनुरोध किया है कि इस पुण्य अवसर को सफल बनाने के लिए तन, मन और धन से सहयोग करें। श्री मिश्र ने यह भी संकेत दिया कि मां भगवती की कृपा से निकट भविष्य में भगवान भोलेनाथ के मंदिर का शिलान्यास भी किया जाएगा। समस्त ग्रामवासियों एवं भक्तों से अपील की गई है कि वे इस धार्मिक महोत्सव में बढ़-चढ़कर भाग लें और मां भगवती का आशीर्वाद प्राप्त करें।

संक्षिप्त खबरें

वांछित 02 अभियुक्तों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

शाहजहांपुर। पुलिस अधीक्षक शाहजहाँपुर के निर्देशानुसार, पुलिस अधीक्षक ग्रामीण के निर्देशन में एवं क्षेत्राधिकारी जलालाबाद के निर्देशन में जनपद में अपराध की रोकथाम व चिन्हित किये गये अपराधियों, वाछित एंव वारंटी, अभियुक्तगणों की गिरफ्तारी एव अपराध की रोकथाम के परिपेक्ष्य में प्रचलित अभियान के क्रम में प्रभारी निरीक्षक थाना कलान के कुशल नेतृत्व में थाना कलान पुलिस टीम को बडी सफलता प्राप्त हुई।थाना कलान पुलिस द्वारा मु0अ0सं0 121/2025 धारा 80 (2)/85 बीएनएस व 3/4 डीपी एक्ट थाना कलान जनपद शाहजहाँपुर में वांछित चल रहे अभियुक्तगण अशोक कुमार पुत्र रमेश , रमेश पुत्र मेवाराम निवासीगण ग्राम रोहन नगला थाना कलान जिला शाहजहांपुर को अभियुक्तगण उपरोक्त को मुखबिर की सूचना पर उनके घर से गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तगण के विरूद्ध विधिक कार्यवाही करते हुए माननीय न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

जलालाबाद के गंगा एक्सप्रेसवे की नवनिर्मित हवाई पट्टी पर आगामी दो व तीन मई को सेना के लड़ाकू विमान उतरकर करेंगे अभ्यास। तैयारियां जोरों पर

शाहजहांपुर-जलालाबाद क्षेत्र के गांव अतिबरा के पास गंगा एक्सप्रेसवे पर बने हवाई पट्टी पर सेना के लड़ाकू विमान उतारकर अभ्यास किया जाएगा। इसके लिए सेना एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने हलचल तेज कर दी है। 2 दिन पहले एक्सप्रेसवे का बरेली से आए वायु सेना के अधिकारियों ने निरीक्षण किया था। उन्होंने जो दिशा-निर्देश दिए थे, उसके अनुरूप निर्माण कंपनी के अधिकारी हवाई पट्टी के पांच किलोमीटर के दायरे में जरूरी व्यवस्थाएं कराने में जुट गए हैं। चमरपुर कलां से खंडहर गांव के बीच पांच किमी लंबी हवाई पट्टी का निर्माण किया गया है। वायुसेना के अधिकारियों ने हवाई पट्टी का बारीकी से किया था। उन्होंने सामरिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वहां लड़ाकू विमानों को उतारने का अभ्यास कराने के लिए कई व्यवस्थाएं कराने के निर्देश दिए थे। इनमें हवाई पट्टी के आसपास के गांवों में किसी संदिग्ध व्यक्ति के आकर रुकने का अभियान चलाकर जांच कराने, छुट्टा पशुओं की घुसपैठ रोकने के लिए तारों की बाड़ लगाने, विमान उतारने के अभ्यास के दौरान पूरे क्षेत्र में कई स्तर की सुरक्षा व्यवस्था कराने आदि निर्देश शामिल हैं।

युवती ने पुल से लगाई छलांग

निघासन खीरी शारदा नदी पर बने घाघी नाले के पुल से युवती ने छलांग लगा दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय गोताखोरों की मदद से तलाश अभियान शुरू कराया है। निघासन थाना क्षेत्र के एक गांव में युवती ने शारदा नदी पर बने घाघी नाले के पुल से लगा दी। युवती का दुपट्टा पुल की रेछिलांग बंधा मिला, तब घटना की जानकारी हुई। परिजनों को शक हुआ तो उन्होंने युवती की तलाश शुरू कर दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने स्थानीय गोताखोरों की मदद से तलाश अभियान शुरू कराया है। जानकारी के अनुसार, झौउवापुरवा निवासी कामता प्रसाद की बेटी मैना की शादी आने वाली 30 अप्रैल को होनी थी। परिजनों का कहना है कि वह रविवार की सुबह से ही घर से लापता थी। काफी तलाश के बाद जब रेलिंग से बंधा मिला दुपट्टा ; तलाशी अभियान शुरू उसका कोई सुराग नहीं लगा तो पुल पर जाकर देखा गया। पुल पर रेलिंग में बंधा उसका दुपट्टा देख परिजनों के होश उड़ गए। सूचना मिलने पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने स्थानीय गोताखोरों की मदद से युवती की तलाश शुरू कर दी है। फिलहाल, गोताखोर नदी में सर्च ऑपरेशन चला रहे हैं।

साले ने बहनोई से नौकरी दिलवाने के नाम पर ठगे रुपए, बापस मांगने पर हुई मारपीट

शाहजहांपुर। जनपद थाना जलालाबाद में ग्राम हैबतपुर निवासी सौरभ ने बजे प्रार्थना पत्र देकर बताया ग्राम तिकोला निवासी उनके साले देवेंद्र ने उनको नौकरी दिलाने के नाम पर ?10000 दिए थे और कहा था कि 2 महीने में नौकरी नहीं मिली तो रुपए वापस कर देंगे 2 महीने तक जब उसे नौकरी नहीं मिली तो उसने रुपए वापस मांगे सभी गांव टिकोला निवासी देवेंद्र ने उसके साथ मारपीट व गाली गलौज किया और जान से मारने की धमकी दी पीड़ित ने थाने में प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की।

स्वतंत्र प्रभात में छपी खबर का हुआ बहुत बड़ा असर बस्तीपुरवा से बरोठा सम्पर्क मार्ग पर कार्य हुआ शुरू

स्वतंत्र प्रभात

निघासन खीरीआपको बताते चले अपनी जर्जर अवस्था पर आंसू बहा रही बरोठा से बस्तीपुरवा मार्ग पर आज से कार्य शुरू हो गया हे स्वतंत्र प्रभात ने इस सड़क के बारे में प्रमुखता से खबर चलाई थीं जिसका सज्ञान लेते हुए श्च2स्र के अधिकारियों ने स्वतंत्र प्रभात की टीम से बात कर आश्वासन दिया था कि 20 तारीख तक हर हाल में कार्य शुरू हो जाएगा यह जानकारी जेई अरविन्द यादव व शारदा कंस्ट्रक्शन फॉर्म के ठेकेदार ने दी थी जिसको ठीक दिए हुए समय पर कार्य शुरू कराया गया हे ग्रामीणों ने स्वतंत्र प्रभात को धन्यवाद दिया और जब उनसे वार्ता की गई तो बताया पत्रकारिता समाज का चौथा स्तंभ हे अगर ईमानदारी ओर लग्न से किसी कार्य को प्रकाशित किया जाए तो वह हर कार्य सम्भव हे जो आज हम सब ने देखा हे जब से स्वतंत्र प्रभात ने इस मुद्दे को उठाया हे तब से बराबर रोड को लेकर तेज हलचल देखने को मिली हे ओर हम सब ग्रामीणों को इसकी सफलता भी देखने को मिली

क्या कहते हे लोग

राजकिशोर नेता का कहना हे हम सब को समाज के चौथे स्तम्भ पर बहुत भरोसा हे इस आइने पर हम सब को बहुत गर्व हे ओर हम स्वतंत्र प्रभात अखबार को बहुत बहुत धन्यवाद देते है।

अमर प्रकाश शुक्ला ने भी स्वतंत्र प्रभात को धन्यवाद देते हुआ कहा

यह रोड हमारे पिता स्वर्गीय शत्रोहन लाल शुक्ला जी के संघर्ष व अथक प्रयास पूर्व विधायक स्वर्गीय राम कुमार वर्मा द्वारा स्वीकृत कराई गई थी रोड निमार्ण के बाद 6 वर्ष बाद फिर से गड्ढों में तब्दील हो गई धीरे धीरे यह फिर से उसी समस्या में तब्दील हो गई थी जिसे फिर से हमने कई बार विभाग के अधिकारियों के पास रखा तथा हमने यह विषय केंद्रीय गृह राज मंत्री अजय मिश्रा जी के समक्ष रखा मंत्री जी ने श्च2स्र को लेटर लिखा और जल्द ही सड़क निमार्ण के लिए कहा ओर उक्त विषय को हमने विधायक शशांक वर्मा जी के सामने रखा और पूर्व में सड़क के निर्माण में विधायक जी के पिता जी के योगदान के बारे में अवगत कराया विधायक जी ने भी अधिकारियों से जल्द निर्माण कार्य कराने को कहा व रोड को फिर से स्वीकृत कराई परन्तु रोड को काफी समय हो गया था स्वीकृति मिले परन्तु कार्य में विलम्ब होता जा रहा जब से यह विषय मीडिया के समक्ष आया हे तब से हलचल तेज हुई है।

आज से निमार्ण कार्य शुरू हो रहा हे हम माननीय पूर्व केंद्रीय गृह राज्यमंत्री व माननीय विधायक जी व सभी पत्रकार भाइयों को धन्यवाद देते प्रधान प्रतिनिधि चंद्रहास उर्फ पिंटू ने मीडिया और मंत्री जी व विद्यायक जी को धन्यवाद् दिया और बताया यह सभी ग्रामवासियों के लिए यह बहुत ही गंभीर समस्या थी जिसके लिऐ मेने तत्कालीन गृह राज्य मंत्री भारत सरकार श्री अजय मिश्र टेनी जी से उनके कार्यालय पे काफ़ी बार मुलाक़ात की मंत्री जी ने गंभीरता से लेते हुए लोक निर्माण विभाग को प्राथमिकता से कार्य करने के लिए लेटर लिखा और मेने विद्यायक शशांक वर्मा जी से कई बार मुलाक़ात किया, कैबिनेट मंत्री जितिन प्रसाद जी और जिलाअधिकारी को भी कई बार पत्र लिखा जिसका आज निस्तारण हो गया इस रोड को लेकर अथक प्रयास किए गए विभाग के अधिकारियों से लेकर मंत्री जी व विधायक जी को हमने लेटर लिखा और मिलकर अनुरोध किया हम सभी लोगो की मेहनत रंग लाई जो आज फिर रोड का पुनर्निर्माण कार्य प्रारंभ हो रहा हम सभी पत्रकार भाइयों को धन्यवाद देते है।

राजेश कुमार पूर्व प्रधानपति का कहना हे यह बहुत बड़ी हम सब के लिए समस्या थी आए दिन इस रोड पर एक्सिडेंट होते रहते ओर बच्चों को स्कूल जाने के लिए बहुत समस्या होती रोड खराब होने के कारण जल्दी स्कूल नहीं पहुंच पाते थे और बीमार व्यक्ति को अस्पताल ले जाना बहुत मुश्किल कार्य था रोड के लिए हमने विभाग के अधिकारियों को बार बार अवगत कराया व संबंधित अधिकारी को भी मिले जब से यह विषय स्वतंत्र प्रभात अखबार व मीडिया के समक्ष आया हे तब हलचल तेज देखने को मिली हे में सभी पत्रकार भाइयों को धन्यवाद देता हु व स्वतंत्र प्रभात टीम का आभार व्यक्त करता हूँ।

मां ने ग्राम प्रधान वन बेटे ने कोटेदार बनकर किया खेल बेच दिया गरीबों और बच्चों का आहार रिपोर्ट दर्ज

● मां पर नवाबगंज थाने में बेटे पर क्यों लड़िया थाने में दर्ज हुए मुकदमे

स्वतंत्र प्रभात

बरेली/विकास खंड भदपुरा की चर्चित ग्राम पंचायत करुआ साहिबगंज है यहां पर वर्ष 2005 में हुए पंचायत चुनाव में सहाना बेगम पत्नी मोहम्मद इसरार अहमद ग्राम प्रधान चुनी गई जिन्होंने अपने कार्यकाल में स्कूल के बच्चों को मध्यान भोजन देने के लिए आए चावल को धोक के भाव बेच दिया जिसकी भनक लगने पर प्रशासन ने छापामारी करके तत्कालीन नायक तहसीलदार राजेश कुमार मिश्रा उप निरीक्षक विपिन कुमार त्यागी ने बचा हुआ माल बरामद कर लिया था। क्षेत्रीय खाद्य पूर्ति निरीक्षक एस पी शाक्य की तहरीर पर नवाबगंज में रिपोर्ट दर्ज कर जेल भेजा गया था इन्हीं के बेटे अखलाक अहमद ने भी वर्ष 24 में फर्जी शपथ पत्र देकर कोटे की दुकान अपने नाम प्रस्तावित करवा ली यहां पर भी हुए घोटाले के बाद नवाबगंज के पूर्ति निरीक्षक सुनील कुमार भटनागर ने कोटेदार के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर दी है परंतु सबसे बड़ा खेल तो यह हुआ जिसके विरुद्ध धारा 3/7 मैं अभियोग पंजीकृत होता है उसके परिवार को सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान आवंटित नहीं की जाती है इतना ही नहीं अखलाक अहमद की मां तत्कालीन ग्राम प्रधान सहाना बेगम के विरुद्ध क्यों लड़िया थाने पर भी धारा 406 420 में अभियोग पंजीकृत किया गया था।

यह दोनों मुकदमे आज भी न्यायालय में विचाराधीन है फिर भी पूर्ति विभाग ने सहाना बेगम के बेटे अखलाक अहमद के नाम कोटे की दुकान कर दी गई इतना ही नहीं ग्रामीणों के आरोप के बाद अखलाक अहमद का विकलांग सर्टिफिकेट फर्जी होने का दावा किया गया परंतु आज तक उसका पुनः मेडिकल परीक्षण नहीं किया गया है सूत्रों की मां ने को बताया कोटे की दुकान लेने के लिए अखलाक अहमद ने पूर्ति विभाग को एक शपथ पत्र दिया गया जिसमें अपने अपने परिवार के विरुद्ध कोई भी आप पंजीकृत ना होने का उल्लेख दर्शाया गया है। इस तरह चल रही अंधेर नगरी चौपट राज की कहावत को सिद्ध करता है करुआ साहिबगंज में हो रहे सरकारी माल के गबन का मामला।

भाजपा जिला अध्यक्ष का महाराणा प्रताप चौक पर कार्यकर्ताओं ने फूल माला पहनकर किया भव्य स्वागत

स्वतंत्र प्रभात

जलालाबाद शाहजहांपुर/जलालाबाद के महाराणा प्रताप चौक पर शाहजहांपुर जनपद के भाजपा के जिला अध्यक्ष कृष्ण चंद्र मिश्रा को आज कलान जाना था, भाजपा जिला अध्यक्ष के आने की खबर उनके कार्यकर्ताओं को लगी तभी कार्यकर्ता एकत्र होकर महाराणा प्रताप चौक पर पहुंचे जहां उन्होंने जिला अध्यक्ष को फूल माला पहनकर स्वागत किया, कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए स्वागत से जिला अध्यक्ष अति प्रसन्न हुए और उन्होंने उनके हाल-चाल पूछे और बस्ती संपर्क अभियान के बारे में जानकारी ली, और कहां यह अभियान लगातार जारी रहेगा,तभी कार्यकर्ता भी उनके साथ कलान के लिए रवाना हो गए, और जिला अध्यक्ष कलान क्षेत्र में पहुंचे तो उन्होंने क्षेत्र के भाजपा कार्यकर्ताओं से मुलाकात की और उसके बाद प्राचीन शुक्राचार्य की तपोभूमि पटना देवकली मंदिर पर भोलेनाथ के दर्शन किए, और वहां की साफ सफाई व्यवस्था को दिखा वहीं पर किसी ने उनसे कहा कि यहां पर कुछ अवस्थाएं हैं उनको भी सही कराया जाए वहीं जिला अध्यक्ष ने मंदिर के महंत पुजारी से कहा कि गर्मियों का दौर चल रहा है जो खराब पड़े हुए नल है उनको सही कराया जाए कोई दिक्कत अगर आए तो हमें बताएं हर तरीके से सहयोग करेंगे। जिला अध्यक्ष के दौरे के दौरान उनके साथ में जिला प्रतिनिधि जितेंद्र प्रताप सिंह, और भाजपा ग्रामीण मंडल अध्यक्ष विनोद कुमार अभिनेत्री प्रधान याकूबपुर राजीव शर्मा, भाजपा युवा नेता अजय सिंह चंदेल, अखिलेश वर्मा युवा मोर्चा संयोजक, दिनेश सिंह राठौर, सहित आज तमाम लोग उनके साथ में मौजूदरहे।

दबंगों का हमला, मां-बेटे को डंडों से पीटा, रिपोर्ट दर्ज

शाहजहांपुर। जलालाबाद क्षेत्र में एक मामूली विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। गांव कोला में दो दबंगों ने 50 रुपए उधार न देने पर मां-बेटे को बुरी तरह पीट दिया। घटना सोमवार दोपहर की है। पप्पू पुत्र नवाब अली के घर हरी बाबू भिन्ना और लाला नाम के व्यक्ति 50 रुपए मांगने आया तभी वह गाली-गलौज किया और पप्पू ने बताया कि उस समय उनके पास पैसे नहीं थे और उन्होंने अगले दिन देने की बात कही। इस बात से नाराज होकर दोनों आरोपियों ने पहले गाली-गलौज की। जब पप्पू ने इसका विरोध किया, तो उन्होंने डंडों से हमला कर दिया। हमले में पप्पू का सिर फट गया। तभी पीड़ित ने थाने में शिकायत दर्ज कराई और उसने बताया की मारपीट से बेटे की चीख-पुकार सुनकर बचाने आई मां मकसूदन पर भी हमलावरों ने डंडे बरसाए, जिससे उनका भी सिर फट गया। पीड़ित पप्पू ने थाने में शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए दोनों पीड़ितों का मेडिकल परीक्षण करवाया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करने की कार्रवाई में जुटी है।

आईएमए प्रदेश अध्यक्ष के अस्पताल में शिक्षिका की प्रसव के बाद मौत, डॉ दीपा सक्सेना पर लापरवाही का आरोप

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहाँपुर। आईएम प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर पीके अग्रवाल के अस्पताल में शिक्षिका चारु चड्ढा की प्रसव के बाद मौत हो गई। स्वजन ने चिकित्सक डॉक्टर दीपा सक्सेना पर लापरवाही का आरोप लगाया है। इस दौरान परिजनों ने अस्पताल में हंगामा भी किया, चिकित्सक के खिलाफ एफआइआर के लिए तहरीर दी। आईएमए प्रदेश अध्यक्ष के अस्पताल में प्रसव के बाद शिक्षिका की मौत हो गई। नाराज स्वजन ने बृजदीप नर्सिंग होम की चिकित्सक डॉक्टर दीपा सक्सेना पर लापरवाही का आरोप लगाया। इस दौरान विरोध स्वरूप हंगामा भी किया। घटना से बाद अस्पताल परिसर से लेकर बाहर और सडक पर अफरातफरी मच गई। सूचना मिलने पर कोतवाली और थाना सदर बाजार पुलिस मौके पर पहुंची और स्थिति को नियंत्रित करने का प्रयास किया। रात 12 बजे पुलिस को घटना संबंधित तहरीर दी गई। गोला निवासी मयंक चड्ढा से हुई थी शादी, सुरक्षित प्रसव के लिए रह रही थी माँ बाप के साथ मोहनगंज निवासी मुकेश आहूजा की बेटी चारू आहूजा की शादी लखीमपुर खीरी के गोला क्षेत्र निवासी मयंक चड्ढा से हुई थी। चारु बंडा क्षेत्र में एक विद्यालय में शिक्षिका थीं। शनिवार रात प्रसव पीडा होने पर स्वजन ने उन्हें बृजदीप नर्सिंग होम (कोतवाली थाना क्षेत्र) ले गए। रात करीब ढाई बजे चारु ने स्वस्थ बच्ची को जन्म दिया। स्वजन के अनुसार डिलीवरी के बाद चारु की कुछ समय तक ठीक ठीक रही। रविवार सुबह तबीयत बिगड़ने लगी। स्वजन का आरोप है चिकित्सक को तबीयत बिगडने की सूचना दी, लेकिन वह नहीं आई। दोपहर बाद हालत बिगडने पर डॉक्टर दीपा सक्सेना ने डॉक्टर विजय पाठक समेत चिकित्सक बुला लिए। इसके बाद चारू को कमला हॉस्पिटल

रेफर कर दिया गया। कमला हॉस्पिटल के चिकित्सक पहुंचने के बाद भी समय रहते उचित इलाज न मिलने से चारु की मौत हो गई। हालांकि नवजात बच्ची स्वस्थ है। स्वजन का कहना है की यदि यदि समय रहते सही इलाज मिलता तो चारु औकी जान बचाई जा सकती थी। परिजनों ने शव का पोस्टमार्टम कराने से इनकार कर दिया और मौके पर कार्रवाई की मांग को लेकर देर रात तक शव के पास बैठे रहे। सडक पर जाम के चलते यातायात भी बाधित रहा। पुलिस ने तहरीर लेकर मामले में तीन नामजद सहित एक अन्य पर एफआईआर दर्ज कर ली है।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में शीतल पानी व्यवस्था बाधित होने से पानी पीने हेतु इधर-उधर भटकते लोग

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लगाया गया इंडिया मार्का हैंडपंप काफी दिनों से खराब पड़ा है दूसरी तरफ अग्रवाल सभा गोला द्वारा लगाया गया वाटर कूलर मे पानी न होने के कारण गर्मी के चलते पीने वाले पानी कोई अन्य व्यवस्था न होने से प्रतिदिन दवा लेने हेतु आने जाने वाले सैकड़ो मरीज व तामीरदार प्यास रहने के लिए मजबूर है। मालूम हो कि मरीज के पीने हेतु कुछ वर्ष पूर्व पूर्व इंडियामार्का हैंडपं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में लगाया गया था जो की अधिकारियों की लापरवाही के चलते महीनो से खराब पड़ा है जिसे बनवाने की जरूरत नहीं समझी गई। इसी कै साथ स्थानीय समाज सेवी संस्था अग्रवाल सभा द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र परिसर में जनता की सेवा हेतु कुछ दिन

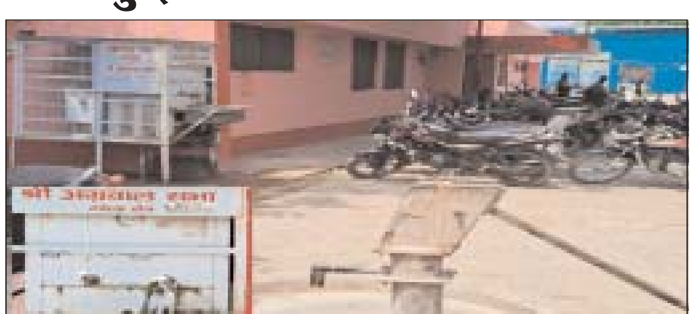

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में खराब पड़ा है इंडियामार्का हैंडपंप और पास में ही लगा वाटर कूलर

पूर्व वाटर कूलर लगाकर चिकित्सालय के अधिकारियों को सौंप दिया गया था जो कि कुछ दिन चला रहा अब उसने अपनी देना बंद कर दिया है। भीषण गर्मी शुरू होते ही और तामीरदार शीतल पानी पीने हेतु तरसने लगे और अपनी प्यास बुझाने इधर-उधर भाग दौड़ करते देखे गए। चिकित्सा अधिकारियों की घोर लापरवाही के चलते चिकित्सालय की पेयजल व्यवस्था बाधित है। स्वास्थ्य केंद्र की जल व्यवस्था सुधारे जाने हेतु यूपी जिला अधिकारी विनोद कुमार गुप्ता से आने जाने वाले मरीज ने गुहार लगाइ है।

वार्ड 17 में मानक विहीन नाली निर्माण पर हंगामा, घटिया सामग्री के उपयोग से नागरिकों में रोष

जौनपुर। नगर क्षेत्र के वार्ड नंबर 17 रौज़ा अर्जन अंतर्गत मोहल्ला अर्जन बड़ी मस्जिद में इन दिनों नाली निर्माण कार्य को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि नाली निर्माण में निम्न गुणवत्ता की ईंटों और सामग्री का इस्तेमाल किया जा रहा है, जिससे निर्माण की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल उठने लगे हैं। ज्ञात हो कि इस क्षेत्र में तकरीबन एक दशक बाद सड़क निर्माण का कार्य शुरू होने जा रहा है, लेकिन साथ ही नाली जैसे अहम ढांचे में लापरवाही बरतना स्थानीय लोगों की चिंता का कारण बन गया है। लोगों का कहना है कि यदि अभी निर्माण में गुणवत्ता नहीं सुनिश्चित की गई तो आने वाले वर्षों में यह नाली क्षतिग्रस्त हो जाएगी और नागरिकों को जलनिकासी की समस्या का सामना करना पड़ेगा। स्थानीय नागरिकों ने नगर प्रशासन से अपील की है कि निर्माण कार्य की जांच कराते हुए दोषी ठेकेदारों पर कार्रवाई की जाए और निर्माण में मानक सामग्री का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

सड़क हादसे मे गई दो की जान दो बाइक आमने-सामने भिंडी

स्वतंत्र प्रभात

बरेली/ थाना क्योलड़िया क्षेत्र के करूआ साहबगंज मोड़ पर सोमवार दोपहर को एक भीषण सड़क हादसा हो गया। जिसमें दो लोगों की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। हादसे में मृतकों की पहचान डॉक्टर पूरनलाल पुत्र बिहारीलाल, निवासी ग्राम दौलत पट्टी, थाना बरखेड़ा जनपद पीलीभीत तथा शिवेंद्र पुत्र कालीचरण निवासी ग्राम मुड़िया ज्योति थाना भुता के रूप में हुई है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार दोनों किसी निजी कार्य से जा रहे थे। तभी तेज रफ्तार वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों युवक दूर जाकर गिरे और गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी और दोनों घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई।

पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। और शवों को कब्जे में लेकर

पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। हादसे की जानकारी मिलते ही मृतकों के परिजनों में कोहराम मच गया है। पुलिस का कहना है कि हादसे के कारणों की जांच की जा रही है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार। वाहन की तेज रफ्तार और लापरवाही से चलाना दुर्घटना का मुख्य कारण माना जा रहा है। थाना प्रभारी जितेंद्र सिंह ने बताया कि आज करूआ साहिबगंज मोड थाना क्योलड़िया में हुए एक्सीडेंट में घायल डॉक्टर पूरनलाल पुत्र बिहारी लाल निवासी ग्राम दौलत पट्टी थाना बरखेड़ा जनपद पीलीभीत एवं शिवेंद्र पुत्र कालीचरण निवासी ग्राम मुड़िया ज्योति थाना भुता जनपद बरेली की जिला चिकित्सालय बरेली में उपचार के दौरान मृत्यु हो गई। है। पंचायत नामा की कार्रवाई कर दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

भवन कक्ष का विधायक ने किया लोकार्पण

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ क्षेत्र के अन्तर्गत ग्राम पंचायत महथा बाजार में स्थित सेठ राम आसरे जायसवाल सरस्वती शिशु मंदिर महथा बाजार के विद्यालय में शोहरतगढ़ विधायक विनय वर्मा ने विधायक निधि से योजनांतर्गत वर्ष 2022-23 में निर्मित नव-निर्मित कक्ष का लोकार्पण किया।भवन का शिलान्यास 27 मई 2023 को किया गया था जिसकी कुल स्वीकृत लागत ?5.93 लाख है।यह लोकार्पण महथा बाजार क्षेत्र के लोगों एवं विद्यालय परिवार की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। शोहरतगढ़ विधायक विनय वर्मा ने कहा कि यह सेठ राम आसरे जायसवाल सरस्वती शिशु विद्या मंदिर महथा बाजार भवन विद्यालय के छात्र-छात्राओं को समर्पित है।जो आने वाले समय में देश के निर्माणकर्ता बनेंगे। उनके लिए एक सुरक्षित,सुव्यवस्थित और प्रेरणादायक शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराना हमारी प्राथमिकता है। और मेरे विधायक निधि का हर अंश समाज, छात्रहित और क्षेत्रहित में उपयोग है यही मेरा संकल्प हैऔर यही मेरा सोच है। जब निवेश किताबों, कलमों और क्लासरूम पर होता है,तब भविष्य अपने आप मजबूत बनता है। योगी मोदी की डबल इंजन की सरकार शिक्षा के क्षेत्र में ठोस

कार्य कर रही है और यह उसी की एक कड़ी है। इस दौरान रामदास पाण्डेय, इष्टदेव, प्रधानाचार्य वाचस्पति शुक्ला, अजय श्रीवास्तव, गंगाराम, गुड्डू,रामू, रामसूरत, संजय कसौधन, शशि सिंह, पूनम, गुड़िया मिश्रा, अमन गिरि, कृष्णा गुप्ता, अमन चौरसिया आदि लोग मौजूद रहे।

चोरों में पुलिस का नहीं रहा ख़ौफ़ जेवर व नगदी लेकर चोर हुआ फरार

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। तहसील गोला केअंतर्गत थाना मैलानी क्षेत्र में एक चोरी की घटना सामने आई है। नारंग गांव में एक युवती के कमरे में घुसकर चोर ने चोरी की वारदात को दिया अंजाम। पीड़िता शिवानी की शादी 11 मई 2025 को होनी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार घटना सोमवार की देर रात की है। शिवानी मोबाइल फोन पर बात करते-करते हाथ में फोन पकड़े पकड़े सो गई। देर रात्रि लगभग तीन बजे गांव का ही रहने वाला युवक करन पुत्र मुकेश है, जो कि कमरे में घुसा। उसने देखा शिवानी सो रही है और हाथ मे मोबाइल है उसने हाथ से मोबाइल छीन लिया।

इस दौरान शिवानी की नींद खुल गई और उसने करन को पहचान लिया। जब करन को पता चला कि शिवानी ने उसे पहचान लिया है, तो उसने मोबाइल को रेलवे अंडरपास के नीचे रख दिया। मोबाइल वहां से बरामद हो गया। लेकिन जब परिवार घर लौटा तो पता चला कि शिवानी की शादी के लिए रखी सोने की नथ और 25 हजार रुपये नगद भी गायब थे। पीड़ित परिवार ने बताया कि शादी की तैयारियां चल रही थी। बेटी के विवाह के लिए खेत गिरवी रखा था और उसी से मिले रुपए घर में रखे थे। सोने के आभूषण व नगदी सहित फरार हो गया।जिसकी सूचना थाना प्रभारी निरीक्षक निराला तिवारी को तहरीर देकर कहा मेरी बेटी की शादी है कठोर कार्यवाही कर मेरा गहना व नगदी दिलाये जाने की मांग की है।

पुलिस पर पीटने का आरोप, दोनों की बिगड़ी हालत, एक की हालत गंभीर

● पुलिस के तानाशाही रवैया से बांकेगंज चौकी आए दिन सुर्खियों में बनी रहती है।

टेलिया पर लादकर बहनों को परिजन लाए अस्पताल वीडियो

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। तहसील गोला क्षेत्र के थाना मैलानी की चौकी बांकेगंज में मारपीट से दो किशोर बहनों की हालत गंभीर हो गई है। परिजनों ने उन्हें ठेलिया पर लादकर अस्पताल ले जाने को हुए मजबूर। पीड़ित परिवार का आरोप है कि मैलानी थाने की महिला कांस्टेबल ने तीन बहनों को प्रताड़ित किया उन्होंने पीटा है 14 वर्षीय शालिनी, 13 वर्षीय वैशाली और 18 वर्षीय शालू को पिछले तीन दिनों से बांकेगंज चौकी पर बुलाया जा रहा था। आरोप है महिला कांस्टेबल चारू पाठक और सुनीता ने बेंत से मारपीट की और गालियां दीं। इनमें वैशाली की स्थिति ज्यादा चिंताजनक है। लड़कियों के पैर में चोट के निशान हैं। पीड़ित परिवार के मुखिया रामू के अनुसार, उनका बेटा सौरभ 20 वर्ष जनवरी से लापता है। पड़ोसी गांव की एक लड़की भी गायब है लापता लड़की के पिता कालिका प्रसाद ने सौरभ के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई है सीएचसी बांकेगंज के फार्मासिस्ट ने एक किशोरी की हालत नाजुक देखते हुए जिला अस्पताल रेफर कर दिया है पीड़ितों के शरीर पर मार के निशान मौजूद हैं। पुलिस की इस कार्रवाई से नाराज होकर कोठीपुर के ग्रामीणों ने शनिवार को पुलिस चौकी का घेराव किया था।परिजन बहनों को ठेलिया पर लादकर अस्पताल लेकर आए। हंगामे के बाद मैलानी थाने से अतिरिक्त पुलिस बल बुलाया गया। पुलिस ने शाम को पीड़ित परिवार का शांतिभंग में चालान कर दिया। रामू का कहना है कि उन्होंने भी बेटे के लापता होने की शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई वीडियो सामने आने के बाद ग्रामीण ने सोशल मीडिया पर पुलिस की कार्यशैली पर सवाल खड़े किए हैं। मैलानी थानाध्यक्ष निराला तिवारी का कहना है कि परिवार को सब मालूम है कि उनका बेटा कहां है। पुलिस तो अपनी पूछताछ करेगी ही। मारने की बात गलत है।

संक्षिप्त खबरें

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला हिंदू रक्षा वाहिनी द्वारा फुका गया

भदोही/सुरियावा 21 अप्रैल 2025 सोमवार को सुरियावा नगर पंचायत स्थित अटल चौराहे पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला हिंदू रक्षा वाहिनी कार्यकर्ता भदोही डॉक्टर अजय पांडे के नेतृत्व में बायपास स्थित अटलचौराहा पर पर हिंदू रक्षा वाहिनी कार्यकर्ताओं द्वारा द्वारा फुका गया तथा महामहिम राष्ट्रपति को ज्ञापन सुरियावां पुलिस के सब इंस्पेक्टर संतोष कुमार राय के माध्यम से दीया तथा हिंदुओं पर हो रहे लगातार अत्याचार के खिलाफ प्रदर्शन किया तथा राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग की इस मौके पर डॉ अजय पांडे अनिल मिश्राअवधेश कुमार उमर अमित कुमार उपाध्याय स्वरूपा देवी रीना श्रीवास्तव सहित भारी संख्या में हिंदू रक्षा वाहिनी के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

दिव्यांगजन चिकित्सक की संस्तुति पर ट्राइसाईकिल, व्हील चेयर, वैशाखी, कान की मशीन, ब्लाइण्ड स्टिक, कृत्रिम हाथ व पैर आदि उपकरण निःशुल्क प्राप्त करने हेतु करें ऑनलाइन आवेदन

भदोही– जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी दिनेश कुमार त्रिपाठी द्वारा जनपद के दिव्यांगजनों को सूचित किया जाता है कि विभिन्न श्रेणी के दिव्यांगजनों को उनकी अवश्यकतानुसार चिकित्सक की संस्तुति पर ट्राइसाईकिल, व्हील चेयर, वैशाखी, कान की मशीन, ब्लाइण्ड स्टिक, कृत्रिम हाथ व पैर आदि उपकरण निःशुल्क प्रदान किया जा रहा है। ऐसे दिव्यांग व्यक्तियों को यह सुविधा देय है, जिनकी वार्षिक आय ग्रामीण क्षेत्र हेतु रू. 46080/- एवं नगर क्षेत्र हेतु रु 56460/- वार्षिक से अधिक न हो। शासन के निर्देशानुसार एक बार कृत्रिम उपकरण मिलने पर 03 वर्ष बाद ट्राइसाइकिल, व्हील चेयर आदि कृत्रिम उपकरण दिये जाने का प्राविधान है। उक्त योजना का लाभ प्राप्त करने हेतु दिव्यांगजन आय, जाति, निवास, आधार कार्ड, दिव्यांगता प्रमाण पत्र, वोटर आई डी कार्ड या यू0डी0आई0डी0 कार्ड आदि के साथ अपने नजदीकी सेवा केन्द्र के माध्यम से विभागीय पोर्टल https://divyangjanup.upsdc.gov.in पर आनलाइन आवेदन करायें, ताकि प्रथम आवत प्रथम पावत के आधार पर दिव्यांगजनों को वित्तीय वर्ष 2025-26 में विभाग द्वारा लाभान्वित किया जा सके।

बेहतर बीट पुलिसिंग सुदृढ़ कानून व्यवस्था व अपराध नियंत्रण हेतु पुलिस द्वारा चलाए जा रहा विशेष अभियान

बीट प्रणाली के माध्यम से बेसिक पुलिसिंग को दी जा रही धार

पुलिस महानिदेशक, उ0प्र0 लखनऊ के आदेश के क्रम में अभिमन्यु मांगलिक, पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा बीट पुलिसिंग व कानून व्यवस्था को सुदृढ़ तथा अपराध नियंत्रण हेतु आज दिनांक 21.04.2025 को पुलिस कार्यालय में बीट पुलिसिंग और प्रभावशाली व सुदृढ़ बनाने हेतु सभी थानों पर नियुक्त कांस्टेबल/हेड कांस्टेबलों की बीट पुस्तिका प्रतिदिन निर्धारित संख्या में बुलाकर चेक किया जा रहा है । बीट पुस्तिका अद्यतन व सभी जानकारियां पूर्ण रूप से सही करने व किसी भी तरह का शिथिलता न बरतने हेतु सभी को निर्देश दिए गए।

प्राण प्रतिष्ठा एवं भंडारे का आयोजन

चुनार, मिर्जापुर। रेलवे स्टेशन स्थित संकट मोचन राम दरबार मन्दिर का भव्य अभिषेक प्राण प्रतिष्ठा एवं भंडारा का आयोजन किया गया है समिति के पदाधिकारी वाई पी सिंह ने बताया कि 23 अप्रैल बुधवार सायं 3 बजे कलश यात्रा 24 अप्रैल प्रातः 9 बजे दरबार का नगर भ्रमण 25 अप्रैल प्राण प्रतिष्ठा 26 अप्रैल को अखंड रामायण 27 अप्रैल को भंडारा एवं प्रसाद वितरण का आयोजन किया जाना है इस कार्यक्रम में सतीश दुबे जगदीश गुप्ता विवेक दूबे नारायण राठी हेमंत पांडेय मृत्युंजय दूबे महेंद्र बाबा हरिओम तिवारी पप्पू गुप्ता सहित समस्त भक्त गण का सहयोग रहेगा।

मुख्यमंत्री डैशबोर्ड पर कर-करेत्तर कार्यो की अपर जिलाधिकारी ने की समीक्षा बैठक

स्वतंत्र प्रभात

भदोही –मुख्यमंत्री डैशबोर्ड पर कर-करेत्तर कार्यो की समीक्षा बैठक अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 कुंवर वीरेन्द्र मौर्य की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों के साथ किया गया। अपर जिलाधिकारी ने आईजीआरएस की समीक्षा में असंतुष्ट फीडबैक शिकायतकर्ता से सम्बन्धित अधिकारियों को कड़ी फटकार लगाते हुए लग कर निस्तारित कराते हुऐ रैंक सुधार पर जोर दिया। हैसियत नामा में लम्बित आवेदनों को प्रतिदिन अनुश्रवण करते हुए निस्तारण का निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिया। अपर जिलाधिकारी ने सभी उप जिलाधिकारियों को निर्देश दिया कि आईजीआरएस पोर्टल पर लम्बित मामलों को निस्तारण कराना सुनिश्चित करें। अपर जिलाधिकारी ने समस्त अधिकारियों को निर्देशित किया कि आईजीआरएस पोर्टल पर शिकायत डिल्फाटर श्रेणी में न हो समय रहते शिकायत का गुणवत्तापूर्वक करें निस्तारण, नही तो होगी कठोर कार्यवाही।

अपर जिलाधिकारी ने विभागवार आरसी सबसे ज्यादा बैंक के बाद संबंधित विभागों को निर्देशित करते हुए वसूली बढ़ाने पर बल दिया, जिसके लिए उन्होंने प्रत्येक शनिवार उप जिलाधिकारी को संबंधित विभागों के साथ बैठक कर समीक्षा करने का निर्देश दिया। अपर जिलाधिकारी ने पेट्रोल पंप, राइस मिल, शराब की दुकानों, गैस एजेंसियों पर औचक निरीक्षण करते हुए कड़ी कार्रवाई करने का निर्देश दिया। अपर जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारियों को निर्देशित किया कि लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली पूरी करें, इसमें किसी तरह की ढिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी, अधिकारी राजस्व वसूली में हिला-हवाली करेंगे तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। अपर जिलाधिकारी ने परिवहन, आबकारी, राजस्व, अधिशासी अधिकारी, खनन आदि विभागों को अभियान चलाकर लक्षित राजस्व वसूली किये जाने पर बल दिया।अपर जिलाधिकारी ने कर करेत्तर एवं लक्ष्य वसूली के सम्बन्ध में उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिये कि लम्बित राजस्व वादों का निस्तारण शीघ्र सुनवाई करके उनका निस्तारण किया जाये। कुछ तहसीलों में लक्ष्य के अनुरूप वादों का निस्तारण न किये जाने पर नाराजगी व्यक्त करते हुये तत्काल लक्ष्य निर्धारित करने के निर्देश दिये। उन्होंने आई0जी0आर0एस0 के अन्तर्गत प्राप्त शिकायतों का निस्तारण, रिट याचिकायें, खतौनी अशं निर्धारण की कार्यवाही, स्वामित्व योजना, रोस्टर के अनुसार खतौनियों का दाखिला, एंटी भू माफिया जैसे कार्यों पर अब तक किये गये कार्यों की प्रगति को बढ़ाने के निर्देश दिए।

युवक को पीटकर घायल किया

अलीगढ़। थाना अकराबाद क्षेत्र के गोपी चौराहे पर रविवार की दोपहर किसी बात को लेकर युवकों में विवाद हो गया। जिसपर दो युवकों ने एक युवक को पीटकर घायल कर दिया। घटना की सूचना पर पुलिस ने घायल युवक को उपचार के लिए सीएचसी में भर्ती कराया है। गांव गोपी निवासी घायल नीरज पुत्र राजू ने बताया है कि रविवार की दोपहर वह चौराहे से कुछ सामान खरीदने आया था। इसी बीच गांव के ही दो युवक बाइक पर आए जिन्होंने बेवजह उसे पीटकर घायल कर दिया है।

नाबालिग को बहला-फुसलाकर भगा ले जाने व दुष्कर्म करने का आरोपी गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

थाना सुरियावां क्षेत्र अंतर्गत वादिनी मुकदमा की नाबालिग पुत्री को आरोपी द्वारा बहला-फुसलाकर भगा ले जाने की घटना के संबंध में प्राप्त सूचना पर दिनांक-09.04.2025 को मु0अ0सं0-93/2025 धारा-137(2),87 भारतीय न्याय संहिता का अभियोग पंजीकृत कर विवेचनात्मक कार्यवाही प्रचलित की गई। पंजीकृत अभियोग से संबंधित अपहृता को दिनांक 15.04.2025 को बरामद किया गया तथा साक्ष्य संकलन, मेडिकल परीक्षण व बयान के आधार पर विवेचना के क्रम में दुष्कर्म की घटना प्रकाश में आने पर उक्त अभियोग में धारा-64 भा0न्या0सं0 व 3/4 पाक्सो एक्ट की बढ़ोत्तरी किया गया ।

अभिमन्यु मांगलिक,पुलिस अधीक्षक

भदोही द्वारा वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी व महिला सम्बन्धित अपराध में त्वरित कार्यवाही हेतु निर्देश के क्रम में आज दिनांक-20.04.2025 को स्थानीय पुलिस टीम द्वारा उक्त अभियोग से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त आशुतोष गौतम पुत्र राम शिरोमणि निवासी बहुता चकडाही थाना सुरियावां जनपद भदोही उम्र करीब 24 वर्ष को रेलवे स्टेशन सुरियावां के पास से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही करते हुए चालान सम्बन्धित मा0 न्यायालय किया गया।

थाना गोपीगंज अन्तर्गत छिनैती की घटना का सफल अनावरण, राहगीरों से छिनैती करने वाला अभियुक्त तमंचा व जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

दिनांक-20.04.202 को थाना गोपीगंज पर आवेदक श्री शिवप्रसाद शुक्ला निवासी तुलसीपट्टी थाना कोईरौना जनपद भदोही द्वारा सूचना दिया गया कि दिनांक 08.04.2025 को थाना गोपीगंज क्षेत्र अंतर्गत झिरिया पुल के पास मोटरसाइकिल सवार दो अज्ञात मेरे जेब से मोबाइल छीनकर भाग गये। घटना के संबंध में प्राप्त सूचना पर अज्ञात के विरुद्ध मु0अ0सं0-183/25 धारा-304 बी.एन.एस. का अभियोग पंजीकृत करते हुए । अभियुक्तों की पहचान व घटना के शीघ्र अनावरण के प्रयास सहित विधिक कार्यवाही प्रचलित की गई। अभिमन्यु मांगलिक,पुलिस अधीक्षक भदोही के निर्देशन में अपराध व अपराधियों पर अंकुश एवं प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में आज दिनांक 21.04.2025 को शुभम अग्रवाल,अपर पुलिस अधीक्षक भदोही के

पर्यवेक्षण व श्री चमन सिंह चावड़ा क्षेत्राधिकारी ज्ञानपुर के नेतृत्व में थाना गोपगंज पुलिस टीम द्वारा संदिग्ध वाहन/व्यक्तियों की चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना गोपीगंज पर पंजीकृत अभियोगों का सफल अनावरण करते हुए छिनैती करने वाला गुलौरी मोड़ के पास से एक अभियुक्त अविनाश कुमार पुत्र अवधेश प्रसाद निवासी भुल्लनपुर थाना मडुवाडीह जनपद वाराणसी गिरफ्तार, कब्जे से 01 छिनैती सहित अन्य घटनाओं से संबंधित कुल 04 एन्ड्रायड मोबाइल ,01 देशी तमंचा 315 बोर व 01 जिंदा कारतूस 315 बोर,छिनैती की घटना में प्रयुक्त मोटरसाइकिल बरामद किया । उक्त गिरफ्तारी बरामदी के सम्बन्ध में मुकदमा उपरोक्त में धारा 317(4) बीएनएस व 3/25 आयुध अधिनियम का बढ़ोत्तरी कर विधिक कार्यवाही के उपरांत चालान मा0 न्यायालय किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त का साथी आरोपी मौके से फरार हो गया । जिसकी गिरफ्तारी हेतु पुलिस टीम द्वारा प्रयास किया जा रहा है । इनकें अन्य घटनाओं में संलिप्तता व आपराधिक इतिहास की जानकारी की जा रही है । पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्त द्वारा अपने साथी अभिषेक कुमार उर्फ कल्लू पुत्र अवधेश कुमार निवासी लठिया थाना रोहनिया जनपद वाराणसी के साथ दिनांक 08.04.2025 को थाना गोपीगंज अन्तर्गत झिरिया पुल के पास एक एन्ड्रायड मोबाइल छिनैती की घटना किया गया था तथा 03 मोबाइलों को अलग-अलग स्थानों से छिना गया है ।

एक देश एक वोट का महाविधालय मे प्रबुद्ध समागम

स्वतंत्र प्रभात

मनकापुर गोंडा– माँ गायत्री रामसुख महाविद्यालय, मसकनवा (गोंडा) में "एक राष्ट्र, एक चुनाव" विषय पर भारतीय जनता पार्टी की ओर से आयोजित प्रबुद्ध महाविद्यालय समागम का आयोजन भव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस अभियानात्मक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा अवध क्षेत्र के क्षेत्रीय महामंत्री विजय प्रताप सिंह 'एडवोकेट' उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में गौरा विधायक प्रभात कुमार वर्मा सम्मिलित रहे ।कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विधायक प्रभात वर्मा ने कहा कि "एक राष्ट्र, एक चुनाव" भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़, पारदर्शी एवं परिणामोन्मुख बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। यह पहल न केवल समय और संसाधनों की बचत करेगी, बल्कि शासन की निरंतरता एवं विकास कार्यों में तीव्रता भी सुनिश्चित करेगी।इस अवसर पर विद्याभूषण द्विवेदी, किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष कमलेश पांडेय सांसद प्रतिनिधि,अनिल कुमार पासवान ,

ब्लॉक प्रमुख छपिया, वैभव सिंह , आनन्द पांडेय , पूर्व मंडल अध्यक्ष जितेंद्र नाथ पांडेय , मंडल अध्यक्ष भवनजोत अरुण प्रकाश शुक्ला , मंडल अध्यक्ष केशव नगर मधूप सिंह , मंडल अध्यक्ष छपिया रामचंद्र वर्मा , मंडल अध्यक्ष मसकनवा श्रीमती राधिका देवी , किसान मोर्चा जिला मंत्री बिंदेश्वरी वर्मा, पूर्व जिला पंचायत सदस्य रोहित भारती , किसान मोर्चा मंडल अध्यक्ष विजय दत्त सिंह , मंडल उपाध्यक्ष जगन्नाथ चौबे , मंडल महामंत्री मसकनवा राजन सिंह , प्रधान छपिया जंक्शन तिवारी, प्रधान भावाजिदपुर बाबू लाल वर्मा , प्रधान सैजलपुर सोनू पांडे य, प्रधान ककरवटा श्याम नारायण वर्मा , समाजसेवी विक्की मिश्रा, गन्ना चेयरमैन पप्पू मोर्य सहित अनेक जनप्रतिनिधि, कार्यकर्त्ता एवं क्षेत्रवासी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान युवाओं व छात्रों ने "एक राष्ट्र, एक चुनाव" विषय पर जागरूकता प्राप्त की और इस लोकतांत्रिक सुधार के समर्थन में सक्रिय भूमिका निभाने का संकल्प लिया।यह आयोजन भारतीय लोकतंत्र को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक मील का पत्थर सिद्ध होगा।

नलकूप कनेक्शन में हो रहे भ्रष्टाचार को लेकर भाकियू करेगी किसान पंचायत

स्वतंत्र प्रभात

देवरिया। भारतीय किसान यूनियन जिला इकाई की मासिक बैठक सिंचाई विभाग के डाक बंगले पर जिलाध्यक्ष गिरीश नारायण शाही उर्फ बड़े शाही के अध्यक्षता में हुई। बैठक में आने वाले दिनों में भीषण गर्मी में मोटर से सिंचाई करने पर जोर दिया गया। भाकियू जिलाध्यक्ष गिरीश नारायण शाही उर्फ बड़े शाही ने कहा कि पूरे जनपद के सभी 33/11 केवीए विद्युत उप केंद्रों से जुड़े बिजली विभाग के अधिकारी कर्मचारी द्वारा नलकूप कनेक्शन के नाम पर भारी मात्रा में धन उगाही की जा रही हैं जिससे किसानों में आक्रोश है । श्री शाही ने कहा कि किसानों के एक नलकूप कनेक्शन का सात हजार से लेकर दस हजार रुपए विद्युत कर्मियों द्वारा मांगा जा रहा हैं। जो दे रहा हैं उसका कनेक्शन आसानी से हो जा रहा हैं और जो रुपए नहीं दे रहा हैं उसका रिपोर्ट नहीं लगाया जा रहा हैं। मण्डल संयोजक शहीद ख्वाजा मंसूरी ने कहा कि खेती में लागत बढ़ती जा रही हैं जिससे खेती घाटे का सौदा होता जा रहा हैं। लागत कम करने के लिए सरकार ने नलकूप फ्री सिंचाई योजना पिछले साल लांच की । मगर यह योजना बिजली विभाग के अधिकारी कर्मचारी गण के भ्रष्टाचार के कारण धरातल पर नहीं दिखाई दे रहा हैं। भाकियू जिला महासचिव धनंजय सिंह ने कहा कि आज स्थिति यह है कि कोई भी ऐसा गांव नहीं है जहां कम से कम 10 मोटर न हो मगर 7 हजार से 10 हजार रुपए न देने के कारण कनेक्शन नहीं हो पा रहा हैं। भाकियू जिला संयोजक सदानंद यादव ने कहा कि भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता किसानों के इस गंभीर समस्या को लेकर अधीक्षण अभियंता कार्यालय पर किसान पंचायत करने की तैयारी में जुटे हुए है। भाकियू जिला उपाध्यक्ष हरेंद्र सिंह ने कहा कि दिनांक 23 अप्रैल दिन बुधवार को भाकियू के एक प्रतिनिधिमंडल द्वारा जिलाधिकारी एवा अधीक्षण अभियंता को पत्रक दिया जाएगा।

"हर श्वास में छिपा है जीवन का आनंद"- प्रेम रावत

● अंतर्राष्ट्रीय वक्ता, लेखक एवं शांतिदूत प्रेम रावत ने सैनामैना भैरहवा नेपाल में श्रोताओं को आध्यात्मिक ज्ञान से किया अभिसिंचित

स्वतंत्र प्रभात

मिर्जापुर। अंतर्राष्ट्रीय वक्ता, लेखक एवं शांति दूत प्रेम रावत ने शनिवार को नेपाल मै हजारों श्रोताओं को सम्बोधित कर आध्यात्मिक ज्ञान से अभिसिंचित किया। यह कार्यक्रम आत्मज्ञान प्रधार संघ नेपाल द्वारा गौतम बुद्ध अंतरराष्ट्रीय मैदान, सैनामैना नगर पालिका वार्ड नंबर 7 के रुपन्देही (बुटबल के पास) में आयोजित किया गया। प्रेम रावत ने

कहा- "मैं आज यहाँ आया हूँ तुमको याद दिलाने के लिए कि मनुष्य जन्म अनमोल है और यह फिर नहीं मिलेगा। तुम्हारे अंदर अनेक अच्छाइयों है तुम्हारे अंदर दया है। तुम्हारे अंदर करुणा है। तुम्हारे अंदर वे सारी चीजें हैं जिससे मनुष्य का कल्याण हो सकता है।"प्रेम रावत ने कहा "जीवन में खुश होने के लिए ही हम सब कुछ करते हैंपरंतु असली खुशी हमारे हृदय में है। खुश रहो, क्योंकि तुम्हारे अंदर यह श्वास आ रहा है। श्वास का आना-जाना ही बनाने वाले की कृपा हैं। जब तक तुम श्वास की कीमत नहीं समझोगे तब तक तुम नहीं जानांगे कि यह जीवन कितना दुर्लभ है। इस श्वास को पहचानी, श्वास को जानो. इसमें तुम्हें वह चीज मिलेगी जो तुम्हें खुशी दे सकती है।"

उन्होंने यह भी बताया कि प्यार के बिना कोई रिश्ता नहीं है। सारे रिश्ते-नाते प्यार से हैं। तुम्हारा तुम्हारे साथ क्या रिश्ता है? प्यार का है, आभार का है या कुछ और है? प्यार का नाता होता है जैसा है उसे वैसा ही स्वीकार करना। असली प्यार के नाते ही तुम दूसरों में बुराई नहीं देखते हो, अच्छाई देखते हो। उन्होंने आगे कहा "जान दो प्रकार के होते हैं। एक है स्वयम का जान और एक है दुनिया का ज्ञान। एक से आनंद मिल सकता है और एक से आनंद नहीं मिलेगा चाहे कितना भी जान हो जाए। जिसकी तुम्हें तलाश है वह तुम्हारे अंदर हैं उसको जानिए। तुम उसका ध्यान कर सकते हो और अपने जीवन को आनंद से भर सकते हो।" इस कार्यक्रम में नेपाल भारत की सीमावर्ती क्षेत्री से आए हजारों लोगों ने भी भाग लिया। भारी बारिश के बावजूद सभी लोगों ने कार्यक्रम का आनंद लिया।

मुक्ति से भी श्रेष्ठ प्रेम लक्षणा भक्ति पांचम दिवस - सतीश कुमार शर्मा

स्वतंत्र प्रभात

चुनार, मिर्जापुर। श्रीमद् भागवत कथा कलयुग में एकमात्र ऐसा महापुराण है जो वेद गीता बल्लभ सूत्र का सारत्तव है जिसे महर्षि वेदों व्यास जी ने महर्षि नारद जी की प्रेरणा से समाधि भाषा में रचित किया है जिसका श्रवण करने से मानव का यह लोक व परलोक दोनों ही सुधर जाता है क्योंकि यह भगवान श्री कृष्णा वाग्मय अंग में साक्षात स्वरूप है मृत्यु के बाद तो मुक्ति का विश्वास मानव को देता ही है परंतु जीवन में जीवित रहते हुए भगवान की कथाओं का वर्णन सुनकर प्रेम लक्षणा भक्ति का भाव जागृत हो जाता है यह जीवन में ही आंखों से भगवान का साक्षात दर्शन व कानों से भगवान का कीर्तन व वाणी से भगवान का

गुणावद हाथों से भगवान की सेवा कर जीवन के साथ हो जाता है भगवान श्री कृष्ण की ब्रज की विविध मनोहरी बाल लीलाओं का सजीव वर्णन करते हुए पंडित सतीश शर्मा जी ने सर्वप्रथम पूतना उद्धार के प्रसंग का वर्णन करते हुए कहा कि पूतना अभिधया रूपी माया है

यह अविधा का नास श्री भगवात जी की कथा श्रवण से ही होता है भगवान की दयालुता इस प्रसंग में सिद्ध होती है राक्षसी होते हुए उसको भी मोक्ष प्रदान किया माखन चोरी लीला, दामोदर लीला, गोवर्धन लीला , इंद्रमान भांग, गिरिराज जी का पूजन, चीरहरण लीला वेणु गीत, गोपी गीत, युगल गीत, भ्रमण गीत की रस वर्षा से श्री गोपाल मंदिर में उपस्थित अपार वैष्णव जन समूह परमानंद रस से परिपूर्ण होकर अपने जीवन की कितार्थ का अनुभव करने लगा संगीत मय कीर्तनों की धुन में अष्टसाव कवियों द्वारा रचित भगवान श्री कृष्ण की बाल लीलाओं से भक्तजन रसासित हुए षष्ठपीठाधीश्वर गो0108 श्री श्याम मनोहर जी महाराज ने महोत्सव की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मुक्ति से भी श्रेष्ठ महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा प्रगठित प्रेम लक्षणा भक्ति है जिसमें भगवत नाम स्मरण स्वत भगवान सेवा भोग राज सिंगर द्वारा भगवान को प्रसन्न कर लिया जाता है इसलिए श्री महाप्रभु जी ने वैष्णव के घर-घर में भगवत सेवा पदराई जिससे गृहस्था आश्रम में रहते हुए कलयुग के दैवी जीव जीवन में ही भगवान का साक्षात दर्शन कर अपने जीवन को कल्याण कर लेते हैं

कथा के पूर्व षष्ठपीठाधीश्वर गो0 108 श्री श्याम मनोहर जी महाराज व षष्ठपीठ युवराज गो0 प्रियेंदु बावा साहब सह परिवार व मनोरती शेखर रस्तोगी ने भागवत जी की पोती का पूजन भोग लगाकर कथा का शुभारंभ किया इस अवसर पर मीडिया प्रभारी अतुल शाह अरुण पारीक मनोज मुनीमवाला, घनश्याम दास सोनावाला व मनोरती परिवार ने आए सभी वैष्णवन का स्वागत किया ।

शिक्षा मित्रों एवं अनुदेशकों का मानदेय न मिलने से मायूसी

स्वतंत्र प्रभात

सीखड़, मीरजापुर। जनपद में प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षामित्रों एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत अनुदेशकों का मार्च महीने का मानदेय अभी तक नहीं मिला। जिससे उनमें मायूसी व्याप्त है। बताते हैं कि सरकार द्वारा इनकी मानदेय ग्रांट कब की जारी की जा चुकी है। शिक्षा मित्रों का आरोप है कि विभागीय लापरवाही की वजह से हर माह मानदेय जिले स्तर से लेट कर दिया जा रहा है। जिससे उनके परिवार का भरण-पोषण करने में परेशानियां का सामना करना पड़ रहा

है।उनका आरोप है कि अन्य विभागों में कार्यरत कर्मचारियों का वेतन समय पर जारी कर दिया जाता है किन्तु अल्प मानदेय पर कार्य करने वाले शिक्षा मित्र अनुदेशकों का मानदेय विभागीय लापरवाही की भेंट चढ़ जाती हैं। शिक्षा मित्रों एवं अनुदेशकों ने जिला अधिकारी महोदया का ध्यान आकृष्ट कराते हुए उनसे अविलंब मानदेय भुगतान कराने की मांग की है।

एमडीएम बनाते समय गैस चूल्हे से निकली पाइप से लगी आग से झुलसी रसोइया

● घटना कोतवाली क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय लरछूट सोमवार सुबह करीब 10:30 बजे

स्वतंत्र प्रभात

सीखड़, मीरजापुर। क्षेत्र के लरछुट गांव स्थित प्राथमिक विद्यालय में सोमवार को सुबह करीब 10:30 बजे रसोईया ने जैसे ही गैस सिलेंडर जलाने के लिए खोला की लगी चूल्हे में पाइप फट गया और आज धधकने लगा जिसकी चपेट में आने से रसोइयां कृष्णावती व सितारा देवी की बहू पूजा झुलस गई जिन्हें परिजनों ने पास के अस्पताल में ले जाकर उपचार कराया गया। आग लगने की सूचना पर

प्रभारी प्रधानाध्यापिका ने करीब 25 बच्चों को लेकर स्कूल से बाहर निकल गई और आग बुझाने के लिए लोगों का गुहार लगाने लगी जिस पर पहुंचे स्थानीय लोगों ने आग बुझाने का हिम्मत नहीं जुटा पाए। तभी आग लगने की सूचना पर पहुंचे संविदा विद्युत कर्मी कमल किशोर पांडेय ने अपनी जान कि परवाह न करते हुए बगल में रखा भस्सी को बाल्टी में लेकर जलते हुए गैस के आग पर फेक कर आग को बुझाया। इस दौरान कुछ देर के लिए अफरा तफरी मच गया। घटना स्थल पर काफी लोगों की भीड़ लग गई।

मां विंध्यवासिनी धाम में असम के राज्यपाल ने सपरिवार टेका माथा

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में स्थित विश्व प्रसिद्ध मां विंध्यवासिनी धाम में असम के राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने अपने परिवार के साथ मां विंध्यवासिनी के चरणों में माथा टेककर आशीर्वाद प्राप्त किया। यह पवित्र शक्तिपीठ, जो विंध्याचल की पहाड़ियों में गंगा तट पर स्थित है, मां दुर्गा के प्रमुख स्वरूपों में से एक मां विंध्यवासिनी का निवास स्थल माना जाता है। राज्यपाल श्री आचार्य ने मंदिर में विधि-विधान के साथ पूजा-अर्चना की और मां विंध्यवासिनी की विशेष आरती में हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने मां से देश और प्रदेश की सुख-समृद्धि, शांति और कल्याण की प्रार्थना की। उनके साथ उनके परिवार के सदस्य भी इस पवित्र यात्रा में शामिल थे। मंदिर के पुजारियों ने पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ उनका स्वागत किया

और उन्हें मां का प्रसाद भेंट किया। श्री आचार्य ने मां विंध्यवासिनी धाम की महिमा की सराहना करते हुए कहा, "यह शक्तिपीठ न केवल आध्यात्मिक शांति का केंद्र है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का भी प्रतीक है। मां विंध्यवासिनी की कृपा से सभी भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।" उन्होंने मंदिर परिसर की व्यवस्था और स्वच्छता की भी प्रशंसा की। मां विंध्यवासिनी धाम को 51 शक्तिपीठों में से एक माना जाता है, जहां मां अपने पूर्ण विग्रह रूप में विराजमान हैं। शिव पुराण के अनुसार, यह वह स्थान है जहां आदिशक्ति मां विंध्यवासिनी सती के रूप में पूजी जाती हैं। धाम में तीन प्रमुख देवियों–मां विंध्यवासिनी, महाकाली (कालीखोह मंदिर), और अष्टभुजा देवी–के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है, जो त्रिकोण यंत्र के रूप में विख्यात हैं।

इस अवसर पर मंदिर परिसर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद थे, जो नवरात्रि के बाद भी मां के दर्शन के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से पहुंचे थे। जिला प्रशासन और मंदिर प्रबंधन ने राज्यपाल की यात्रा के लिए विशेष व्यवस्था की थी, ताकि दर्शन और पूजा सुचारू रूप से संपन्न हो सके। राज्यपाल की इस यात्रा ने मां विंध्यवासिनी धाम के महत्व को और अधिक रेखांकित किया है, जो भक्तों के लिए आस्था और शक्ति का प्रतीक है। इस अवसर पर विधायक नगर, रत्नाकर मिश्र के अलावा अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ल, नगर मजिस्ट्रेट विनीत उपाध्याय उपस्थित है। इसके पूर्व अष्टभुजा निरीक्षण गृह पहुंचनें पर गार्ड आफ आनर दिया गया, तत्पश्चात जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन एवं पुलिस अधीक्षक सोमेन वर्मा ने पुष्पगुच्छ एवं अंगवस्त्रम प्रदान कर किया स्वागत व अभिनन्दन।

संक्षिप्त खबरें

प्रयागराज में बाइक सवार उचक्कों ने महिला के गले से छीना हार, फरार

प्रयागराज। कीड़गंज थाना क्षेत्र में एक चौंकाने वाली वारदात सामने आई है। मिंटू पार्क के आगे बोट क्लब के सामने एक शादी समारोह में बाइक से जा रहे दंपत्ति को निशाना बनाते हुए दो उचक्कों ने महिला के गले से सोने का हार छीन लिया। पीड़ित महिला ने बताया कि वह अपने पति के साथ बाइक पर सवार होकर शादी समारोह में जा रही थी। जैसे ही उनकी बाइक बोट क्लब के पास पहुंची, पीछे से आ रही एक सफेद अपाची बाइक पर सवार दो युवक अचानक पास आए और महिला के गले से झपट्टा मारकर हार छीन लिया। घटना को अंजाम देने के बाद दोनों आरोपी अपनी बाइक मोड़कर तेजी से मिंटू पार्क की ओर फरार हो गए। महिला के अनुसार, दोनों उचक्कों ने काली टी-शर्ट पहन रखी थी और चेहरे पर मास्क लगाए हुए थे जिससे उनकी पहचान मुश्किल हो रही है। पीड़ित दंपत्ति ने तुरंत कीड़गंज थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। इलाके के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

गांव में शराब की दुकान खुलने पर महिलाओं ने किया हंगामा, जमकर की नारेबाजी!

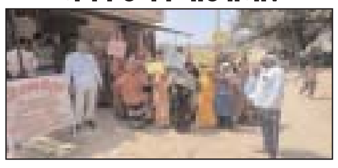

प्रयागराज। सरायइनायत थाना क्षेत्र सरायनिरुद्दीनपुर उर्दीसराय गांव में शराब की दुकान खुलने पर जमकर हंगामा किया गया। सोमवार की सुबह गांव की बड़ी संख्या में महिलाओं ने शराब की दुकान पर प्रदर्शन करते हुए नारेबाजी की। दुकान को तत्काल बंद कराने की मांग की। महिलाओं ने कहा कि क्षेत्र के कटियारी, चकिया और रिठ्यां बाजार में भी शराब की दुकानें गांव में खोल दी गई हैं। इससे नशाखोरी को बढ़ावा मिल रहा है और गांव का माहौल खराब हो रहा है। पहले भी इसकी शिकायत जिलाधिकारी से की जा चुकी है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

ईट भट्ठे में पथाई कर रही मूकबधिर युवती के साथ दुष्कर्म

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के सैय्यद सरावा पुलिस चौकी अन्तर्गत एक गांव के ईट भट्ठे में बांदा जनपद के कुछ लोग ईट पथाई का काम करते हैं उनके परिवार में एक मूकबधिर युवती भी साथ मे मजदूरी करती है ईट भट्ठे में झोपड़ी डाल कर पूरा परिवार रहता है 19 अप्रैल की रात को झोपड़ी से बाहर लघु शंका करने युवती निकली तो गांव के दो युवको ने युवती का मुंह दबाकर उसे झाड़ियो के बीच खींच ले गए और युवती के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया है युवती जब झोपड़ी में गायब दिखी तो परिवार के लोग उसे खोजने निकले काफी देर बाद मालूम चला कि बेहोशी की हालत में युवती झाड़ियो में पड़ी हुई है जानकारी मिलते ही मौके पर भट्ठे के तमाम मजदूर पहुंच गए मामले की सूचना सैय्यद सरावा चौकी पुलिस को भी दी गई मामले की सूचना युवती के परिवार के लोगों ने थाना और चौकी पुलिस को दिया है आरोपियों का नाम लिखते हुए परिवार के लोगों ने थाना पुलिस को नामजद तहरीर दी लेकिन मामले में कोई कार्यवाही पुलिस नहीं कर सकी इसी बीच चरवा कोतवाल को पुलिस लाइन भेज दिया गया है 2 दिन बीत जाने के बाद अभी तक आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करके उनकी गिरफ्तारी नहीं की गई है मामले में चौकी इंचार्ज की भूमिका पर सवाल खड़े हो गए हैं।

सर्कस देखने के लिए पत्रकार युवक पर हमला

पत्रकारों पर लगातार हो रहे हमले

सिराथू कौशाम्बी। कड़ा धाम थाना क्षेत्र के जहांगीराबाद निवासी 27 पत्रकार जोहित कुमार खबर 360 रविवार रात करीब 12 बजे अबू नगर गांव से लौट रहे थे। बताया जा रहा है कि एक युवक पर लोहे की राड से हमला किया गया है। गांव के पास लगे सर्कस में रुक कर तमाशा देख रहे रोहित को उनके ही गांव के कुलदीप कुमार सोनकर ने लोहे की राड से जोहित पर हमला कर दिया इस मामले में जो भी गम्भीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर गया है। सूचना मिलते ही कड़ा धाम पुलिस मौके पर पहुंची और घायल जोहित को एम्बुलेन्स पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र इस्लामपुर ले जाया गया वहां से गम्भीर हालत में जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। सोमवार दोपहर को 1 बजे जिला अस्पताल से इलाज के बाद जोहित ने कड़ाधाम थाना पहुंचकर पूरी घटना की शिकायत दर्ज कराई पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए आरोपी कुलदीप कुमार को गिरफ्तार कर लिया। थाना अध्यक्ष धीरेंद्र सिंह ने बताया कि आरोपी का चालान कर दिया गया है।

एक छोटी सी लापरवाही बड़े हादसे का कारण बन सकती थी

● शांतिकुंज क्षेत्र स्थित सरस्वती मेमोरियल पब्लिक स्कूल मेंबच्चे के साथ हुआ लापरवाही।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। बड़े हादसे का कारण बन सकती थी। तेज धूप और भीषण गर्मी के बीच एक छोटे छात्र को स्कूल परिसर में खड़ा किया गया था। स्थानीय निवासी वैभव पंडित उर्फ़ राजन, जो वहाँ से गुजर रहे थे, ने स्थिति को गंभीरता से लिया। उन्होंने बताया, "मेरे पीछे बैठे एक लड़के ने पूछा कि वो बच्चा धूप में क्यों खड़ा है। मैंने खुद दस मिनट तक देखा, लेकिन कोई शिक्षक उसे अंदर नहीं ले गया। तब मैंने स्कूल के प्रिंसिपल और प्रबंधन से मिलकर तुरंत हस्तक्षेप किया।" राजन की तत्परता और सजगता से छात्र को कक्षा में भेजा गया, जिससे संभवतः हीट स्ट्रोक जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्या से उसकी रक्षा हो सकी। गर्मी के इस मौसम में यह घटना स्कूलों को सावधान रहने की सख्त जरूरत की याद दिलाती है, खासकर जब बात बच्चों की सुरक्षा की हो।

स्थान-सरस्वती मेमोरियल पब्लिक स्कूल, सेक्टर C, शांतिकुंज, प्रयागराज (गंगा ऋषिकुलम स्कूल के पास)। तेज धूप और भीषण गर्मी के बीच एक छोटे छात्र को स्कूल परिसर में खड़ा किया गया था। स्थानीय निवासी वैभव पंडित उर्फ़ राजन, जो वहाँ से गुजर रहे थे, ने स्थिति को गंभीरता से लिया। उन्होंने बताया, "मेरे पीछे बैठे एक लड़के ने पूछा कि वो बच्चा धूप में क्यों खड़ा है। मैंने खुद दस मिनट तक देखा, लेकिन कोई शिक्षक उसे अंदर नहीं ले गया। तब मैंने स्कूल के प्रिंसिपल और प्रबंधन से मिलकर तुरंत हस्तक्षेप किया।"

राजन की तत्परता और सजगता से छात्र को कक्षा में भेजा गया, जिससे संभवतः हीट स्ट्रोक जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्या से उसकी रक्षा हो सकी। गर्मी के इस मौसम में यह घटना स्कूलों को सावधान रहने की सख्त जरूरत की याद दिलाती है, खासकर जब बात बच्चों की सुरक्षा की हो।

सोनार नरहरी सेना एवं/राष्ट्रीय शिल्पकार मजदूर संघ ने किया विरोध प्रदर्शन

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। सोनार समाज सर्राफा व्यापारी के साथ लूट हत्या छिनैती डकैती पुलिसिया उत्पीड़न के विरोध में धरना प्रदर्शन शास्त्री घाट वरुणा पुल कचहरी पर आयोजित किया गया था जिसमें कई सारे संघटन मिलकर सोनार लोहार कुम्हार शिल्पकार बढ़ई नाई गौंड ठठेरा धोबी के ऊपर जोर जुल्म अत्याचार के खिलाफ प्रदर्शन किया राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मेन्द्र वर्मा ने कहा सोनार समाज शिल्पकार समाज परजुनियां समाज एक जुट होकर 2027 में सरकार को बताने का कार्य करेंगे कि हमारा समाज सिर्फ ओट देगा कि हमारे समाज को हिस्सेदारी भी मिलेगा हिस्सेदारी की लड़ाई में सभी समाज मिलकर संघर्ष करेंगे।

राम गोविंद प्रजापति राष्ट्रीय अध्यक्ष कुम्हार आंदोलन मंच- प्रजा समाज एकजुट होकर संघर्ष करें। सत्यनारायण विश्वकर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष बीएन सेना ..! नरहरी सेना ने ठाना है शिल्पकार समाज को न्याय दिलाना है। सलमा किन्नर राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय किन्नर एकता संघ, राजेश गौंड प्रदेश अध्यक्ष अखिल भारत वर्षीय गौंड महासभा, दिनेश शर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय नाई कल्याण विकास सेवा समिति, ईश्वर दयाल सेठ राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय सबका दल,किशन सेठ वाराणसी अध्यक्ष सर्राफा व्यापार मंडल, सोनी सेठ अर्चना सेठ सुनील वर्मा दिनेश वर्मा राजेन्द्र सेठ संतोष सेठ राहुल सोनी चंद्रशेखर सेठ 6पूर्व प्रधान8 धनंजय विश्वकर्मा पप्पू प्रजापति अनूप प्रजापति दिनेश शर्मा शाकिब अली मोहम्मद राघवेंद्र प्रजापति एडवोकेट संजय विश्वकर्मा, सत्यनारायण विश्वकर्मा उस्मान चन्दन विश्वकर्मा।

अक्षय तृतीया 30 अप्रैल, 2025 के अवसर पर बाल विवाह रोकने के दिये निर्देश

स्वतंत्र प्रभात ब्रेकिंग न्यूज़

कौशाम्बी। अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार ने बताया है कि राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग, नई दिल्ली के द्वारा अक्षय तृतीया 30 अप्रैल, 2025 के अवसर पर बाल विवाह को रोके जाने हेतु व्यापक प्रबन्ध किये जाने के निर्देश प्राप्त हुये है, तद्क्रम में आप सभी से अपेक्षा है कि उक्त दिवस को अपने अधिकार क्षेत्र में होने वाले बाल विवाह को रोकने के लिए अपने अधीनस्थों को निर्देशित करने का कष्ट करें, ताकि जनपद में उक्त दिवस को बाल विवाह रूपी सामाजिक कुरीतियों को रोकने में सफल हो सके, यदि इस प्रकार की कोई घटना आपके अधिकार क्षेत्र में घटित होती है तो, इसकी सूचना तत्काल जिला प्रोबेशन अधिकारी मो0-7518024054, अध्यक्ष बाल कल्याण समिति मो0नम्बर-9839746024, संरक्षण अधिकारी 9369844208, एवं चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 पर सूचित करें, ताकि समय रहते बाल-विवाह पर प्रभावी रोकथाम एवं सम्बन्धित के विरूद्ध नियमानुसार दण्डनीय कार्यवाही की जा सके।

अपर जिलाधिकारी ने की सड़क सुरक्षा समिति की बैठक

● बिना फिटनेस के कोई भी वाहन न चलने पाये - अरुण कुमार गोंड

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। अपर जिलाधिकारी अरूण कुमार द्वारा उदयन सभागार में जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में अपर जिलाधिकारी ने थाना सैनी क्षेत्र में भोला चौराहा पर सड़क दुर्घनाओं में हो रहीं मृत्युओं पर चिन्ता व्यक्त करते हुए अधिशासी अभियन्ता, एन0एच0आई0 को एक्सीडेन्ट न हो इसके लिए कार्य योजना तैयार कर कार्यवाही करने के निर्देश दिए। अपर जिलाधिकारी ने ए0आर0टी0ओ0 को निर्देशित किया कि बिना फिटनेस का कोई भी प्राइवेट डग्गामार वाहन सड़क पर न चलने पाये। उन्होंने कहा कि बिना फिटनेस के स्कूली वाहन कदापि संचालित न होने पाये, नहीं तो कड़ी कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। उन्होंने एआरटीओ को निर्देशित करते हुए कहा कि यातायात नियमों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाय।

अपर जिलाधिकारी ने अधिशासी अधिकारी अझुवा को एन0एच0आई0 के बगल में स्थान चिन्हित कर टैक्सी स्टैण्ड बनवाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने एआरटीओ को निर्देशित करते हुए कहा कि जो गाडियों में रिफलेक्टर नहीं लगा है उस पर कडी कार्यवाही करें। उन्होंने ट्राफिक सी0ओ0 को निर्देशत करते हुए कहा कि एक अभियान चलाकर बिना हेलमेट,बिना सीट बेल्ट लगाये हुए पाये जाने पर गाडियों पर कार्यवाही करें। अपर जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी चिन्हित ब्लैक स्पॉटों के पास में जो भी सीएचसी एवं पीएचसी हों, वो हमेशा एलर्ट मोड पर रहें एवं सभी ब्लैक स्पॉटों पर एम्बुलेन्स हमेशा मौजूद रहें। उन्होंने जनपद में सभी ऑटो, टैक्सी, रोडवेज, ट्रक एवं स्कूली वाहनों आदि के ड्राइवरों का फेजवाइज कैम्प लगाकर ऑखों का चेक-अप कराने के निर्देश दियें, जिससे दुर्घटनाओं में कमी लायी जा सकें। इस अवसर पर ए0आर0 टी0ओ0 तारकेश्वर मल्ल, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 संजय कुमार, क्षेत्राधिकारी एवं अधिशासी अभियन्ता पी0 डब्ल्यू0डी0 हरवंश सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

गले नहीं उतर रहा महोली सीतापुर राघवेंद्र बाजपेई पत्रकार हत्याकांड

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर/जनपद में सोमवार को ऑल इंडियन प्रेस जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऐप्जा के चीफ कोऑर्डिनेटर अनुराग शारथी ने पुवायां नगर पालिका सभागार में आयोजित पत्रकारों की एक बैठक को संबोधित किया इस दौरान उन्होंने 29 अप्रैल को संगठन के चेयरमैन रविंद्र मिश्रा के नेतृत्व में सीतापुर कलेक्ट्रेट में होने वाले राष्ट्रीय स्तर के अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन में सम्मिलित होने के लिए पत्रकारों का आवाहन किया, उन्होंने कहा जिस तरह से सीतापुर जनपद के तहसील क्षेत्र महोली से दैनिक जागरण के पत्रकार किसान और ब्राह्मण भाई राघवेंद्र वाजपेई की बीते दिनों हेमपुर ओवर ब्रिज पर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी एक माह से ज्यादा दिनों के बाद पुलिस द्वारा इस हत्याकांड का खुलासा किया गया वह किसी के गले नहीं उतर रहा है पत्रकार के परिवार जनों सहित संपूर्ण जनमानस हताश हैं जैसा कि मृतक राघवेंद्र की पत्नी ने भी वीडियो जारी कर इस खुलासे का विरोध किया है अब ऐप्जा चेयरमैन रविंद्र मिश्रा भगवान परशुराम जयंती पर आगामी 29 अप्रैल 2025 दिन मंगलवार से राघवेंद्र वाजपेई हत्याकांड की सीबीआई जांच पीड़ित परिवार को 50 लाख रुपए आर्थिक राशि और पत्नी को सरकारी नौकरी की मांग को लेकर सीतापुर कलेक्ट्रेट परिसर में अनिश्चितकालीन धरने पर बैठेंगे जिसमें उन्होंने समस्त पत्रकार जगत समस्त किसान संगठन समस्त ब्राह्मण समुदाय समस्त सामाजिक संगठनों एवं समस्त जनता जनार्दन से समर्थन की अपेक्षा की है उन्होंने इस दौरान कहा कि जहां एक ओर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी पत्रकारों की सुरक्षा एवं संरक्षण तथा उनके विकास पर चिंता जताते हुए आला अधिकारियों को आगाह करते रहते हैं वहीं दूसरी ओर आए दिन शासन प्रशासन में कुंडली मारकर बैठे भ्रष्ट अधिकारी पूरे उत्तर प्रदेश में पत्रकारों को अपने कोप भाजन का शिकार बना रहे हैं घटनाओं दुर्घटनाओं तथा फर्जी मुकदमों में फंसा कर कभी-कभी तो हत्या तक करवा कर जनता जनार्दन एवं मीडिया की आवाज दबाने की नाकाम कोशिश करते रहते हैं इसी का नतीजा है राघवेंद्र बाजपेई हत्याकांड राघवेंद्र बाजपेई सीतापुर जनपद के महोली तहसील क्षेत्र से दैनिक जागरण लखनऊ संस्करण के पत्रकार थे समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर उनकी पैनी नजर थी लगातार अपने अखबार के माध्यम से भ्रष्टाचार के कारनामे उजागर करते रहते थे शुरुआती दौर में तहसील प्रशासन के लोगों की इस हत्याकांड में संलिप्तता पाई गई किंतु शासन प्रशासन ने मिलीभगत कर एक माह तक हवा का रुख देखने के उपरांत हवा हवाई खुलासा कर अपना पल्ला झाड़ लिया हत्या होने के बावजूद बावजूद आर्थिक तंगी से जूझ रहे राघवेंद्र वाजपेई के परिवार को आर्थिक सहायता देने में प्रशासन की हीलाहवाली उसकी मंशा पर प्रश्न चिन्ह लगाती है इसी के साथ वह बोले संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रविंद्र मिश्रा ने राघवेंद्र वाजपेई हत्याकांड की सीबीआई जांच 50 लाख रुपए आर्थिक सहायता और पत्नी को सरकारी नौकरी दिलाने के लिए संघर्ष का ऐलान किया है जब तक शासन प्रशासन राघवेंद्र के परिवार को आर्थिक सहायता 50 लाख रुपए पत्नी को सरकारी नौकरी और सीबीआई जांच की संस्कृति नहीं करता तब तक आंदोलन जारी रहेगा कार्यक्रम के दौरान संगठन के जिला अध्यक्ष अरविंद त्रिपाठी, जिला महामंत्री विशनू कनौजिया , महानगर वरिष्ठ उपाध्यक्ष ज्ञान प्रकाश सक्सेना ,पुवायां तहसील अध्यक्ष नीरज मिश्रा , नवीन मिश्रा, नरेंद्र मिश्रा, पवन पांडे ,पारुल मिश्रा ,अनिरुद्ध मिश्रा, रवि पांडे ,अंकित पांडे, सोनू मिश्रा ,अवनीश मिश्रा, आदि पत्रकार मौजूद रहे।

हिंदू युवा संगठन उत्तर प्रदेश का ऐप्जा को समर्थन भारी संख्या में सीतापुर पहुंचेंगे कार्यकर्ता

हिंदू युवा संगठन उत्तर प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष अवनीश मिश्रा ने कार्यक्रम के दौरान ऑल इंडियन जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऐप्जा के चीफ कोऑर्डिनेटर अनुराग शारथी को पत्र सौंप कर समर्थन दिया है उन्होंने कहा प्रदेश के सभी जनपदों से संगठन के कार्यकर्ता 29 अप्रैल को सीतापुर में होने वाले अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन में भाग लेंगे और संगठन पत्रकार राघवेंद्र वाजपेई को न्याय न मिलने तक संघर्ष में साथ देगा।

दवा मंडी लीडर रोड पर चोरो का आतंक पलक झपकते उठा लेगए मोटर साइकिल

प्रयागराज। थाना शाहगंज छेत्र अंतर्गत लीडर रोड पर इन दिनों चोरो का आतंक फैला हुआ है जहाँ दवाओं से भरी पेटिया व्यापारी का झोला गायब हो जाता था वही लीडर रोड पर अब मोटरसाइकिल भी चोरो द्वारा गायब किया जा राहा है ताज़ा मामला लीडर रोड स्थित एक दवा की दूकान पर काम कर रहे कर्मचारी अंशु गुप्ता पुत्र मोहन लाल गुप्ता जो मनोहर दास की बगिया का रहने वाला है रोज की तरह दिनांक 16 4 2025 को अपनी गाड़ी अपाची अपनी दूकान के करीब खड़ी कर के अपने काम में व्यस्त हो गया कुछ देर के बाद जब वह अपनी गाड़ी को लेने आया तो वह गाड़ी वहां पर मौजूद नहीं की । गाड़ी को चोर द्वारा चोरी कर लिया गया जिसकी शिकायत अंशु गुप्ता ने थाना शाहगंज में किया।

बता दे लीडर रोड दवा मंडी में हजारों की तादाद में व्यापारी यहां पर आते हैं और आए दिन किसी न किसी का सामान बैग पैसा यह चोरी हुआ करता था लेकिन अब हद हो गई है यहां पर मोटरसाइकिल खड़ी करना भी धुबर हो गया है पुलिस प्रशासन को इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

सरयू एनक्लेव की RWA की कार्यशैली से सरयू निवासी परेशान, डिप्टी रजिस्ट्रार द्वारा वित्तीय अनियमिताओं की जांच हेतु ऑडिट के आदेश

स्वतंत्र प्रभात

सुशांत गोल्फ सिटी थानांतर्गत स्थित अवध विहार योजना के सरयू एनक्लेव की प्रथम रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन की वित्तीय अनियमिताओं से संबंधित प्राप्त शिकायतों के दृष्टिगत डिप्टी रजिस्ट्रार, फर्म्स सोसाइटीज एवं चिट्स , लखनऊ मंडल अवनीश कुमार सिंह के द्वारा सोसायटी के पंजीकरण वर्ष 2021 से अद्यतन तक RWA के आय व्यय की जांच करते हुए ऑडिट रिपोर्ट शीघ्रातिशीघ्र प्रस्तुत किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। डिप्टी रजिस्ट्रार द्वारा इस कार्य हेतु मेसर्स राम रतन गुप्ता एंड कंपनी, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स को नामित किया गया है। उल्लेखनीय है कि सरयू एनक्लेव की प्रथम RWA की अध्यक्ष मीना सिंह द्वारा एक वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने के बावजूद भी RWA का हस्तांतरण नहीं किया गया है एवं समिति के कोषाध्यक्ष प्रवीण पांडे एवं सचिव तथा अन्य सदस्यों से मतभेद के चलते निवासियों की समस्या निरंतर बढ़ती जा रही है। इसके अतिरिक्त सरयू के फ्लैट धारकों द्वारा पूर्व RWA द्वारा आय व्यय का सही विवरण सार्वजनिक न किए जाने के साथ कार्यवाहक अध्यक्ष द्वारा अन्य RWA सदस्यों की राय को स्थान न देते हुए मनमाने निर्णयों को लेकर रोष व्यक्त किया गया है। इस सम्बन्ध में पूर्व में भी सरयू निवासियों द्वारा विभिन्न फोरम में अपनी शिकायत दर्ज कराई गई है।

यूपी में नक्शा पास कराने की जरूरत खत्म सरकार का आम जनता को बड़ा तोहफा

● उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य के नागरिकों को बड़ी राहत देते हुए भवन निर्माण से जुड़े नियमों में ऐतिहासिक बदलाव किया।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य के नागरिकों को बड़ी राहत देते हुए भवन निर्माण से जुड़े नियमों में ऐतिहासिक बदलाव किया है। 1000 वर्गफीट तक के प्लॉट पर मकान बनाने के लिए नक्शा पास कराने की आवश्यकता नहीं होगी!! इसके साथ ही भ्रष्टाचार और धन उगाही पर भी अंकुश लगाने की दिशा में यह बड़ा कदम माना जा रहा है! मुख्य मंत्री के द्वारा स्वीकृत नए भवन निर्माण एवं विकास उपविधि 2025 के तहत कई जटिल प्रक्रियाएं आसान कर दी गई हैं! आवास विभाग के प्रमुख सचिव पी. गुरु प्रसाद के अनुसार अब 5000 वर्गफीट तक के निर्माण के लिए आर्किटेक्ट का प्रमाण पत्र ही पर्याप्त होगा!

छोटे प्लॉट पर भी बन सकेंगे अपार्टमेंट। पहले जहां अपार्टमेंट निर्माण के लिए 2000 वर्गमीटर का प्लॉट आवश्यक होता था अब 1000 वर्गमीटर में भी इसकी अनुमति मिल सकेगी!! अस्पताल और कमर्शियल बिल्डिंग के लिए 3000 वर्गमीटर का क्षेत्र पर्याप्त होगा!

प्रोफेशनल्स के लिए राहत। नए बायलॉज के अनुसार मकान के 25त्न हिस्से में नर्सरी क्रैच होम स्टे या प्रोफेशनल्स जैसे डॉक्टर,वकील,आर्किटेक्ट और चार्टर्ड अकाउंटेंट्स अपने कार्यालय चला सकेंगे इसके लिए नक्शे में अलग से जिक्र जरूरी नहीं होगा!!

NOC की तय समय सीमा- अब नक्शा पास कराने के लिए विभिन्न विभागों को 7 से 15 दिन के भीतर अनापत्ति प्रमाण पत्र हह्ल्ष्ट देना होगा तय समय में जवाब नहीं मिलने पर वह NOC स्वतःमान्य हो जाएगा!!

कॉमर्शियल गतिविधियों को भी मिली मंजूरी।

24 मीटर या उससे अधिक चौड़ी सड़कों पर रिहायशी इलाकों में दुकान और दफ्तर खोलने की अनुमति दी गई है वहीं इससे कम चौड़ी सड़कों पर डॉक्टर वकील जैसे प्रोफेशनल्स अपने कार्यालय संचालित कर सकेंगे!!

ऊंची इमारतों के लिए खुली छूट।

45 मीटर चौड़ी सड़कों पर अब जितनी ऊंची चाहें उतनी ऊंची इमारतें बनाई जा सकेंगी। फ्लोर एरिया रेशियो स्नत्र को भी 3 गुना तक बढ़ाया गया है जिससे शहरों में ऊंचे भवन निर्माण को बढ़ावा मिलेगा!! यह निर्णय न केवल आम जनता को राहत देगा बल्कि शहरी विकास में पारदर्शिता और गति भी सुनिश्चित करेगा।

सिराथू रेलवे स्टेशन पर किसानों ने चूल्हा जलाकर जताया विरोध, अफसरों में हड़कम्प, दो बड़ी मांगों पर अधिकारियों ने दिया आश्वासन

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। जनपद में सिराथू रेलवे स्टेशन पर रेलवे द्वारा जनता को मिलने वाली सुविधाओं की उपेक्षा और पुरानी मांगों की अनदेखी के खिलाफ भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) के कार्यकर्ताओं ने सोमवार को जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। सर्वप्रथम संगठन ने मंझनपुर कलेक्ट्रेट में डीएम और एसपी से मुलाकात कर अपनी बात रखी, और फिर सीधे सिराथू रेलवे स्टेशन पहुंचकर धरना शुरू कर दिया।किसान इस बार सिर्फ मांगें लेकर नहीं, बल्कि आंदोलन की ठोस तैयारी के साथ पहुंचे थे।

संगठन के जिला अध्यक्ष नुरुल इस्लाम की अगुवाई में कार्यकर्ता स्टेशन परिसर में चूल्हा, बर्तन और राशन के साथ डट गए। जैसे ही धरना स्थल पर चूल्हा जला और रसोई सजने लगी, प्रशासनिक अमले में हड़कंप मच गया।रेलवे अधिकारी, सैनी थाना पुलिस और अतिरिक्त पुलिस बल को मौके पर पहुंच गए। अधिकारियों ने तत्काल मौके की नजाकत को समझा और यूनियन की दो अहम मांगों को मानने का भरोसा दिया।

जिन दो प्रमुख मांगों पर प्रशासन को झुकना पड़ा, वे इस प्रकार हैं-

1. आरक्षण काउंटर पर नियुक्त कर्मचारी को हटाने की मांग, जिसकी दृष्टि कमजोर होने के कारण वह यात्रियों को सही से टिकट नहीं दे पाता। यात्रियों को रोजाना परेशानी का सामना करना पड़ता था।

2. प्लेटफॉर्म संख्या 2-3 से दक्षिण दिशा की ओर नगर पंचायत सिराथू व बस स्टॉप तक जाने वाले रास्ते को सुगम बनाने की मांग, जिससे आम यात्री, बुजुर्ग और महिलाएं आसानी से प्लेटफॉर्म से बाहर निकल सकें।

इन दोनों मांगों को मौके पर मौजूद अधिकारियों ने स्वीकार कर लिया, जिसके बाद किसान यूनियन ने अपना धरना स्थगित कर दिया। हालांकि अध्यक्ष नुरुल इस्लाम ने साफ कहा कि यदि शेष छह मांगों पर भी जल्द कार्यवाही नहीं हुई, तो अगली बार आंदोलन और उग्र होगा। धरना स्थल पर खाना बनता देख यात्रियों और स्थानीय लोगों की भीड़ जमा हो गई। लोगों ने किसानों के इस सधे हुए विरोध की सराहना की। चूल्हा जलाकर प्रदर्शन करना एक ऐसा प्रतीक बन गया, जिसने प्रशासन को वार्ता के लिए बाध्य कर दिया।

"सरायअकिल में 'आरओ घोटाला'- कुछ महीने भी नहीं चला सिस्टम, अब राहगीर बूंद-बूंद को तरस रहे"

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। नगर पंचायत सरायअकिल नगर पंचायत की सीमाओं में प्यासे लोगों की भीड़ दिखना अब आम हो गया है। तपती दोपहर, झुलसाती गर्मी और राहगीरों के सूखे होंठ—ये वो तस्वीरें हैं जो प्रशासन की लापरवाही पर बड़ा सवाल खड़ा कर रही हैं। साल भर पहले नगर पंचायत द्वारा लाखों रुपए खर्च कर लगवाई गई आरओ वाटर मशीनें अब शोपीस बन चुकी हैं।

'कुछ महीने चली, फिर चुप हो गई मशीनें'

स्थानीय लोगों के मुताबिक, नगर पंचायत ने बीते वर्ष सार्वजनिक स्थलों पर प्यास बुझाने के नाम पर आरओ मशीनें लगवाई थीं। लेकिन महज़ कुछ महीनों में ही ये मशीनें खराब हो गई। कहीं बिजली कनेक्शन नहीं, कहीं मेंटेनेंस का अभाव। और अब हालात ये हैं कि राहगीरों को पीने का पानी तक नसीब नहीं हो रहा।

'तपती दोपहर में बूंद-बूंद को तरस रहे लोग'

गर्मी अपने चरम पर है और नगर पंचायत क्षेत्र में कोई वैकल्पिक व्यवस्था तक नहीं की गई। न तो टैंकर से पानी सप्लाई हो रही, न ही कोई मोबाइल वाटर यूनिट चलाई गई।

'शासन की योजनाओं को भ्रष्टाचार ने निगला'

यह सिर्फ पानी का संकट नहीं है, ये सिस्टम के भ्रष्टाचार की कहानी है। आरओ लगाने के नाम पर जिस कंपनी को ठेका दिया गया था, उसकी गुणवत्ता की जांच अब तक नहीं हुई। न ही कोई जवाबदेही तय की गई। नतीजा—जनता त्रस्त और जिम्मेदार चुप हैं।

संक्षिप्त खबरें

केनरा बैंक से निकासी के बाद महिला से 20,500 रुपये की ठगी, बरही पुलिस कर रही है जाँच

बरही, झारखंड- बरही थाना से महज एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित धनबाद रोड बाजार के केनरा बैंक शाखा से रुपये निकाल कर घर लौट रही एक महिला को ठगों ने अपना शिकार बना लिया। ठगों ने महिला से 20,500 रुपये की ठगी कर ली। घटना सोमवार दोपहर करीब 1 बजे की है। खोंडाहार निवासी विधवा देवंती देवी केनरा बैंक से 49,000 रुपये की निकासी की थीं। रुपये गिनने के लिए उन्होंने अपने साथ आए एक बच्चे को कुछ पैसे पकड़ाए। इसी दौरान बैंक में मौजूद एक युवक ने मदद की पेशकश करते हुए बच्चे से पैसे ले लिए और गिनने लगा। कुछ देर बाद युवक ने पैसे बच्चे को लौटा दिए और बैंक से चला गया। लेकिन जब देवंती देवी ने दोबारा रुपये गिने तो केवल 28,500 रुपये ही मिले। 20,500 रुपये कम पाए गए। घटना की जानकारी स्थानीय लोगों द्वारा तुरंत बरही पुलिस को दी गई। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की पूरी जानकारी ली। भुक्तभोगी महिला ने बरही थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई है।थाना प्रभारी सह पुलिस निरीक्षक आभाष कुमार ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। उन्होंने आम लोगों से सतर्क रहने की अपील करते हुए कहा कि किसी भी अनजान व्यक्ति को रुपये गिनने या संभालने के लिए न दें, जागरूकता ही सुरक्षा की कुंजी है।

सड़क दुर्घटना में बाइक सवार दो युवक घायल, रेफर

चंदवा, झारखंड- रांची-चतरा मुख्य मार्ग पर नगर गांव के समीप सड़क दुर्घटना में दो युवक गंभीर रूप घायल हो गए। दोनों की पहचान नगर के ही प्रतीक उरांव व रवि उरांव के रूप में हुई है। स्थानीय लोगों के द्वारा एंबुलेंस की मदद से दोनों घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चंदवा भेजा गया जहां उनका प्राथमिक उपचार कर बेहतर इलाज हेतु रिम्स रेफर कर दिया गया। घटना के संबंध में बताया जाता है कि दोनों युवक एक बाइक पर सवार होकर नगर के मायाबागी स्थित अपने घर लौट रहे थे इसी दौरान अनियंत्रित होकर गिर पड़े और दुर्घटना के शिकार हो गये।

पदाधिकारियों ने रामघाटी गांव में बिरसा हरित ग्राम योजना का किया निरीक्षण

पाकुड़िया/पाकुड़/झारखंड-राज्य सरकार के नीति-निर्देश के आलोक में उपायुक्त पाकुड़ द्वारा बिरसा हरित ग्राम योजना को गति प्रदान करने के क्रम में पाकुड़िया प्रखंड के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्षारोपण हेतु गड्ढा खुदाई और निरीक्षण का कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में 21 अप्रैल को पाकुड़िया प्रखंड अंतर्गत बीच पहाड़ी पंचायत के ग्राम रामघाटी में लाभुक बाहा मरांडी की भूमि का निरीक्षण प्रखंड विकास पदाधिकारी सोमनाथ बनर्जी, सहायक अभियंता रोहित कुमार, कनीय अभियंता लालू रविदास, मुखिया हरिदास टुडू एवं ग्रामीणों की उपस्थिति में किया गया।

स्वच्छता प्रहरियों के कार्यों की सराहना, सम्मान

अलीगढ़। सरसंघ संचालक डॉ मोहन भागवत जी के प्रवास के बाद स्वच्छता में लगे तमाम स्वच्छता प्रहरियों का महाकुंभ की गंगा जली देकर स्वागत किया गया। सभी ने उनके कार्य की सराहना की। कहा गया कि स्वच्छता प्रहरियों ने जिस जिम्मेदारी के साथ कार्य किया है वह अनुकरणीय है। विभाग सह संघचालक ललित कुमार, विभाग प्रचारक गोविंद, प्रांत सेवा प्रमुख मदन लाल, विभाग कार्यवाह योगेश आर्य ने स्वच्छता प्रहरियों की सेवा भावना की सराहना की। कार्यक्रम में अजीत, कन्हैया, सुनील, विक्की, अंकित, विजय, रामबाबू, सचिन दुर्गेश स्वच्छता प्रहरियों का अभिनंदन किया।

मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास एवं 15वें वित्त आयोग पर उपायुक्त ने की समीक्षात्मक बैठक, कार्यों में तेजी लाने का निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

साहेबगंज, झारखंड- समाहरणालय सभागार में उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास (ग्रामीण) तथा 15 वें वित्त आयोग से संबंधित योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में सभी प्रखंडों के बीपीओ, ब्लॉक समन्वयक सहित संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे। बैठक की शुरुआत उपायुक्त ने वित्तीय वर्ष 2024-25 के लक्ष्यों की समीक्षा से की। उन्होंने प्रखंडवार प्रगति की जानकारी लेते हुए सभी प्रखंडों के प्रदर्शन को असंतोषजनक बताया,इस पर नाराजगी जाहिर करते हुए संबंधित अधिकारियों को स्पष्टीकरण समर्पित करने का निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने कहा कि सभी योजनाओं के कार्यों में तेजी लाते हुए लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित की जाए।

मनरेगा से संबंधित समीक्षा के दौरान योजना पूर्णता, एरिया ऑफिसर की सक्रियता, आधार आधारित भुगतान (ABP), 100 मानव दिवस पूरा करने वाले परिवार, पोटो हो खेल मैदान, बिरसा हरित ग्राम योजना, अस्वीकृत लेन-देन, अबुआ आवास में निर्गत मास्टर रोल, एवं लोकपाल द्वारा उठाए गए बिंदुओं पर चर्चा की गई। उपायुक्त ने निर्देश दिया कि अद्यतन स्थिति की जानकारी लेकर सभी लंबित कार्यों को शीघ्रता से पूर्ण किया जाए। प्रधानमंत्री आवास (ग्रामीण) योजना के अंतर्गत PMAY (G) 2.0 सर्वे, "पीएम जन-मन" योजना की भौतिक एवं वित्तीय प्रगति की समीक्षा की गई। साथ ही 2024-25 में स्वीकृत आवासों की प्रथम किस्त एवं अबुआ आवास योजना की प्रगति पर भी चर्चा हुई। उपायुक्त ने स्पष्ट निर्देश दिए कि 30 जुलाई, 2025 तक वित्तीय वर्ष 2023-24 एवं 2024-25 के अंतर्गत सभी आवासों का निर्माण कार्य पूर्ण कर लिया जाए।

वहीं, 15वें वित्त आयोग की समीक्षा में GPDP सर्वे, पंचायत समिति व्यय, ग्राम पंचायत व्यय की अद्यतन स्थिति पर चर्चा हुई। उपायुक्त ने निर्देश दिए कि जिन पंचायतों व प्रखंडों द्वारा अब तक राशि व्यय नहीं की गई है, वे नियमानुसार शत प्रतिशत राशि शीघ्र व्यय करना सुनिश्चित करें। बैठक में उप विकास आयुक्त सतीश चंद्रा, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी चित्रा यादव, जिला पंचायती राज पदाधिकारी अनिल कुमार, अंचलाधिकारी समेत सभी संबंधित अधिकारी मौजूद थे। उपायुक्त ने सभी अधिकारियों से अपेक्षा जताई कि योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाए और आमजन तक योजनाओं का लाभ समयबद्ध तरीके से पहुंचे।

बरही अनुमंडलीय अस्पताल का औचक निरीक्षण, स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के लिए स्टेट टीम ने दिए कई निर्देश

स्टेट रिव्यू मिशन के तहत हुआ निरीक्षण, चिकित्सकों की भारी कमी पर जताई चिंता

स्वतंत्र प्रभात

बरही, झारखंड- स्वास्थ्य सेवाओं एवं सुविधाओं को बेहतर बनाने के उद्देश्य से स्टेट रिव्यू मिशन के तहत सोमवार को बरही अनुमंडलीय अस्पताल का छह सदस्यीय स्टेट टीम ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण दल का नेतृत्व डिप्टी डायरेक्टर सह नोडल ऑफिसर डॉ. पंकज कुमार ने किया। उनके साथ राज्य कार्यक्रम समन्वयक राठौड़ विकास, आईडीएसपी राज्य डाटा प्रबंधक सौरभ कुमार, राज्य नर्सिंग सेल की कार्यक्रम सहायक उषा राय, डाटा सहायक एकता कुमारी तथा यूएनडीपी प्रतिनिधि डॉ. श्वेता झा भी मौजूद थीं। निरीक्षण के दौरान टीम ने अस्पताल की ओपीडी, इमरजेंसी वार्ड, पोस्टमार्टम हाउस, प्रसव कक्ष सहित अन्य महत्वपूर्ण विभागों का जायजा लिया। इस दौरान कई खामियों पर चिंता जताई गई और सुधार के लिए अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए गए। निरीक्षण के बाद डॉ. पंकज कुमार ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा स्वास्थ्य सुविधाओं के संचालन की समीक्षा के तहत यह दौरा किया गया था। उन्होंने कहा कि अस्पताल में मानव संसाधन की भारी कमी है, विशेषकर विशेषज्ञ डॉक्टर जैसे गाइनकॉलजिस्ट और रेडियोलॉजिस्ट की अनुपलब्धता एक गंभीर समस्या है। उन्होंने बताया कि अस्पताल में अल्ट्रासाउंड मशीन उपलब्ध है, लेकिन रेडियोलॉजिस्ट की नियुक्ति नहीं होने के कारण यह सेवा अब तक शुरू नहीं हो सकी है। निरीक्षण टीम ने अस्पताल में बंद पड़ी आरओ मशीन को चालू कराने के साथ ही स्वास्थ्य व्यवस्था को दुरुस्त करने को लेकर कई आवश्यक निर्देश दिए। टीम ने अस्पताल की समग्र स्थिति पर रिपोर्ट तैयार कर उच्च स्तर पर भेजने की बात कही। निरीक्षण के दौरान जिला आरसीएच पदाधिकारी डॉ. कपिलमुनि प्रसाद, डीएस डॉक्टर प्रकाश ज्ञानी, बीपीएम नारायण राम, बैम प्रमोद श्रीवास्तव, बिजेंद्र कुमार, लेखा प्रबंधक राकेश पांडेय, मुकेश कुमार, जिला कार्यक्रम प्रबंधक रविशंकर, मृत्युंजय चौरसिया, कुलदीप कुमार, टीपू सुल्तान, मो शमशाद, मोती कुमार समेत कई स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित थे।

श्री अग्रसेन स्कूल में मना राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस

●कठिन मेहनत बनाती है परीक्षाओं को आसान - बीडीओ

स्वतंत्र प्रभात

भुरकुंडा, झारखंड- राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस के अवसर पर सोमवार को श्री अग्रसेन स्कूल भुरकुंडा में सम्मान कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पतरातू बीडीओ मनोज कुमार गुप्ता ने क्लास 12 के विद्यार्थियों को संबोधित किया। बीडीओ श्री गुप्ता ने कहा कि सिविल सेवा दिवस सिविल सेवकों के लिए नागरिकों के हित में खुद को फिर से समर्पित करने, सार्वजनिक सेवा और कार्य में उत्कृष्टता के लिए अपनी प्रतिबद्धता को दोहराने का अवसर है। सरकारी सेवक नीतियों के क्रियान्वयन और सुशासन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है.श्री गुप्ता ने बच्चों को मोटिवेट करते हुए कहा कि कोई भी परीक्षा आसान नहीं होती है। लेकिन यदि समर्पण भाव से तैयारी करें, तो यह कठिन भी नहीं होती है। आपकी सफलता इस बात पर निर्भर है कि आप अपने लक्ष्य के प्रति कितनी ईमानदारी से मेहनत कर रहे हैं।

बीडीओ ने विद्यार्थियों को यूपीएससी, जेपीएससी, बीपीएससी एवं अन्य परीक्षाओं की तैयारी, इनके सिलेबस, तैयारी के लिए पढ़ाई के घंटे आदि पर चर्चा किया। साथ ही साइंस, आर्ट्स, कॉमर्स के क्षेत्र में कॅरियर की जानकारी दी। स्कूल के निदेशक प्रवीण राजगढ़िया ने कहा कि लोक सेवक सरकार की व्यवस्था की रीढ़ होते हैं। इनके समर्पण से ही सरकार की योजनाएं लाभुकों तक पहुंच पाती हैं। हमें इनके योगदान का हमेशा सम्मान करना चाहिए। इस अवसर पर बच्चों ने बीडीओ श्री गुप्ता से सिविल सेवा से जुड़े कई सवाल भी पूछा। कार्यक्रम के अंत में निदेशक श्री राजगढ़िया ने बीडीओ को मोमेंटो भेंट कर सम्मानित किया।

क्यों मनाया जाता है सिविल सेवा दिवस

बीडीओ श्री गुप्ता ने बच्चों को बताया कि भारत के स्वतंत्र होने के बाद देश के सिविल सेवकों के पहले बैच को सरदार वल्लभ भाई पटेल ने संबोधित किया था। देश के सिविल सेवकों को समर्पित प्रेरक भाषण में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने उन्हें भारत का स्टील फ्रेम कहा था। उसी वक्त सरदार वल्लभ भाई पटेल ने घोषणा किया था कि देश के लिए सिविल सेवकों के योगदान का सम्मान करने के लिए हर साल राष्ट्रीय सिविल सेवा दिवस मनाया जाएगा। तब से 21 अप्रैल को यह दिन हर साल मनाया जाता है।

दनुआ घाटी में लगातार हो रहे सड़क हादसों पर बरही विधायक मनोज यादव ने जताई चिंता, केंद्रीय मंत्री और मुख्यमंत्री को किया ट्वीट

स्वतंत्र प्रभात

चौपारण, झारखंड- हजारीबाग जिले के चौपारण थाना क्षेत्र स्थित दनुआ घाटी में लगातार हो रहे सड़क हादसों ने गंभीर रूप ले लिया है। इन दुर्घटनाओं में लगातार लोगों की जान जा रही है, जिससे क्षेत्र में भय और असुरक्षा का माहौल बना हुआ है। इन घटनाओं को लेकर बरही विधायक मनोज यादव ने सड़क सुरक्षा की अनदेखी और लापरवाही पर चिंता जताते हुए इस मुद्दे को उच्च स्तर पर उठाया है। विधायक मनोज यादव ने इस गंभीर समस्या को लेकर केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन, हजारीबाग के सांसद मनीष जायसवाल और हजारीबाग डीसी को ट्वीट कर मामले में तत्काल हस्तक्षेप और आवश्यक कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने अपने ट्वीट में कहा है कि दनुआ घाटी में हो रहे लगातार सड़क हादसों में आमजन की जान जा रही है और यह सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। विधायक ने कहा कि दनुआ घाटी का क्षेत्र बेहद खतरनाक हो गया है, जहां सड़क की स्थिति और सुरक्षा मानकों की भारी अनदेखी हो रही है। प्रतिदिन एक नया हादसा सामने आ रहा है, जिसमें निर्दोष लोगों की जान चली जाती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस क्षेत्र में अब किसी ठोस समाधान की जरूरत है, ताकि लोगों की जान बचाई जा सके और सड़क को सुरक्षित बनाया जा सके। विधायक श्री यादव ने यह भी बताया कि कई बार स्थानीय प्रशासन को भी इस विषय में सूचित किया गया है, लेकिन अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं निकल पाया है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों और सरकार से मांग की है कि दनुआ घाटी को लेकर एनएचएआई को विचार करने की जरूरत है।

पलियादह सोगलेटोला से नावाडीह जामसोल पीडब्ल्यूडी रोड तक ग्रेड-2 सड़क पूर्णतः क्षतिग्रस्त

वर्षों बाद भी पुनर्निर्माण नहीं होने से ग्रामीणों में रोष

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़िया/पाकुड़/झारखंड- प्रखंड मुख्यालय पाकुड़िया से 8 किलोमीटर दूर पलियादह पंचायत के सोगलेटोला से निर्माणाधीन पीसीसी पथ से नावाडीह, जामसोल पीडब्ल्यूडी पक्की सड़क तक की ग्रेड-2 ग्रामीण सड़क पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी है। इसके चलते ग्रामीणों में गहरी नाराजगी देखी जा रही है। 20 अप्रैल को सोगलेटोला और शिवरात के ग्रामीणों ने प्रेस वार्ता में बताया कि यह स्टोन मेटल सड़क लगभग 20 साल पूर्व बनी थी, परंतु आज तक इसका पुनर्निर्माण नहीं हो पाया है। इसकी वजह से आवागमन में भारी कठिनाई हो रही है। ग्रामीणों ने बताया कि इस नुकीले स्टोन मेटल रोड पर साइकिल, बाइक या अन्य वाहनों से आना-जाना अत्यंत कठिन हो गया है। वहीं, ग्रामीण महिलाओं ने भी आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि इस जर्जर और नुकीली सड़क पर नंगे पांव चलने से पैर कटने का खतरा बना रहता है। वर्षा के दिनों में यह सड़क कीचड़युक्त और बेहद खतरनाक हो जाती है, जिससे बच्चों और बुजुर्गों को भी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

एक सवाल के जवाब में महिलाओं ने गहरी नाराजगी जताते हुए कहा कि चुनाव के समय कई नेता वोट मांगने तो आते हैं, लेकिन वर्षों से इस सड़क की मरम्मत या पुनर्निर्माण को लेकर किसी ने कोई पहल नहीं की। ग्रामीणों ने बताया कि यह पथ सीधे प्रखंड मुख्यालय से जोड़ता है और इसके निर्माण से बैंक, प्रखंड कार्यालय और जिला मुख्यालय तक आसानी से पहुँचा जा सकता है। साथ ही, अगर सड़क अच्छी और पक्की हो जाए तो इसके किनारे छोटे-मोटे व्यवसाय कर ग्रामीण अपना जीविकोपार्जन भी कर सकते हैं। महिलाओं ने राज्य सरकार से मांग की है कि शीघ्र ही इस क्षतिग्रस्त पथ का निर्माण कराया जाए ताकि ग्रामीणों को आवागमन में सुविधा मिल सके।

चलंत लोक अदालत सह विधिक जागरूकता अभियान का आयोजन, ग्रामीणों को दी गई कानून संबंधी जानकारी

●न्याय तक आसान पहुंच, अब छोटे विवादों का समाधान डीएलएसए से संभव- मुरली राणा

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग, झारखंड- झारखंड विधिक सेवा प्राधिकार रांची के तत्वावधान में जिला विधिक सेवा प्राधिकार, हजारीबाग द्वारा चलाए जा रहे चलंत लोक अदालत सह विधिक जागरूकता अभियान के तहत आज चलकुसा प्रखंड मुख्यालय, चलकुसा पंचायत और मास्केडीह पंचायत में विधिक शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य विधिक सहायक (चीफ एलएडीसी) मुरली राणा ने की। उनके साथ अधिकार मित्र विकास कुमार पांडेय भी उपस्थित रहे। दोनों ने ग्रामीणों को उनके विधिक अधिकारों और सरकारी सहायता योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी।

न्याय अब सबके लिए सुलभ और निःशुल्क

मुख्य अतिथि मुरली राणा ने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकार (DLS) एक ऐसी संस्था है, जहां आम लोग अपने छोटे-छोटे विवादों का निःशुल्क समाधान प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने बताया, "अब न्याय पाने के लिए लंबी अदालती प्रक्रियाओं और खर्चीले मामलों की जरूरत नहीं। एक साधारण आवेदन देकर डीएलएसए के माध्यम से त्वरित समाधान पाया जा सकता है।" उन्होंने यह भी जानकारी दी कि अब लोग टोल फ्री नंबर 15100 के माध्यम से घर बैठे निःशुल्क कानूनी सलाह प्राप्त कर सकते हैं। यह सेवा उन लोगों के लिए वरदान है, जो न्यायिक सहायता के लिए दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने के कारण असहाय महसूस करते हैं।

सामाजिक मुद्दों पर भी दी गई जागरूकता

अधिकार मित्र विकास कुमार पांडेय ने बाल विवाह, भ्रूण हत्या, नशीले पदार्थों का सेवन जैसे ज्वलंत सामाजिक मुद्दों पर भी ग्रामीणों को जागरूक किया। उन्होंने इन समस्याओं से होने वाले दुष्परिणामों पर विस्तार से चर्चा की और बचाव के उपाय भी बताए।

बड़ी संख्या में ग्रामीणों की भागीदारी

इस जागरूकता अभियान में बड़ी संख्या में महिला-पुरुषों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम में अंजली कुमारी, नवाब फैजल सहित कई गणमान्य ग्रामीण शामिल हुए। सभी ने विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान की सराहना की और कहा कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों में कानून के प्रति विश्वास और जानकारी दोनों बढ़ेगी। इस अभियान का उद्देश्य न केवल न्याय को जन-जन तक पहुंचाना है, बल्कि सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए लोगों को सशक्त और जागरूक बनाना भी है।

हजारीबाग में 11 से 15 मई तक होगा राष्ट्रीय स्तर का ऑल इंडिया चेस टूर्नामेंट 1000 से अधिक प्रतिभागियों की भागीदारी, 4.5 लाख की पुरस्कार राशि

●हजारीबाग में शतरंज का महाकुंभ, खिलाड़ियों के लिए बस सेवा से लेकर आवास तक की संपूर्ण व्यवस्था

मन, मस्तिष्क और मुकाबले का संगम, हजारीबाग में होगा 5 दिवसीय ऑल इंडिया चेस टूर्नामेंट

हजारीबाग में शतरंज को जन-जन तक पहुँचाना हमारा सपना है, यह टूर्नामेंट केवल प्रतिस्पर्धा नहीं, एक क्रांति है मानसिक खेलों के प्रति - करण जायसवाल

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग, झारखंड- हजारीबाग के खेल इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जुड़ने जा रहा है। हजारीबाग डिस्टिक चेस एसोसिएशन के तत्वावधान में ऑल इंडिया चेस फेडरेशन एवं ऑल झारखंड चेस एसोसिएशन की अनुमति से 11 मई से 15 मई 2025 तक एक भव्य ऑल इंडिया शतरंज टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता हजारीबाग के प्रतिष्ठित एंजल हाई स्कूल परिसर में आयोजित की जाएगी, जो अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि मानी जा रही है। इस कार्यक्रम को लेकर सोमवार को एक विशेष प्रेस वार्ता टूर्नामेंट के डायरेक्टर करण जायसवाल,अध्यक्ष विजय कुमार सिंह,सचिव मनमीत अकेला ने संयुक्त रूप से प्रेस वार्ता किया। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कार्यक्रम के डायरेक्टर करण जायसवाल ने बताया की इस टूर्नामेंट में देशभर से 1000 से भी अधिक प्रतिभागियों के भाग लेने की संभावना है, जिसमें 500 स्थानीय खिलाड़ी एवं 500 अन्य राज्यों से आए हुए प्रतिभागी सम्मिलित होंगे। यह आयोजन न केवल हजारीबाग बल्कि पूरे झारखंड राज्य के लिए गौरवपूर्ण क्षण है। इस पांच दिवसीय शतरंज महोत्सव के लिए 4,50,000/- (चार लाख पचास हजार रुपये) की पुरस्कार राशि निर्धारित की गई है। जिसमें प्रथम स्थान 71,000, द्वितीय स्थान 40,000, तृतीय स्थान 25,000,चतुर्थ स्थान 15,000, पाँचवाँ स्थान 11,000 छठा से 10वाँ स्थान 8,000 प्रति विजेता 11वाँ से 15वाँ स्थान 6,500 प्रति विजेता, 16वाँ से 25वाँ स्थान 5,500 प्रति विजेता, 26वाँ से 35वाँ स्थान 3,500 प्रति विजेता को दिया जाएगा। प्रतियोगिता नौ राउंड्स में आयोजित की जाएगी, जिसमें हर राउंड के लिए तकनीकी व्यवस्था एवं निर्णायकों की पूरी टीम तैनात की जाएगी। इस टूर्नामेंट के लिए देशभर से आने वाले प्रतिभागियों के ठहरने की व्यवस्था पुलिस अकादमी हजारीबाग में की गई है, जहाँ उन्हें सुरक्षित और सुविधाजनक रात्रि विश्राम की सुविधा दी जाएगी। पुलिस अकादमी से कार्यक्रम स्थल तक प्रतिदिन बस सेवा उपलब्ध कराई जाएगी ताकि प्रतिभागियों को कोई असुविधा न हो। रजिस्ट्रेशन शुल्क बिहार एवं झारखंड के स्कूली बच्चे से 1000 रु, बिहार एवं झारखंड के वरिष्ठ खिलाड़ी (सीनियर) से1200 रु अन्य राज्यों के स्कूली

बच्चे 1200 रु, अन्य राज्यों के वरिष्ठ खिलाड़ी 1500 रु लिया जा रहा है। प्रतिभागी 10 मई से ही हजारीबाग पहुँचना शुरू करेंगे।

छोटे शहर में बड़ा सपना, आयोजन समिति की मेहनत

साथ ही प्रेस वार्ता के दौरान टूर्नामेंट के निदेशक करण जायसवाल ने बताया हजारीबाग में शतरंज की समझ रखने वालों की संख्या सीमित है, लेकिन इस आयोजन से लोगों में खेल के प्रति रुचि बढ़ेगी। हम चाहते हैं कि यह आयोजन हर साल एनुअल फंक्शन के रूप में मनाया जाए और हजारीबाग शतरंज के मानचित्र पर एक प्रमुख स्थान बनाए। इस प्रतियोगिता के माध्यम से हम हजारीबाग के युवाओं में बौद्धिक विकास और प्रतिस्पर्धा की भावना को प्रेरित करना चाहते हैं। यह आयोजन लगभग 35 से 40 लाख रुपए के खर्च में किया जा रहा है। रांची को छोड़कर झारखंड में इस स्तर के टूर्नामेंट की कल्पना कर पाना भी कठिन है, लेकिन हमारी टीम ने इसे साकार कर दिखाया। संघ के अध्यक्ष विजय कुमार सिंह ने कहा की यह टूर्नामेंट केवल एक खेल आयोजन नहीं, बल्कि हजारीबाग के युवाओं के लिए एक नई दिशा और पहचान का माध्यम है। आज जब डिजिटल युग में बच्चों की एकाग्रता भंग हो रही है, ऐसे समय में शतरंज जैसा खेल उन्हें मानसिक अनुशासन, रणनीतिक सोच और धैर्य का पाठ पढ़ाता है। हम चाहते हैं कि हजारीबाग जैसे अपेक्षाकृत छोटे शहरों से भी अंतरराष्ट्रीय स्तर के शतरंज खिलाड़ी निकलें और यह आयोजन उसी स्वप्न को साकार करने की शुरुआत है। संघ के सचिव मनमीत अकेला ने कहा, इस आयोजन को सफल बनाने के लिए एक छोटी सी टीम दिन-रात मेहनत कर रही है। हम चाहते हैं कि हजारीबाग में चेस को फ्रेंडली स्पोर्ट्स के रूप में देखा जाए और बच्चे डिजिटल युग में भी मानसिक विकास के लिए इस खेल को अपनाएं। मौके पर कोषाध्यक्ष राजन कुमार, संयुक्त सचिव बृजेश कुमार, एवं सदस्य सुमन जायसवाल सहित कई लोग प्रेस वार्ता में मौजूद रहे। यह आयोजन न केवल एक प्रतियोगिता है, बल्कि हजारीबाग के गौरव, सामूहिक संकल्प और युवा प्रतिभाओं के लिए एक मंच है। यह राष्ट्रीय स्तर का आयोजन हजारीबाग की पहचान को नये आयाम देगा।

संक्षिप्त खबरें

जिला अध्यक्ष अजय कुमार सिंह के नेतृत्व में सफाई कर्मियों ने किया प्रदर्शन

जौनपुर केराकत। उत्तर प्रदेश चतुर्थ श्रेणी राज्य कर्मचारी महासंघ के आवाहन पर सोमवार को दोपहर दो बजे खण्ड विकास कार्यालय पर सफाई कर्मियों ने बाह में काली पट्टी बांध कर प्रदर्शन करते हुये जमकर नारेबाजी किया। गौरतलब है कि जिला अध्यक्ष अजय कुमार सिंह के नेतृत्व में सफाई कर्मियों ने ब्लाक पर उपस्थित होकर प्रदर्शन को अंजाम दिया। इस दौरान पुरानी पेंशन बहाली, निजीकरण का विरोध और चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की नियुक्ति समेत अनेक मांगो की चर्चा करते नजर आये। इस अवसर पर अशोक कुमार, श्रीकेश त्रिपाठी, मनोज कुमार, प्रवीन कुमार, सुरेश कुमार, दीना नाथ, ज्ञानचंद, मधुबला मौर्या, रीना गुप्ता, आशा पाल, निर्मला देवी, समेत दर्जनों सफाई कर्मी उपस्थित रही।

मनरेगा में धांधली की शिकायत, जांच संग होगी रिकवरी

सिद्धार्थनगर। बढ़नी विकास खंड की ग्राम पंचायतों में मनरेगा योजना के तहत कराए जा रहे कार्यों में धांधली की किए जाने की शिकायत ग्रामीणों ने उच्चधिकारियों से की है। कहीं फोटो से फोटो खींचकर श्रमिकों की हाजिरी लगाई जा रही है तो कहीं एक ही फोटो को कई बार पोर्टल पर अपलोड कर हाजिरी लगाने का काम हो रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि श्रमिकों की संख्या में भी जमकर धांधली की जा रही है। ग्रामीणों का आरोप है कि इन दिनों मनरेगा योजना में जिम्मेदारों की साठगांठ से जमकर बंदरबांट कर रहे हैं। ग्राम पंचायत खेरी शीतल प्रसाद में मनरेगा योजना के तहत कराए जा रहे विकास कार्यों में श्रमिकों की हाजिरी में हेराफेरी की जा रही है। यह भी आरोप है कि मनरेगा पोर्टल पर हाजिरी हेतु श्रमिकों की फोटो को फोटो से अपलोड किया जा रहा है तो कहीं एक ही श्रमिकों की फोटो को कई मास्टर रोल पर भी अपलोड कर फर्जीवाड़ा किया गया है। इसका मनरेगा पोर्टल खुद गवाही देता नजर आ रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि माह अप्रैल में मनरेगा पोर्टल पर लगाई गई फोटो को बार बार मनरेगा पोर्टल पर अपलोड कर दी जा रही है। खंड विकास अधिकार यशोवर्धन सिंह ने कहा कि जांच करवाएंगे। जांच में यदि आरोप सही पाए गए तो रिकवरी होगी।

शाखा व्यायामशाला नहीं, व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है: अरूण

आरएसएस माधव नगर ने किया शारीरिक प्रधान कार्यक्रम

मथुरा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ माधव नगर मथुरा महानगर ने बी एस ए डिग्री कॉलेज में शारीरिक प्रधान कार्यक्रम किया। जिसमें अजय शर्मा नगर कार्यवाह ने दंड संचलन , शिवकुमार ने गण समता, श्रीओम ने सामूहिक समता व योग व सूरज ने नियुद्ध, मुख्य शिक्षक अजय , एकल गीत पुंडरीकाक्ष व प्रार्थना रविन्द्र ने कराई। विभाग प्रचारक अरुण ने कहा था कि यह जो यह शारीरिक प्रदर्शन आज हुआ है यह केवल एक दिन की मेहनत से नहीं बल्कि निरंतर शाखा जाने के अभ्यास से यह संभव हो पाया है। डॉ. हेडगेवार ने कहा था कि शहरी क्षेत्र में 3 प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्र में 1 प्रतिशत परसेंट जब स्वयंसेवक हो जाएंगे तो संघ का काम पूर्ण हो जाएगा। संघ समाज मय हो जाएगा। इसलिए यह शताब्दी वर्ष चल रहा है। इसमें हम सभी को अधिक से अधिक हिंदू समाज को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जोड़ना होगा। संघ की शाखा केवल व्यायाम शाला नहीं है बल्कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। कार्यक्रम के दौरान डॉ. वीरेंद्र मिश्रा, राकेश, सचिन, सीपी सिंह, प्रदीप, शैलेंद्र, दुर्गा प्रसाद, पवन, विजय, अशोक, रामगोपाल, हरिश्चंद्र, नीरज, भगवती प्रसाद, सुभाष, बिपिन, मनोज सैनी आदि अनेक कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग किया।

रिकॉर्ड के अभाव में लौटे मुख्य कोषाधिकारी, महिला अस्पताल में टेंडर घोटाले की जांच पर सवाल

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- जिला महिला चिकित्सालय में टेंडर प्रक्रिया में कथित अनियमितताओं की जांच के सिलसिले में पहुंचे मुख्य कोषाधिकारी उमा शंकर को शनिवार को खाली हाथ लौटना पड़ा। अस्पताल के सीएमएस द्वारा जरूरी दस्तावेज उपलब्ध न कराए जाने के कारण वे मौके पर कोई जांच नहीं कर सके। गौरतलब है कि अस्पताल में विभिन्न कार्यों के लिए टेंडर प्रक्रिया अपनाई गई थी, जिसमें नियमों की अनदेखी किए जाने के आरोप सामने आए हैं। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि टेंडर प्रक्रिया में वित्त अधिकारी की भागीदारी नहीं सुनिश्चित की गई, जो नियमानुसार आवश्यक है। इसके साथ ही कई अन्य प्रशासनिक खामियों की भी बात उजागर हुई है।

शिकायत की गंभीरता को देखते हुए जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र ने तीन सदस्यीय जांच समिति का गठन किया है। इस समिति में मुख्य कोषाधिकारी उमा शंकर, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. लक्ष्मी सिंह और जिला पुरुष चिकित्सालय के सीएमएस डॉ. के.के राय को शामिल किया गया है। शनिवार को मुख्य कोषाधिकारी जब जांच के उद्देश्य से महिला चिकित्सालय पहुंचे तो सीएमएस की ओर से कोई भी संबंधित दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराए गए। इस पर उन्होंने नाराजगी जताते हुए कहा कि रिकॉर्ड की अनुपलब्धता के कारण जांच आगे नहीं बढ़ सकी। हालांकि उन्हें रिकॉर्ड उपलब्ध कराने के लिए समय दिया गया है। उमा शंकर ने जानकारी दी कि जल्द ही समिति के अन्य सदस्यों के साथ पुनः अस्पताल जाकर जांच प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाएगा। इस मामले में जिला प्रशासन की सख्ती और पारदर्शिता की कोशिशों के बीच अस्पताल प्रशासन का यह रवैया कई सवाल खड़े कर रहा है। जांच के निष्कर्षों पर अब जिले की निगाहें टिकी है, जिससे यह तय हो सके कि स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही किस हद तक लागू हो रही है।

तेज़ रफ़्तार स्कूटी सवार ने स्कूली छात्र को मारी टक्कर, स्कूल प्रशासन ने दबाया मामला, वीडियो वायरल

जौनपुर। नगर कोतवाली थाना क्षेत्र के अंतर्गत अटाला मस्जिद के सामने स्थित जौनपुर पब्लिक स्कूल के बाहर उस समय हड़कंप मच गया जब एक तेज़ रफ़्तार स्कूटी सवार ने एक स्कूली छात्र को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे के बाद स्कूटी चालक मौके से फरार हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, छात्र स्कूल से बाहर निकल रहा था तभी तेज़ गति से आ रही स्कूटी ने उसे सामने से टक्कर मार दी। घायल छात्र को मौके पर मौजूद लोगों ने उठाया और स्कूल के अंदर ले गए। इस घटना के बावजूद स्कूल प्रशासन ने न तो पुलिस को सूचना दी और न ही प्राथमिक उपचार के बाद छात्र को अस्पताल पहुंचाया गया। बल्कि प्रशासन ने मामले को दबाने की कोशिश की। हैरानी की बात यह है कि इस पूरे घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें टक्कर का दृश्य साफ तौर पर देखा जा सकता है। वीडियो के वायरल होने के बाद लोगों में आक्रोश फैल गया है और प्रशासनिक निष्क्रियता पर सवाल उठने लगे हैं। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि आरोपी स्कूटी चालक की पहचान कर उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए, साथ ही स्कूल प्रशासन पर भी लापरवाही बरतने के आरोप में जांच होनी चाहिए।

वार्ड 17 में मानक विहीन नाली निर्माण पर हंगामा, घटिया सामग्री के उपयोग से नागरिकों में रोष

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। नगर क्षेत्र के वार्ड नंबर 17 रौज़ा अर्जन अंतर्गत मोहल्ला अर्जन बड़ी मस्जिद में इन दिनों नाली निर्माण कार्य को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। स्थानीय नागरिकों का आरोप है कि नाली निर्माण में निम्न गुणवत्ता की ईंटों और सामग्री का इस्तेमाल किया जा रहा है, जिससे निर्माण की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल उठने लगे हैं। ज्ञात हो कि इस क्षेत्र में तकरीबन एक दशक बाद सड़क निर्माण का कार्य शुरू होने जा रहा है, लेकिन साथ ही नाली जैसे अहम ढांचे में लापरवाही बरतना स्थानीय लोगों की चिंता का कारण बन गया है। लोगों का कहना है कि यदि अभी निर्माण में गुणवत्ता नहीं सुनिश्चित की गई तो आने वाले वर्षों में यह नाली क्षतिग्रस्त हो जाएगी और नागरिकों को जलनिकासी की समस्या का सामना करना पड़ेगा। स्थानीय नागरिकों ने नगर प्रशासन से अपील की है कि निर्माण कार्य की जांच कराते हुए दोषी ठेकेदारों पर कार्रवाई की जाए और निर्माण में मानक सामग्री का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए।

कचरा की बाल्टी रखकर फोटो खींचने का नगरवासियों ने किया विरोध, वीडियों सोशल मीडिया पर हुआ वायरल

● सभासद ने लगाया गंभीर आरोप नगर पंचायत अध्यक्ष के भाई के कहने पर सफाई कर्मी व कचरा उठाने वाली गाड़ी को रामपुर वार्ड से हटाया गया।

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- जिले का नगर पंचायत कजगांव एक बार फिर अपने फर्जी कारनामों के चलते बना चर्चा का विषय बन गया है। बता दें कि उक्त नगर पंचायत के वार्ड संख्या दो रामपुर में कचरे की बाल्टी रखकर उसका फोटो खीचें जाने का नगर वासियों से जमकर किया विरोध,जिसका विडियों सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है।

उक्त वायरल वीडियो बारे में जब वार्ड सभासद अरविन्द प्रजापति से बात किया गया तो उन्होंने बताया कि नगर पंचायत के कर्मचारी कचरा के लिए दो बाल्टी लेकर वार्ड में आये थे और वहीं दोनों बाल्टी लोगों के घरों के सामने रख-रख कर बाल्टी वितरण की खानापूर्ति हेतु फोटो खींच रहे थे। नगर पंचायत कचगांव के इस कारनामें का नगर वासियों ने जमकर विरोध करने लगे। जब इसकी सूचना हम सभासद को हुई तो हम भी मौके पर पहुंच गये। जब नगर पंचायत कर्मियों से पूछा गया कि वे लोगों के घरों के सामने एक ही रख-रख फोटो क्यों खींच रहे हैं, तो उन सभी कर्मचारियों ने कहा कि पूर्व में सभी लोगों को बाल्टी दिया गया है परन्तु लोग उसमें घरों के बाहर कचरा रखने की बजाय अपने निजी घरेलू कार्यो में उसका उपयोग कर रहे हैं। पूर्व में बाल्टी वितरण की बात सुनते ही नगरवासी व सभासद पंचायत कर्मियों पर भड़क उठे और कहा कि नगर पंचायत कर्मी सरासर झूठ बोल रहे हैं। इस वार्ड के किसी भी नगरवासी को आज तक एक भी बाल्टी नहीं वितरित की गई है। बाल्टी वितरण की बात पूरी तरह झूठ है। फर्जी कचरा बाल्टी की फोटो खिचने के विवाद का वीडियों सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। सभासद ने यह बताया कि नगर पंचायत अध्यक्ष का भाई

दबंग किस्म का व्यक्ति है।उसने नगर पंचायत के ईओ और चेयरमैन से कहकर वार्ड संख्या दो रामपुर के सभी सफाई कर्मी को वहां से हटवा दिया है। यहां तक कि कचरा ढोने वाली गाड़ी को भी इस वार्ड से हटवा दिया गया है। अधिकारियों व कर्मचारियों से शिकायत करने के बावजूद कोई सुनने वाला नहीं है। सभासद ने कहा कि नगर पंचायत अध्यक्ष का जो भाई है वह हमेशा इस वार्ड में तरह-तरह का व्यवधान उत्पन्न करता रहता है। यहां सरकार की मंशा व नगरीय स्वच्छता मिशन के विपरीत कार्य किया जा रहा है।

चित्र गुप्त निगम वंशज संगठन लख़नऊ द्वारा होली मिलन समारोह मनाया गया

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। चित्र गुप्त निगम वंशज संगठन लख़नऊ द्वारा होली मिलन समारोह किंग्स वेंकट हाल राजाजी पुरम लखनऊ मे मनाया गया जिसका शुभारम्भ भगवान श्री चित्रगुप्त जी की प्रतिमा का माल्यार्पण मुख्य अतिथि उपविजेता लखनऊ पश्चिम अंजनी कुमार श्रीवास्तव जी ने किया तत्पश्चात चित्रांश प्रगति पत्रिका का विमोचन भी मुख्य अतिथि वह कार्यक्रम अध्यक्ष भारत सक्सेना द्वारा किया गया. मुख्य अतिथि जी ने कायस्थओ की राजनीत मे भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे भारत सक्सेना ने कायस्थो की एकता पर बल देने की बात कही विशिष्ट अतिथि संजीव कुमार वर्मा अध्यक्ष अखिलभारतीय चित्रांश महासभा ने अपने सम्बोधन मे कहा हम कायस्थो क़ो एक होकर सनातन धर्म को मजबूत करना होगा कार्यक्रम मे मेधावी छात्र छात्राओं स्मृति चिन्ह दे कर सम्मानित किया गया कार्यक्रम मे रंगा रंग सांस्कृतिक कार्यक्रम बच्चों द्वारा प्रस्तुति किया गया संगठनके सचिव दीपक निगम जी ने संगठन की प्रगति के कार्य को प्रस्तुत किया कार्यक्रम के अंत मे संगठन क़े अध्यक्ष कृष्ण किशोर निगम ने सभी कायस्थ बंधुओ से आपस मे रोटी बेटी क़े रिश्ते कायम करने की अपील की एवं कायस्थों की राजनीति मे भागेदारी बढ़ाने की मांग सरकार से की कार्यक्रम मे आये हुए सभी महानुभावो को धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम का समापन किया.कार्यक्रम मे विशिष्ट अतिथि अनूप कमल सक्सेना गज्जी निगम अम्बुज निगम उपाध्यक्ष सुरेन्द्र निगम उपाध्यक्ष, संरक्षक शशि निगम, ओमेश्वर निगम, मुकेश निगम, अशोक कुमार श्रीवास्तव, प्रदीप निगम कोषाध्यक्ष, दीपक श्रीवास्तव उपसचिव, धीरजनिगम, बबलू निगम, सौरभ निगम प्रियंका निगम आदि लोग उपस्थित रहे।

बदला मौसम, चली गर्म हवाएं, विद्यालयों में समय बदलने की मांग

● हीटवेव व मौसम की प्रतिकूलता से बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़ रहे दुष्प्रभाव और हो रहे बीमार

बेसिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों का समय परिवर्तन प्रातः 7:30 बजे से 12:00 बजे किये जाने का ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ और जूनियर शिक्षक संघ ने डीएम को सौंपा ज्ञापन।

स्वतंत्र प्रभात

रायबरेली। मौसम का मिजाज बदलने और हवाओं का रुख बदलने से आज से हीटवेव चल गई है। मौसम में आए परिवर्तन से दोपहर में निकलना मुश्किल हो गया है। मौसम का मिजाज बदलने पर सोमवार को शैक्षिक संगठनों ने डीएम को ज्ञापन सौंपकर समय परिवर्तन की मांग उठाई है। विद्यालयों में समय बदलने की मांग को लेकर राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ और जूनियर शिक्षक संघ ने डीएम को सौंपा ज्ञापन। राष्ट्रीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिलाध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह ने बताया कि जनपद में इस समय प्रातः आठ बजे से अपराह्न दो बजे तक विद्यालय संचालित हैं, जबकि विद्यालयों में विद्युत कटौती प्रातः नौ बजे से हो रही है। अपराहन 11:30 बजे के पश्चात तापमान 40 डिग्री से ऊपर तथा अपराह्न 12:30 बजे से दो बजे का तापमान 42-44 डिग्री या अधिक हो जाता है। वीरेन्द्र चौधरी, संजय सिंह और हरिमोहन ने कहा कि जनपद में अपराह्न दो बजे विद्यालय बंद होने पर विद्यालयों के बच्चे 01 से 04 किलोमीटर तक भीषण गर्मी में पैदल अपने घरों को जाते हैं, जिससे विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चे आये दिन बीमार पड़ रहे हैं। बेसिक शिक्षा विभाग के अधिकांश विद्यालय दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित होने से मौसम की प्रतिकूलता भीषण गर्मी व हीटवेव से छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संगठन मंत्री मधुकर सिंह ने बताया कि जनपद में मौसम की प्रतिकूलता भीषण गर्मी व हीटवेव से बचाव हेतु छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के दृष्टिगत

बेसिक शिक्षा विभाग के विद्यालय का संचालन प्रातः 07:30 से 12:00 बजे तक समय परिवर्तन हेतु आवश्यक कार्यवाही कराने का कष्ट करें। उत्तर प्रदेशीय जूनियर हाई स्कूल शिक्षक संघ जनपद रायबरेली के प्रतिनिधि मंडल ने विद्यालयों के संचालन का समय प्रातः 7:30 से 12:00 बजे तक किए जाने हेतु मांग पत्र जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी रायबरेली को सौंपा। प्रतिनिधिमंडल में जिला अध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप यादव महामंत्री सियाराम सोनकर उपाध्यक्ष विक्रमादित्य सिंह कोषाध्यक्ष शिव शरण सिंह जगतपुर के मंत्री महेश कश्यप ,रवि श्रीवास्तव, नगर अध्यक्ष आशीष तिवारी अमावां अध्यक्ष सुरेश सिंह , उमाशंकर चौधरी, दीपक कुमार, संजीव श्रीवास्तव, शिवकुमार सिंह,मेराज अहमद आदि उपस्थित रहे।

48 घंटे बाद भी जफराबाद पुलिस के हाथ खाली, लूटकांड का नहीं हुआ खुलासा

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर, जफराबाद। जफराबाद थाना क्षेत्र अंतर्गत बीते बृहस्पतिवार की रात हुए पिकअप मैक्स लूटकांड को लेकर पुलिस अब तक खाली हाथ है। लूट की वारदात को अंजाम दिए 48 घंटे से अधिक का समय बीत चुका है, लेकिन स्कॉर्पियो सवार बदमाशों और लूटे गए वाहन का अब तक कोई सुराग नहीं लग पाया है। पुलिस की विफलता से जनमानस में आक्रोश है, वहीं आला अधिकारियों की चुप्पी भी कई सवाल खड़े कर रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, जफराबाद कस्बे के बाईपास पर अज्ञात स्कॉर्पियो सवार बदमाशों ने एक पिकअप मैक्स वाहन को लूट लिया और मौके से फरार हो गए। वारदात के बाद क्षेत्र में हड़कंप मच गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए जिले के एक वरिष्ठ अधिकारी ने स्पष्ट निर्देश दिए थे कि घटना का खुलासा 24 घंटे के भीतर किया जाए, अन्यथा संबंधित अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

पुलिस पर उठ रहे सवाल- हालांकि 24 घंटे तो दूर, 48 घंटे बीतने के बाद भी पुलिस के हाथ खाली हैं। न बदमाशों का कोई सुराग है और न ही लूटे गए वाहन का कोई पता चल पाया है। स्थानीय पत्रकारों ने दावा किया है कि थाना प्रभारी जफराबाद को ऊंचे राजनीतिक और प्रशासनिक स्तर पर संरक्षण प्राप्त है, जिसके चलते उन पर कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है।

पुलिस की कार्यशैली पर उठी उंगलियां

इस घटना ने न केवल पुलिस की तत्परता पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि आमजन का भरोसा भी डगमगाया है। घटनास्थल से लेकर जांच प्रक्रिया तक, हर कदम पर पुलिस की निष्क्रियता और दिशाहीनता साफ नजर आ रही है।

क्या केवल चेतावनी देकर शांत हो जाएंगे अधिकारी?

लूटकांड के बाद यह अपेक्षा थी कि जिले के जिम्मेदार अधिकारी त्वरित कार्रवाई करते हुए दोषियों को गिरफ्तार करेंगे, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ नतीजे शून्य रहे हैं।

सवाल यह उठता है कि क्या उच्च अधिकारियों की चेतावनी सिर्फ औपचारिक थी? क्या जफराबाद थाना क्षेत्र में अपराधियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि वे पुलिस से दो कदम आगे चल रहे हैं?

जनता कर रही है जवाब का इंतजार

स्थानीय जनता का कहना है कि यदि इसी तरह अपराधियों के हौसले बढ़ते रहे और पुलिस यूं ही खाली हाथ रही, तो क्षेत्र में अपराधियों का राज हो जाएगा। लोग अब यह जानना चाहते हैं कि आखिर जिले के आला अधिकारी कब तक "अवसर" देते रहेंगे और कब लूटकांड के दोषियों को सलाखों के पीछे पहुंचाया जाएगा।

चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय में कर्मचारियों की समस्याएं बनीं आंदोलन की जड़

● पूरे प्रदेश में उग्र प्रदर्शन की चेतावनी, कर्मचारी बोले- अब और बर्दाश्त नहीं

चित्रकूट। चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कर्मचारियों की अनदेखी अब आंदोलन की शक्ल अख्तियार कर चुकी है। विश्वविद्यालय प्रशासन की बेरुखी और समस्याओं की लगातार अनदेखी से नाराज कर्मचारियों का सब्र का बांध टूटता जा रहा है। इसी के विरोध में 61 दिवसीय विश्वविद्यालय परिसर में क्रमिक भूख हड़ताल जारी है, जो अब प्रदेशव्यापी आंदोलन की ओर बढ़ता नजर आ रहा है। मध्य प्रदेश गैर शिक्षक विश्वविद्यालय महासंघ ने कुलपति को भेजे पत्र में साफ कहा है कि ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को न तो नियमित वेतन मिल रहा है, न ही पीएफ और पेंशन जैसी मूलभूत सुविधाएं मुहैया कराई जा रही हैं। इससे कर्मचारियों के सामने आर्थिक संकट उत्पन्न हो गया है। सोमवार को कर्मचारियों ने विश्वविद्यालय परिसर में दो मिनट का मौन रखकर प्रशासन की 'दिवंगत आत्मा' के लिए प्रतीकात्मक प्रार्थना की। इस मौन के माध्यम से उन्होंने विश्वविद्यालय प्रशासन की संवेदनहीनता और शोषणकारी नीतियों पर सवाल उठाए। कर्मचारियों ने कहा कि यह सिर्फ विरोध नहीं, बल्कि न्याय की मांग है। संयुक्त कर्मचारी संघ के अध्यक्ष गुरु प्रकाश शुक्ला, संजय शुक्ला और शिव कुमार को विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा निलंबित कर दिया गया है। कर्मचारियों का कहना है कि यह निर्णय दमनकारी है और इससे आंदोलन की आग और तेज होगी। अब कर्मचारी विचार कर रहे हैं कि अपने घर की महिलाओं को भी क्रमिक अनशन में शामिल किया जाए, ताकि संघर्ष की आंच और व्यापक हो सके।

गैर शिक्षक महासंघ ने चेतावनी दी है कि

अगर शीघ्र समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों में भी आंदोलन शुरू किया जाएगा और सरकार के सामने यह मसला प्रमुखता से उठाया जाएगा। महासंघ ने स्पष्ट किया है कि अब कर्मचारियों का शोषण और नहीं झेला जाएगा। अब तक विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से कोई ठोस आश्वासन या संवाद की पहल नहीं हुई है। इससे कर्मचारियों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। सवाल यह है कि क्या शासन और प्रशासन समय रहते ठोस कदम उठाएंगे, या यह आंदोलन प्रदेशभर में उग्र रूप ले लेगा?

भगवान परशुराम की मूर्ति स्थापित करने पर की गयी चर्चा

सिराथू कौशाम्बी। जनपद के विधानसभा सिराथू तहसील के अन्तर्गत आने वाले ग्राम पंचायत बरातफारीक में भगवान परशुराम की मूर्ति स्थापित करने पर गोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें भगवान परशुराम की मूर्ति स्थापित करने से पहले तस्वीर पर माल्यार्पण कर सभी लोगों ने पूजा-पाठ कर उनके विषय में अपने-अपने विचार विस्तार से रखे व मूर्ति स्थापित करने पर चर्चा की गयी जिसमें सभी लोगों ने मूर्ति स्थापित करने पर अपनी सहमति जताई आयोजन में मुख्य रूप से राजनारायण शुक्ल,विष्णु कुमार शुक्ल,श्रवण कुमार शुक्ल,कृष्ण कुमार शुक्ल पत्रकार महेन्द्र कुमार शुक्ल,कोटेदार कुलदीप शुक्ल,विकास शुक्ल,प्रदीप त्रिपाठी,नवनीत शुक्ल,ध्यानचन्द पाण्डेय,इन्द्रजीत सिंह भास्कर शुक्ल अभिषेक शुक्ला, रत्नाकर शुक्ल अतुल शुक्ला,अभय शुक्ल सहित बहुत से लोग उपस्थित रहे।

आनंद मिश्रा द्वारा संकल्पित पांचवी श्रीमद् भागवत का हुआ शुभारंभ

स्वतंत्र प्रभात

महराजगंज/रायबरेली। क्षेत्र के जिहवा गांव निवासी आनंद मिश्रा द्वारा संकल्पित पांचवी श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन शिवगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत (भवानी गढ़) देहली गांव में सोमवार को भव्य कलश यात्रा के साथ श्रीमद् भागवत अमृत कथा का शुभारंभ हुआ। सैकड़ों की संख्या में महिलाओं और पुरुषों व बच्चों ने भाग लिया। सभी ने सिर पर कलश रखकर गांव सहित आस पास के मुख्य मार्गो से होते हुए देवालयों में पहुंची जहां सभी ने मंदिरों में माथा टेका वहीं भक्ति भजनों की धुन पर श्रद्धालु जमकर थिरके।

बता दें कि आनंद मिश्रा द्वारा यह पांचवी श्रीमद् भागवत कथा है, जिसका शुभारंभ सोमवार को कलश यात्रा के साथ विभिन्न मंदिर देवालयों से होते हुए कलश यात्रा पुनः कथा स्थल पर आकर समाप्त हुई। इस दौरान कथा व्यास पंडित वागीश रामचंद्र दास ने कलश यात्रा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए

कहा कि, कलश में देवताओं का वास होता है। और कलश यात्रा को शुभता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है, तथा सिर पर कलश धारण करने से धरा सिद्ध होती है, और आत्मा पवित्र हो जाती है। इस मौके पर यज्ञशाला प्रमुख आचार्य पंडित योगेंद्र त्रिपाठी, परिचायक अमरेश शुक्ला, आकाश मिश्रा, मुख्य यजमान कालिका प्रसाद मिश्रा सपत्नीक श्रीमती राजेश्वरी मिश्रा सहित, सुमित मिश्रा,रुद्रेश मिश्रा, पंकज मिश्रा, रामानुज मिश्रा, कनिक मिश्रा, अमित मिश्रा, आकाश मिश्रा, विकाश मिश्रा, कृष्ण मिश्रा, हर्षित मिश्रा, अरुण तिवारी, रागेन्द्र सिंह, रामू त्यागी सहित बड़ी तादात में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

बीती रात दर्दनाक हादसे में 20 वर्षीय युवक की मौत, छाया मातम

चित्रकूट। कर्वी-पहाड़ी मार्ग पर बीती रात एक तेज रफ्तार अज्ञात ऑटो ने बाइक सवार युवक को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे 20 वर्षीय रोहित की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। हादसे में उसका साथी संदीप गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद प्रयागराज रेफर किया गया है। जानकारी के मुताबिक, रोहित (उम्र लगभग 20 वर्ष), पुत्र स्व. गोरेलाल, निवासी सीतापुर बस स्टैंड के पास का रहने वाला था। वह किसी निमंत्रण कार्यक्रम से लौट रहा था। जैसे ही वह पहाड़ी थाना क्षेत्र के पास पहुँचा, तभी सामने से आ रही एक अज्ञात ऑटो ने उनकी बाइक में जबरदस्त टक्कर मार दी। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों युवक सड़क पर दूर जा गिरे। स्थानीय लोगों ने तत्काल पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी, लेकिन तब तक रोहित की सांसें थम चुकी थीं। वहीं, घायल संदीप की स्थिति गंभीर देखते हुए उसे प्राथमिक उपचार के बाद प्रयागराज रेफर कर दिया गया। मृतक रोहित, राजू कुशवाहा (पत्रकार) का चचेरा भाई था। परिवार में दो भाई और दो बहनें हैं। पिता की मौत लगभग 7-8 साल पहले हो चुकी थी। रोहित बेहद होनहार और अपने परिवार की उम्मीदों का केंद्र था। उसकी असमय मृत्यु से पूरे सीतापुर में शोक की लहर दौड़ गई है। घटना के बाद परिवार में कोहराम मच गया। मां-बेहद बेसुध हालत में हैं। ग्रामीणों और शुभचिंतकों ने परिजनों को ढांढस बंधाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और अज्ञात ऑटो चालक की तलाश जारी है। रोहित की मौत से सीतापुर में हर आंख नम है। मोहल्ले के लोग बताते हैं कि वह बेहद विनम्र और मददगार युवक था। हर काम में आगे रहता था। लोगों को आज भी यकीन नहीं हो रहा कि वह अब इस दुनिया में नहीं रहा। पुलिस प्रशासन से लोगों ने मांग की है कि जल्द से जल्द आरोपी ऑटो चालक को पकड़ा जाए और पीड़ित परिवार को न्याय दिलाया जाए।

शादी करने के लिए प्रेमिका पहुंची प्रेमी के घर गांव में मचा हड़कंप, पुलिस को दी तहरीर

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। उसका बाजार थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी 22 वर्षीय युवती के साथ इसी थानाक्षेत्र के युवक द्वारा शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का मामला प्रकाश में आया है। युवती ने जब शादी के लिए दबाव बनाया तो उक्त युवक ने शादी से इंकार कर दिया। इसकी शिकायत युवती ने उसका बाजार थाना पर की है, पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ केस दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। युवती ने दिए तहरीर में आरोप लगाया है कि इसी थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी ने पहले उसे प्रेम जाल में फंसाया, फिर शादी करने का झांसा देकर शारीरिक संबंध बनाने लगा, इसी बीच युवती गर्भवती हो गई। जब युवती ने उससे गर्भ ठहरने की बात बताई तो उसने उसे बातों से बहला फुसलाकर उसका गर्भपात करा दिया। स्वस्थ होने के बाद युवती ने फिर से शादी के लिए दबाव बनाने लगी, लेकिन वह टालमटोल करता रहा। शुक्रवार को जब युवती को पता चला कि उसकी शादी की बात कहीं और चल रही है, तो वह उसके गांव पहुंचकर शादी के लिए दबाव बनाने लगी। लेकिन वह और उसके परिजन शादी के लिए राजी नही हुए। थक हार कर वह थाने पहुंची और अपनी आपबीती बताई। इस संबंध में एसओ हरेकृष्ण उपाध्याय ने बताया कि युवती की तहरीर के मुताबिक मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। आरोपी के खिलाफ जांच की जा रही है, विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

ट्रैफिक पुलिस ने ई-रिक्शा चालकों को दी ज़रुरी सूचना

अपना रजिस्ट्रेशन कराएं व निर्धारित रुट के लिए क्यू आर कोड प्राप्त करें, और असुविधा से बचें।

कानपुर। कमिश्नरेट ट्रैफिक पुलिस द्वारा कानपुर के ई-रिक्शा/ई-ऑटो चालकों के लिए ज़रूरी सूचना जारी की गई है। सहायक पुलिस आयुक्त (ट्रैफिक) कृष्णकांत यादव द्वारा जानकारी दी गई कि ट्रैफिक पुलिस व नगर निगम द्वारा दिनांक 21.04.2025 से रजिस्ट्रेशन कैंप शुरू किए गए हैं। रजिस्ट्रेशन के साथ मिलेगा क्यूआर कोड और तय होगा आपका निर्धारित रूट। कैंप के स्थान हैं 1.ज़ोन-2- नगर निगम कार्यालय, ट्रैफिक पुलिस लाइन, थाना छावनी, गुजंन टॉकीज परिसर, 2.ज़ोन-4- नगर निगम हेड ऑफिस, GIC ग्राउंड, 3.ज़ोन-5- नगर निगम ऑफिस, थाना बाबू थाना, बर्रा थाना, थाना अरमापुर आदि। ई रिक्शा मालिक/चालक साथ में लाएं ये दस्तावेज ड्राइविंग लाइसेंस (DL), रजिस्ट्रेशन की कॉपी, बीमा, फिटनेस सर्टिफिकेट, आधार कार्ड, मोबाइल नंबर चालक और मालिक अलग हैं तो दोनों की उपस्थिति ज़रूरी है एवं ई-रिक्शा / ई-ऑटो साथ लाना अनिवार्य है। सभी चालक कृपया समय पर रजिस्ट्रेशन करवाकर व्यवस्था में सहयोग करें।

जूही पुलिस ने वारंटी को किया गिरफ्तार

कानपुर। थाना जूही पुलिस ने एक वारण्टी अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। थाना प्रभारी के नेतृत्व में चलाये जा रहे अपराध रोकथाम व अपराधियों की धर पकड़ अभियान के दौरान दिनांक 20 अप्रैल को वारण्टी अभियुक्त मोहम्मद आसिफ उर्फ आशिक पुत्र अब्दुल रफीक निवासी 83/17 पान वाले के पीछे जूही नहरिया थाना जूही कानपुर नगर उम्र 28 को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

डीसीपी साउथ ने कहा ! शिकायतों के निस्तारण में नहीं हो देरी

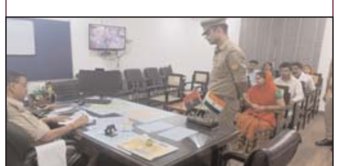

कानपुर। आज दिनांक 21.04.2025 को पुलिस उपायुक्त दक्षिण दीपेंद्र नाथ चौधरी द्वारा अपने कार्यालय पर जन-सुनवाई की। जन-सुनवाई के दौरान आमजन की समस्याओं को सुना और उनके समाधान हेतु संबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए जन शिकायतों को प्राथमिकता के आधार पर सुना गया और संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि वे इन समस्याओं को समयबद्ध तरीके से हल करें। शिकायतों के निस्तारण में देरी न हो, इसके लिए संबंधित पुलिसकर्मियों को निर्देशित किया गया कि वे त्वरित कार्रवाई करें और शिकायतकर्ता को समाधान की जानकारी दें। आगंतुकों और पीड़ितों से सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाए और बैठने के लिए उचित व्यवस्था की जाए। सभी फरियादियों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक और धैर्यपूर्वक सुना जाए व शीघ्र निस्तारण किया जाए । स्थानीय स्तर पर बार-बार आने वाली समस्याओं को प्राथमिकता से निपटाने को कहा गया ।

हाई वोल्टेज का तार लटकने के कारण दुर्घटना की संभावना

प्रतापगढ़। खेतों में हाई वोल्टेज विद्युत तार लटकने के कारण अक्सर दुर्घटना की संभावना बनी रहती है। ढीले तार जब आपस में टकराते हैं तो उनसे चिंगारी निकलती है और अक्सर गेहूं की फसलों में विद्युत तारों से निकली चिंगारी के कारण कई स्थानों पर आग लग चुकी है। पीड़ित द्वारा अब उसके मुआवजा देने की मांग की जा रही है।ऐसा ही मामला बाबा बेलखरनाथ धाम विकासखंड के नेवादा गांव में भी है, जहां के निवासी विनोद कुमार गुप्ता ने कई बार विभागीय अधिकारियों से शिकायत की किउनके गांव में 11000 वोल्टेज का विद्युत तार बिल्कुल लटक रहा है और किसी भी समय दुर्घटना हो सकती है,लेकिन कार्यवाही न होने पर उनके नेतृत्व में गांव के कई लोगों ने जिलाधिकारी से शिकायत करके खेतों में लटक रहे तारों को कसवाने जाने की गुहार लगाई है।

सेवानिवृत्त कर्मचारियों के सभी देयकों का भुगतान समय से कराना सुनिश्चित करें-सभापति

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश विधान परिषद की वित्तीय एवं प्रशासकीय विलंब समिति की बैठक सभापति पवन कुमार सिंह की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में आयोजित की गई,जिसमें प्रतापगढ़ व फतेहपुर की समीक्षा की गयी। बैठक में उत्तर प्रदेश विधान परिषद की वित्तीय एवं प्रशासकीय विलंब समिति के सदस्य उमेश द्विवेदी सहित विधायक सदर राजेन्द्र कुमार मौर्य, विधायक बाबागंज विनोद सरोज, जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी, पुलिस अधीक्षक डा0 अनिल कुमार, मुख्य राजस्व अधिकारी अजय तिवारी व जनपद के जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। समिति द्वारा बैठक के दौरान सभी समस्त कार्यालय में जनवरी 2019 से 31 दिसम्बर 2022 के मध्य सेवानिवृत्त कार्मिकों से संबंधित पेंशन, ग्रेच्युटी व अन्य देयकों के भुगतान की स्थिति, विभागों में मृतक आश्रित के मामले विगत 03 वर्षो से लम्बित तथा मृतक आश्रित सेवायोजित किए जाने की संख्या, जीपीएफ के भुगतान की स्थिति,वृद्धावस्था-विधवा पेंशन के मामले विगत 03 वर्षो से लंबित प्रकरण, किसानों के विगत 03 वर्षो से प्रतिकर का भुगतान न किया जाना, बिजली-पानी के एक वर्ष से लम्बित मामले, भवनों के मानचित्र की स्वीकृति तथा भूमि सिलिंग सम्बन्धित प्रमाण जारी किये जाने के सम्बन्ध में मामले विगत एक वर्ष से अधिक लम्बित आदि के संबंध में समीक्षा की गयी और शीघ्र भुगतान के लिए निर्देश दिया गया। बैठक का संचालन परियोजना निदेशक डीआरडीए दयाराम यादव द्वारा किया गया।अन्य विभागों के लम्बित प्रकरणों पर निर्देशित किया गया कि शैक्षिक योग्यता के आधार पर सेवायोजित किया जाय। जीपीएफ भुगतान में कुल 45 प्रकरण थे जिसमें से 44 का भुगतान कर दिया गया था।नजारत विभाग, गृह विभाग में मृतक कार्मिकों के आश्रितों को सेवायोजन के लिए लंबित 14 मामलों में सभापति ने निर्देशित किया गया कि लम्बित प्रकरणों पर समय रहते निस्तारण कराया जा सके। डिप्टी आरएमओ,डीएफओ व जिला विद्यालय निरीक्षक मुख्यालय पर तलब,वन विभाग के प्रभागीय निदेशक सामाजिक वानिकी को सभापति द्वारा कड़ी नाराजगी व्यक्त की गयी और डीएफओ के विरूद्ध कार्रवाई के लिये शासन को पत्र प्रेषित करने का निर्देश दिया गया। आईटीआई के नोडल प्राचार्य,पर्यटन अधिकारी के अनुपस्थित होने पर कारण बताओ नोटिस जारी करने का निर्देश दिया गया।

समीक्षा के दौरान मृतक आश्रितों को शैक्षिक योग्यता के आधार पर नियुक्ति,सेवानिवृत्त कर्मचारियों के सभी देयकों का भुगतान समय से कराना सुनिश्चित करें।अन्त में जिलाधिकारी ने कहा कि प्राप्त दिशा निर्देश एवं मार्गदर्शन दिये गये है उसका सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा अक्षरशः अनुपालन कराया जायेगा। सभापति पवन कुमार सिंह द्वारा विकास भावन परिसर में 05 दिव्यांगजनों को ट्राइसाइकिल पर बैठाकर माला पहनाकर उन्हें हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया।

कपिल द्विवेदी की वार्षिकी पर कांग्रेसियों द्वारा दी गई श्रद्धांजलि

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। कांग्रेस कार्यालय पर पूर्व शहर अध्यक्ष स्व.कपिल द्विवेदी के वार्षिकी के अवसर पर उनके चित्र पर माला पहनाकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष डॉ.नीरज त्रिपाठी एवम संचालन नगर अध्यक्ष इरफान अली ने किया।जिला अध्यक्ष डॉ.नीरज त्रिपाठी ने कहा कि स्व.कपिल द्विवेदी एक क्रान्तिकारी नेता थे। अपने कार्यकर्ताओं का कार्य अधिकारियों से मिलजुल कर कराना बखूबी जानते थे।स्वभाव सरल,सहज के साथ साथ बहुत ही मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे।संचालन कर रहे नगर अध्यक्ष इरफान अली ने कहा कि स्व.कपिल द्विवेदी कांग्रेस के सच्चे सिपाही थे,हमेशा कांग्रेस के लिए जिए,कांग्रेस के लिए लड़े और कांग्रेस में ही रहते हुए स्वर्ग लोक चले गए।इस अवसर पर मुख्य रूप से कांग्रेस सेवादल के जिला अध्यक्ष महेन्द्र शुक्ला, कांग्रेस कोषाध्यक्ष वेदान्त तिवारी, महिला कांग्रेस अध्यक्ष सरोज कश्यप, यश द्विवेदी, अनुसूचित जाति विभाग के जिला अध्यक्ष सुरेश कुमार सरोज, जिला सचिव अभय प्रताप सिंह, धरमराज सिंह,यूथ कांग्रेस के प्रदेश सचिव मो.हुजैफ, श्याम शंकर तिवारी, एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष शुभम मिश्रा, इमरान खान, प्रदीप यादव, संजय इश्तियाक, बेलाल अहमद, राम रतन तिवारी, मो.साहिल, मो.वसीम, राधेश्याम दुबे व रवि प्रताप सिंह ने सम्बोधित किया।

रायल गार्डन में लगी आग को दमकल ने सूझबूझ से बुझाया

कानपुर। आज दिनांक 21.04.25 को रॉयल गार्डन टाटमिल चौराहा में आग लग गई। इसकी सूचना पर त्वरित कार्यवाही करते हुए एफएस मीरपुर, किदवई नगर की यूनिट अतिशीघ्र घटनास्थल पहुंची एवं अल्प समय में आग को पूर्ण रूप से बुझा दिया गया, घटना में कोई जनहानि नहीं हुई।

उपजिलाधिकारी मुसाफिरखाना द्वारा मंगौली गेहूं क्रय केंद्र का किया गया और औचक निरीक्षण

●गेहूं खरीद में तेजी लाने के लिए दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

अमेठी।उपजिलाधिकारी मुसाफिरखाना अभिनव कनौजिया द्वारा उत्तर प्रदेश कोऑपरेटिव यूनियन लिमिटेड मंगौली गेहूं क्रय केंद्र का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय केंद्र प्रभारी राजेश कुमार सिंह उपस्थित मिले, गेहूं क्रय केंद्र पर कुल 650 कुंतल 04 किसानों से खरीद किया गया था, खरीद में तेजी लाने के निर्देश केंद्र प्रभारियों को दिए गए साथ ही स्टाक रजिस्टर में अंकन पूर्ण नहीं था जिसे तत्काल पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया गया। इसके साथ ही खरीद में किसानों से संपर्क कर तेजी लाने के निर्देश केंद्र प्रभारी को दिए गए।

इंस्पेक्टर प्रदीप सिंह की अगुवाई में टीम मोहित राणा ने पकड़ा शातिर चोर अमन चुर्री , माल भी बरामद

स्वतंत्र प्रभात

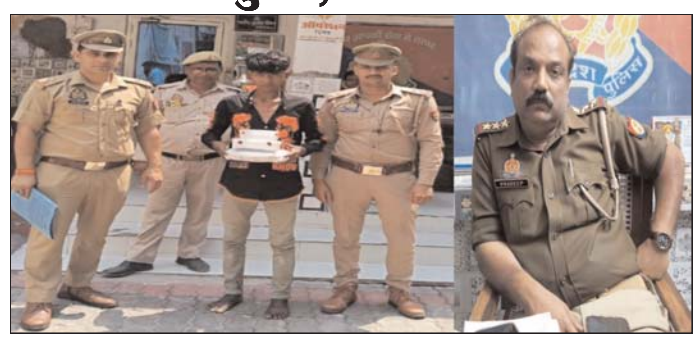

कानपुर। गोविंद नगर क्षेत्र में अपराधियों के खिलाफ पुलिस का सफल अभियान लगातार जारी है ,जिसके क्रम में एक शातिर चोर को भी माल समेत गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की गई। प्राप्त जानकारी के मुताबिक पुलिस आयुक्त एवं पुलिस उपायुक्त दक्षिण के निर्देशन व अपर पुलिस उपायुक्त दक्षिण तथा सहायक पुलिस आयुक्त बाबूपुरवा के कुशल पर्यवेक्षण में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में यह सफलता अपने अब तक के कार्यकाल में छोटी बड़ी सभी घटनाओं के सटीक अनावरण के साथ ही कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही और पीड़ितों की हर संभव सहायता में भी लगातार जुटे रहने वाले गोविंद नगर के प्रभारी निरीक्षक प्रदीप कुमार सिंह के कुशल निर्देशन में मिल्क बोर्ड के चौकी प्रभारी मोहित कुमार राणा की टीम को मिली। चोरी के दर्ज मुकदमे के मामले में पुलिस इस शातिर चोर अमन उर्फ चुर्री पुत्र हाकिम सिंह उर्फ पिंटू ठेकेदार निवासी बसावान पुर्वा ठठिया अहेर जनपद कन्नौज हाल पता बर्रा 04 थाना बर्रा की तलाश लगातार कर रही थी। इस अभियुक्त के कब्जे से चोरी हुआ माल एक अदद मोबाइल हाइलाइटर बेबी क्रीम, बेबी पाउडर, ऑय लाइनर, कंघा तथा मोतियों की माला चैन आदि भी बारामद की गई है। पुलिस अब उसके साथियों की भी तलाश कर रही है।

पारिवारिक कलह से तंग होकर व्यक्ति ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दी, बेटियों से लड़ाई होकर निकला था घर से

बदहवास पत्नी व बेटियों को किसी तरह घर वालों ने सम्हाला

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। काकादेव थाना क्षेत्र के अंतर्गत पारिवारिक कलह के बाद एक अधेड़ ने ट्रेन के आगे कूदकर जान देदी। काकादेव पुलिस ने लावारिश में शव को पोस्टमार्टम हाउस भेजा था, लेकिन सोमवार सुबह परिवार के लोग घर वापस नहीं लौटने पर काकादेव थाने में गुमशुदगी दर्ज कराने पहुंचे। तब पता चला कि लापता नहीं हुए, बल्कि ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी है। इसके बाद पोस्टमार्टम हाउस में पहुंचकर शव की शिनाख्त की है। थाने में गुमशुदगी दर्ज कराने पहुंचे तब हुई सुसाइड की जानकारी पांडु नगर नहर पटरी किनारे बस्ती में रहने वाले राजकुमार सोनकर (50) प्राइवेट नौकरी करते थे। घर में पत्नी ममता और दो बेटियां डॉली व मुस्कान हैं। पत्नी ममता ने बताया कि रविवार रात को किसी बात को लेकर उनसे और बेटियों से कहासुनी हो गई थी। इसी बात को लेकर विवाद बढ़ गया और वह सुसाइड करने की धमकी देकर घर से निकल गए थे, लेकिन काफी तलाश के बाद भी उनका कुछ पता नहीं चला। परिवार के लोग रात भर नजदीकी और रिश्तेदारों के यहां उनकी तलाश में जुटे रहे। इसके बाद भी नहीं मिलने पर सोमवार सुबह काकादेव थाने पहुंचे थे। पत्नी ममता और बेटियां काकादेव थाने पहुंची तो उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। थाने में उनका पर्स और दस्तावेजों से प्राथमिक पहचान की। इसके बाद पोस्टमार्टम हाउस में शव देखते ही पत्नी और बेटियां बेहाल हो गई। परिवार के लोगों ने किसी तरह बेटियों को संभाला।

कोतवाली पट्टी में टेंपो व ई-रिक्शा चालकों के साथ की गई बैठक में दिए सख्त निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। टाउन एरिया पट्टी कस्बे में जाम की समस्या से निजात दिलाने के लिए पट्टी कोतवाल द्वारा टेंपो व ई- रिक्शा चालकों के साथ रविवार को कोतवाली में करीब दो बजे एक बैठक की गई। कस्बे में मनमानी ढंग से ई-रिक्शा सड़क पर खड़ा कर सवारी तलाशने के झाम में जाम की समस्या बनी रहती है। बैठक में दौरान कोतवाल अवन कुमार दीक्षित ने कहा कि कोई भी टेंपो व ई-रिक्शा चालक अपने वाहन काली सड़क पर नहीं खड़ा करेगा। सवारी उतारते, पैसा लेते या सवारी बैठाए हुए कोई भी टेंपो व ई रिक्शा चालक अपना वाहन सड़क पर खड़ा किया हुआ पाया गया तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। सड़क पर वाहन रोककर खड़ा न करें।सड़क पर वाहन चलते हुए ही नजर आएं। सड़क के किनारे खड़ा न करके यदि प्रशासन का सहयोग करेंगे तो किसी के द्वारा परेशान नहीं किया जायेगा।काली सड़क पर खड़ा किया हुआ वाहन पाया गया तो पुलिसिया कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा। कोतवाली में मौजूद लगभग 30 से 35 ई-रिक्शा व टेंपो चालकों ने बनाए गए नियम का पालन करने का आश्वासन दिया। कस्बे में सबसे ज्यादा जाम व आवागमन की समस्या रामराज इण्टर कालेज और डिग्री कॉलेज के सामने रहती है।वहां सड़क के दोनों तरफ काली सड़क तक गृहस्थी की दुकानें मनमानी ढंग से लगाई जाती हैं। किसी यात्री द्वारा जाम की परेशानी की बात कर एतराज करने पर दुकानदारों द्वारा दुर्व्यवहार करने के साथ मारपीट पर उतार आते हैं। चर्चा है कि वहां के स्थानीय दुकानदारों को नगर क्षेत्र के चेयरमैन का पड़ोसी होने के कारण वरदहस्त प्राप्त है। बैठक में श्याम तिवारी,राजू सरोज, मोहम्मद मुकीम, इलियास सहित 30-35 की रिक्शा व टेंपो चालक मौजूद रहे।

डीएम ने आईजीआरएस मुख्यमंत्री हेल्पलाइन की मानीटरिंग हेतु कन्ट्रोल रूम का किया उद्घाटन

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। आम जनमानस की शिकायतों का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्वक निस्तारण शासन की शीर्ष प्राथमिकताओं में से है, ऐसे में बड़ी संख्या में प्राप्त होने वाले आईजीआरएस,मुख्यमंत्री हेल्पलाइन सन्दर्भो व सीएम डैशबोर्ड की मानीटरिंग हेतु जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने कैम्प कार्यालय में बनाये गये कन्ट्रोल रूम का फीता काटकर उद्घाटन किया। कन्ट्रोल रूम के मानीटरिंग हेतु डीएम ने निर्धारित दिवसों में अधिकारियों को नामित किया है। उन्होने सोमवार व मंगलवार हेतु अपर उप जिलाधिकारी (प्रथम) को, बुद्धवार व वृहस्पतिवार हेतु अपर उप जिलाधिकारी (द्वितीय) को, शुक्रवार व शनिवार हेतु अपर उप जिलाधिकारी न्यायिक सदर को तथा रविवार हेतु उपजिलाधिकारी सदर को नामित किया है। नामित अधिकारी अंकित दिवसों पर न्यायालय अवधि के उपरान्त कन्ट्रोल रूम में उपस्थित रहकर प्राप्त सन्दर्भो का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण एवं फीडबैक तथा अन्य कन्ट्रोल रूम से संचालित होने वाली समस्त प्रकार के कार्यो की मानीटरिंग करेगें और प्रतिदिन सायंकाल को प्रगति से मुख्य राजस्व अधिकारी (प्रभारी अधिकारी आईजीआरएस) के माध्यम से डीएम को अवगत करायेगें। इसके अतिरिक्त कन्ट्रोल रूम में ग्राम विकास अधिकारी (स0क0) हरिशिव पटेल व आकांक्षा पाण्डेय, ग्राम विकास अधिकारी उमाकान्त तथा लेखपाल सतीष गुप्ता को भी तैनात किया गया है। डीएम ने इस दौरान कन्ट्रोल रूम में लगाये गये कम्प्यूटर सिस्टम व कार्यप्रणाली का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर मुख्य राजस्व अधिकारी अजय तिवारी, ई-डिस्ट्रिक्ट मैनेजर पुष्पेन्द्र व कैम्प कार्यालय के कर्मचारी उपस्थित रहे।

अमेठी से जिला संवाददाता सुशील कुमार मिश्रा की रिपोर्ट

मनीराम ऑटो सेल्स होंडा एजेंसी का हुआ भव्य उद्घाटन

● एजेंसी मालिक विजय गुप्ता की माता ने फीता काटकर किया शुभारंभ

राजनीतिक हस्तियों के साथ क्षेत्र के मानिंद व्यक्ति रहे मौजूद

स्वतंत्र प्रभात

शुकुल बाजार अमेठी। मनीराम ऑटो सेल्स होंडा एजेंसी का भव्य उद्घाटन हुआ। एजेंसी मालिक विजय गुप्ता की माता जी ने फीता काटकर एजेंसी का उद्घाटन किया। एजेंसी मालिक ने बताया कि होंडा कंपनी की सभी दो पहिया वाहन बिक्री के लिए एजेंसी पर उपलब्ध रहेंगी ,उन्होंने बताया कि ग्राहकों को कम से कम दामों में जो कंपनी का रेट रहेगा गाड़ी उपलब्ध कराई जाएंगी, साथ ही साथ फाइनेंस की सुविधा एजेंसी पर दी जाएगी, ग्राहकों को तय समय पर सभी पेपर उपलब्ध कराए जाएंगे तथा गुणवत्तापूर्ण ढंग से सर्विसिंग की सुविधा होगी, कुशल मैकेनिकों द्वारा तथा अत्याधुनिक मशीनों द्वारा गाड़ियों की सर्विस की जाएगी। ग्राहकों को ज्यादा से ज्यादा सुविधा उपलब्ध कराना प्राथमिकता रहेगी, बताते चलें मध्यम वर्गीय परिवार से ताल्लुकात रखने वाले लालता गुप्ता ने अपने बल पर शुकुल बाजार कस्बे में व्यापार का एक मजबूत ढांचा तैयार किया है, आज मनीराम के नाम से शुकुल बाजार कस्बे में कई प्रतिष्ठान है और ग्राहकों को उच्च गुणवत्ता की सुविधा मुहैया करा रहे हैं। कभी एक छोटे से मीठा की दुकान से शुरुआत करने वाला यह परिवार आज मनीराम ट्रेडर्स, काव्य ट्रेडिंग कंपनी, लालता प्रसाद किराना स्टोर सहित अन्य कई प्रतिष्ठान चला रहा है। और बेहतर सुविधा ग्राहकों को उपलब्ध करा रहा है, कस्बे के प्रतिष्ठित व्यापारी होने के चलते धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सेदारी निभा रहा है। इसी कड़ी में मनीराम ऑटो सेल्स के नाम से होंडा मोटरसाइकिल की एजेंसी का भी भव्य उद्घाटन हुआ एजेंसी मालिक लालता गुप्ता के भाई अमन गुप्ता, विजय शंकर गुप्ता, प्रशांत गुप्ता, ध्रुव गुप्ता उर्फ डब्लू, रिंकू गुप्ता, पंकज गुप्ता द्वारा अतिथियों का विशेष सत्कार किया गया। उद्घाटन के दौरान प्रमुख रूप से भाजपा जिला उपाध्यक्ष गिरीश चंद्र शुक्ला, उद्योगपति एवं वरिष्ठ भाजपा नेता महेंद्र विजय सिंह, शिवली प्रधान प्रतिनिधि रविंद्र सिंह, पूर्व प्रमुख प्रतिनिधि इस्तिखार अहमद, कृष्ण चंद्र रामचंद्र इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य राजेंद्र पांडे, पत्रकार सुशील कुमार मिश्रा, बद्री तिवारी सहित कई राजनीतिक हस्तियां एवं क्षेत्र के मानिंद व्यक्ति तथा शुकुल बाजार कस्बे के सैकड़ो व्यापारी एवं गुप्ता परिवार के सभी सदस्य मौजूद रहे।

हरिनाम संकीर्तन से भक्तिमय हुआ पाकुड़िया का माहौल

●बंगला बैशाख में हुआ पारंपरिक 'धूल लोट 'का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़िया/पाकुड़/झारखंड– प्रखंड मुख्यालय पाकुड़िया में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बंगला बैशाख महीने के अवसर पर संध्या समय में हरिनाम संकीर्तन का आयोजन किया गया। पूरे एक महीने तक चले इस संकीर्तन के समापन पर भव्य 'धूल लोट' महोत्सव का आयोजन हुआ। इस आयोजन में बंगाल के विभिन्न नगरों से आई सुप्रसिद्ध कीर्तन मंडलियों ने भाग लिया और भगवद् नाम के संकीर्तन से वातावरण को भक्तिमय बना दिया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने इस आयोजन में भाग लेकर हरिनाम का रसपान किया और आत्मिक तृप्ति का अनुभव किया। भारतवर्ष एक धर्मप्रधान एवं आध्यात्मिक राष्ट्र है, जहां की भूमि का कण-कण सनातन संस्कृति और अध्यात्म की सुगंध से ओतप्रोत है। यही कारण है कि यहाँ की जनमानस में भावनात्मक संवेदनशीलता विद्यमान रहती है।

ऐसा माना जाता है कि भगवान की भक्ति से ही अंगुलीमाल, जगाई-माधाई जैसे अपराधी भी भवसागर से पार हो गए। श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं– "भक्त मुझे जिस भी नाम से पुकारे, मैं उसकी सच्ची पुकार पर दौड़ा चला आता हूं।" इसका उदाहरण महाभारत कालीन द्रौपदी प्रसंग से मिलता है, जब दुष्ट दुशासन द्वारा चीरहरण किए जाने पर, अहंकार रहित होकर जब द्रौपदी ने पुकारा, "हे गोविंद, रक्षा करो," तब श्रीकृष्ण स्वयं उसकी रक्षा के लिए प्रकट हुए। इस तरह के आयोजन न केवल सामाजिक समरसता को बढ़ावा देते हैं, बल्कि आध्यात्मिक चेतना को भी जागृत करते हैं। पाकुड़िया का यह आयोजन अब एक परंपरा बन चुका है, जिसे हर वर्ष श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

रामगढ़ करणी सेना ने झारखंड सरकार को घेरा

● 48 घंटे के अंदर अपराधी गिरफ्तार नहीं हुआ तो आंदोलन किया जाएगा - प्रवीण सिंह

स्वतंत्र प्रभात

भुरकुंडा, झारखंड– राची जाने के दौरान भुरकुडा में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर करणी सेना के झारखंड प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण सिंह ने झारखण्ड सरकार को घेरा प्रवीण सिंह ने कहा क़ी जमशेदपुर में झारखंड क्षत्रिय करणी सेना के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बिनय कुमार की दिनदहाड़े गोली मार कर हत्या कर दि गई श्री सिंह ने कहा कि यह केवल बिनय कुमार की हत्या नहीं यह हमारे समाज के स्वाभिमान और सम्मान की हत्या है। बिनय कुमार की हत्या एक सुनियोजित तरीके से सोची समझी साजिस लगती है। झारखंड के हेमंत सरकार में अपराधी बिल्कुल बेलगाम हो गये हैं और अपराधियों पर कोई अंकुश नहीं है। झारखंड सरकार में ना तो महिलाए सुरक्षित हैं और ना ही आम व्यक्ति सुरक्षित है, कभी रांची जैसे शहर में अनिल टाइगर जैसे व्यक्ति की दिन दहाड़े हत्या हो जाती है कभी जमशेदपुर जैसे शहर में विनय कुमार की दिन दहाड़े हत्या हो जा रही है। झारखंड में झारखंड पुलिस और सरकार मिलकर सिर्फ चालान काटने और उगाही करने में व्यस्त है। यहाँ की जनता बिल्कुल डर में जी रही है। करणी सेना भारत के प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण सिंह ने झारखंड सरकार और झारखंड पुलिस को 48 घंटे का अल्टीमेटम दिया है और कहा है कि यदि 48 घंटे के अंदर विनय कुमार के हत्यारों की गिरफ्तारी नहीं होती है तो करणी सेना झारखंड में आंदोलन करेगी और घर में घुस कर अपराधियों को मारने का काम करेगी और जरूरत पड़ी तो पूरे देश में करणी सेना आंदोलन करेगी।

संक्षिप्त खबरें

समय बदला, सुबह सात बजे के हुए स्कूल

मथुरा। गर्मी का सितम अब सिर चढ़कर बोलने लगा है। दूध तन को जलाने लगी है। मौसम के मिजाज में लगातार बदलाव के बावजूद तापमान में लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। तेज गर्मी के कारण स्कूली बच्चों को राहत दी गई है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सुनील दत्त ने सभी विद्यालयों के लिए नया समय निर्धारित किया है। नए आदेश के अनुसार, कक्षा 1 से 8 तक की पढ़ाई सुबह 7 बजे से दोपहर 12.30 बजे तक होगी। यह आदेश सभी परिषदीय विद्यालयों, सहायता प्राप्त स्कूलों, सीबीएसई और अन्य बोर्ड के विद्यालयों पर लागू होगा। बीएसएनएल के अनुसार, वर्तमान में मथुरा में हीट वेव की स्थिति है। छोटे बच्चों को विभिन्न बीमारियों से बचाने के लिए यह कदम उठाया गया है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ने चेतावनी दी है कि इन आदेशों का पालन न करने वाले विद्यालयों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

कुल्ली छह महीने के लिए जिला बदर

जिला मजिस्ट्रेट चन्द्र प्रकाश सिंह ने विवेचन एवं विश्लेषण के अनुक्रम में की कार्यवाही

मथुरा। जिला मजिस्ट्रेट चन्द्र प्रकाश सिंह ने विवेचन एवं विश्लेषण के अनुक्रम में विपक्षी राहुल पुत्र स्व. संजीव शर्मा उर्फ कुल्ली निवासी मैनागढ कृष्णापुरी सदर बाजार जनपद मथुरा को छह माह की अवधि के लिये जनपद मथुरा की सीमा से निष्कासित करने का आदेश जारी किया है। विपक्षी को निर्देशित किया जाता है कि वह इस आदेश की प्राप्ति की तिथि से इस जनपद की सीमा से स्वयं बाहर चला जाये और तब तक जनपद की सीमा में प्रवेश न करे जब तक यह अवधि समाप्त न हो जाये। विपक्षी जनपद से बाहर रहने की सूचना प्रभारी निरीक्षक, थाना सदर बाजार जिला मथुरा को देगा। यदि निर्धारित अवधि में विपक्षी इस आदेश का उल्लंघन या चूक करता है, तो वह उत्तर प्रदेश गुण्डा नियंत्रण अधिनियम 1970 की धारा 10,11 के उल्लंघन का दोषी माना जायेगा और उसे गिरफ्तार कर विधि व्यवस्था के अनुरूप कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। यदि व्यक्ति का किसी विशिष्ट न्यायिक आदेश के अनुपालन में उपस्थित होना आवश्यक है, तो उस न्यायालय में उपस्थित होने के लिए व्यक्ति को धारा 4 के अंतर्गत जिला मजिस्ट्रेट से अनुज्ञा प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होगी। आदेश की प्रतिलिपि वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मथुरा एवं प्रभारी निरीक्षक, थाना सदर बाजार जिला मथुरा को भेजी गई है। प्रभारी निरीक्षक, सदर बाजार जिला मथुरा को निर्देशित किया गया है कि वह विपक्षी को जनपद की सीमा से बाहर कर, अनुपालन आख्या आदेश की प्राप्ति की तिथि के तुरन्त बाद इस न्यायालय को उपलब्ध करायेंगे।

फांसी के फंदे पर लटका मिला मध्य प्रदेश के व्यक्ति का शव

45 साल परिवार को लेकर वृंदावन में रह रहा था व्यक्ति

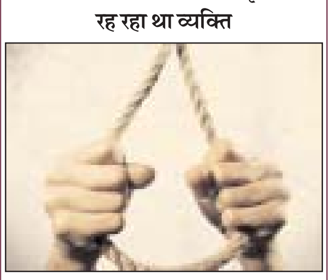

मथुरा। नगर के बांके बिहारी क्षेत्र स्थित ठाकुर राधा स्नेह बिहारी मंदिर के पास एक व्यक्ति ने फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। सोमवार की सुबह बिहारीपुर क्षेत्र स्थित एक घर में एक व्यक्ति का शव फंदे पर झूलता मिला। खबर मिलते ही आनन फानन भीड़ एकत्रित हो गई। जानकारी करने पर पता चला कि रमाकांत तिवारी उम्र लगभग 42 वर्ष बिहारीपुरा क्षेत्र स्थित एक घर में पूजा सेवा का कार्य करता था। यह मकान दिल्ली निवासी अंजलि गोस्वामी का है। जहां पर ठाकुर जी की सेवा पूजा एवं सुबह शाम आरती करने का कार्य रमाकांत तिवारी करते थे। रविवार शाम को जब भी आरती करने आए तो उन्होंने आज पड़ोस के लोगों को बताया कि उनके घर पर मेहमान आए हुए हैं इसीलिए आज रात में यहीं पर सोएंगे। सोमवार की सुबह जब सफाई करने वाली महिला ने दरवाजा खोला, तो दरवाजा पहले से ही खुला हुआ था। दरवाजा खोलते ही सामने रमाकांत तिवारी का शव फंदे पर झूलता हुआ नजर आया। जिसकी सूचना उस महिला द्वारा आस पड़ोस के व्यक्तियों को दी गई। इसके बाद पुलिस को इसकी सूचना दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को उतार कर पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पड़ोसियों द्वारा बताया गया कि मृतक रतन छतरी क्षेत्र का रहने वाला था उसके परिवार में पत्नी और एक बेटा बेटी है। फिलहाल सभी लोग सन्न हैं क्योंकि मृतक रमाकांत तिवारी बहुत ही हसमुख मिजाज के व्यक्ति थे। उनके अचानक इस कदम से सभी लोग दंग रह गये।

US में गूंजा डंप ट्रम्प, नहीं थम रहा है प्रदर्शन, क्यों भड़के लोग?

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ हजारों की संख्या में लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। ट्रप के राष्ट्रपति बनने से अबतक चौथा प्रोटेस्ट है।

स्वतंत्र प्रभात

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नीतियों के खिलाफ अमेरिका के सभी 50 राज्यों में हजारों अमेरिकी सड़कों पर उतरे। ये प्रदर्शनकारी ट्रंप की प्रवासी विरोधी पॉलिसी, टैरिफ नीति और सरकारी नौकरियों में छंटनी का विरोध कर रहे थे। इन प्रदर्शनों को ट्रिस ऑक (Hands (OIT) नाम दिया गया है। 50 राज्यों के हजारों लोगों ने इसमें हिस्सा लिया। वे प्रदर्शन नगरेकों के अधिकारों, आजीविका और अमेरिकी लोकतंत्र के मूलभूत बंचे को खतरा माने जाने वाले मुद्दों पर हो यो है। जैक्सनविले से लॉस एंजिलिस तक पूरे अमेरिका में 700 से अधिक प्रदर्शन हुए। लोकतांत्रिक मूल्यों पर 'खतरा' मंडराने के आरोप लगाते हुए राष्ट्रपति के आवास वाइट हाउस को भी घेरा गया। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने 'Impeach & Remove' और 'तानाशाही का विरोध करो' जैसे नारों वाले पोस्टर और वैनर लहराए। ट्रंप की तुलना जर्मन तानाशाह हिटलर से की गई।

ट्रंप विरोधी इस आंदोलन को '50501' नाम दिया गया। इसका मतलब '50 विरोध प्रदर्शन, 50 राज्य, 1 आंदोलन' है। लोग नारे लगा रहे थे- 'No ICE, No Fear, Immigrants are Welcome Here' यह नारा अमेरिका की इमिग्रेशन एजेंसी ICE के विरोध में था, जो अवैध प्रवासियों को हिरासत में लेती है। प्रदर्शन में अमेरिकी कुशलता आयोग के प्रमुख इलॉन मस्क की आक्रामक नीतियों की भी भर्त्सना की गई। मस्क का यह विभाग लगातार सरकारी विभागों में छंटनी कर रहा है। ट्रंप प्रशासन ने इलॉन मरक के नेतृत्व में सरकारी दक्षता विभाग (DOGE) के तहत 200,000 से अधिक केंद्रीय नौकरियों को खत्म कर दिया। एनवाईटी की रिपोर्ट के मुताविक, यह सामाजिक सुरक्षा, राष्ट्रीय उद्यानों और अन्य सेवाओं को प्रभावित कर रहा है। प्रदर्शनकारी इन कटतियों को आवश्यक सेवाओं को खत्म करने वाला मानते हैं, विशेष रूप से बजुर्ग और विकलांग जो सामाजिक सुरक्षा पर ही निर्भर हैं।

'UNTRUMP द वर्ल्ड'

लोगों में इतना गुस्सा है कि अमेरिका के नागरिकों ने राष्ट्रपति ट्रंप की तुलना जर्मनी के तानाशाह हिटलर से कर दी। टैरिफ, अप्रवासी, LGBTQ समेत कई अन्य मुद्दों को लेकर अमेरिका के लोग ये प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शन में लोग अलग-अलग तरह के पोस्टर भी लेकर आए हैं। एक पोस्टर पर लिखा है 'DUMP TRUMP'। एक में लिखा है- 'ये राजनीति नहीं नैतिकता का मामला है। NTRUMP द वर्ल्ड'। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने 20 जनवरी 2025 को शपथग्रहण किया। हालांकि, उसके बाद से अबतक ट्रंप सरकार की नीतियों के खिलाफ 4 बार बड़े स्तर पर प्रदर्शन हो चुका है। अमेरिकी नागरिक का मानना है कि ट्रंप एक तानाशाह की तरह बर्ताव कर रहे हैं, और उनसे लोकतंत्र को बचाया जाना चाहिए।

एलन मस्क के खिलाफ भी विरोध प्रदर्शन

वहीं कई जगहों पर टेस्ला कार डीलरशिप के बाहर ट्रंप के सलाहकार एलन मस्क और संघीय सरकार को छोटा करने में उनकी भूमिका के खिलाफ विरोध प्रदर्शन की योजना बनाई गई। कुछ लोगों ने भोजन अभियान, शिक्षण-सत्र और स्थानीय आश्रयों में स्वयंसेवा जैसे अधिक सामुदायिक सेवा जैसा कार्यक्रम आयोजित किया। लोगों ने यूएस इमिग्रेशन और कस्टम्स इंफोर्समेंट के खिलाफ नारेबाजी करते हुए कहा कि "हमारे राज्य में कोई डर नहीं, कोई नफरत

नहीं, कोई ICE नहीं"। एक प्रदर्शनकारी मार्शल ग्रीन ने कहा कि उन्हें सबसे ज्यादा चिंता इस बात की है कि ट्रंप ने 1798 के युद्धकालीन एलियन एनिमीज़ एक्ट को लागू किया है, जिसमें उन्होंने दावा किया है कि देश दक्षिण अमेरिकी राष्ट्र की सरकार से जुड़े वेनेजुएला के गिरोहों के साथ युद्ध में है, भले ही हाल ही में यूएस खुफिया आकलन में उनके बीच कोई समन्वय नहीं पाया गया हो।

न्यू जर्सी में मॉरिसटाउन 61 साल के एक व्यक्ति ने कहा, "कांग्रेस को आगे आकर कहना चाहिए कि नहीं, हम युद्ध में नहीं हैं। आप इसका इस्तेमाल नहीं कर सकते। आप उचित प्रक्रिया के बिना लोगों को निर्वासित नहीं कर सकते हैं, और इस देश में हर किसी को उचित प्रक्रिया का अधिकार है, चाहे कुछ भी हो।"

एक लोडेड पिस्तौल, एक स्कॉर्पियो कार के साथ अपराधी गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

नई दिल्ली। सड़क पर होने वाले अपराध जैसे कि ऑटो लिफ्टिंग, पिक-पॉकेटिंग, स्नैचिंग और डकैती आदि पर अंकुश लगाने के लिए, बीट और पेट्रोलिंग स्टाफ को दिल्ली पुलिस की रोको-टोको रणनीति अपनाने के लिए नियमित रूप से ब्रीफ किया जा रहा है। नतीजतन, स्टाफ ने सड़क अपराध में शामिल अपराधियों को पकड़ने के लिए विषम घंटों के दौरान भी गहन गश्त पर ध्यान केंद्रित किया और उसका संचालन किया। इसके अलावा, नियमित गश्त और रैंडम पिकेट चेकिंग करके बीट क्षेत्रों में पुलिस की मौजूदगी बढ़ाई गई है।21 अप्रैल को पीएस साकेत के स्टाफ जिसमें एसआई राहुल, एचसी अभय, सीटी शामिल थे। प्रमोद को अपराध की रोकथाम और पता लगाने के लिए क्षेत्र में गश्त के लिए तैनात किया गया था। गश्त के दौरान जब वे पार्किंग, पीवीआर अनुपम कॉम्प्लेक्स, साकेत के पास पहुंचे, तो उन्होंने एक काले रंग की स्कॉर्पियो कार को संदिग्ध हालत में देखा। संदेह होने पर उन्होंने कार को चेकिंग और सत्यापन के लिए रोका, लेकिन चालक

असमंजस में था और इस संबंध में कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाया। कार की तलाशी लेने पर, मैगजीन में लोड किए गए 01 पिस्तौल और 04 जिंदा कारतूस बरामद किए गए। बाद में, उसकी पहचान विवेक के रूप में हुई। इस संबंध में, थाना साकेत में एफआईआर संख्या 160/25 के तहत धारा 25 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया और जांच शुरू की गई। उसे गिरफ्तार कर लिया गया और पूछताछ जारी है। गिरफ्तार किए गए।विवेक पुत्र गुरुवंत सिंह निवासी निहाल विहार, दिल्ली, उम्र 29 वर्ष है। वह पहले एफआईआर संख्या 201/25 धारा 20 (बी)/21 एनडीपीएस थाना निहाल विहार में शामिल पाया गया है।

समस्तीपुर के वैभव सूर्यवंशीसमस्तीपुर के वैभव सूर्यवंशी का आईपीएल में डेब्यू ! पहली गेंद पर जड़ा छक्का, 20 गेंदों में बनाए 34 रन

स्वतंत्र प्रभात

समस्तीपुर। वैभव सूर्यवंशी ने आईपीएल 2025 में डेब्यू करते हुए 34 रन बनाए। उन्होंने पहली ही गेंद पर छक्का जड़ा। वैभव आईपीएल इतिहास में ऐसा करने वाले 10वें खिलाड़ी बन गए। वैभव सूर्यवंशी राजस्थान की तरफ से बैटिंग करते हुए अपनी धमाकेदार शुरुआत से हर किसी को हैरान कर दिया। वैभव की इस उपलब्धि से उनके पैतृक गांव ताजपुर में जश्न का माहौल है। मोहल्ले ही नहीं बल्कि पूरा जिला आज अपने इस बेटे पर गर्व कर रहा है। वैभव सूर्यवंशी के इस धमाकेदार खेल को लेकर उनके परिवार, दोस्तों और पड़ोसियों में खासा उत्साह है। वैसे लोगों को इस बात का दुख भी है कि वह इस मैच में जल्दी आउट हो गए, हालांकि उन्हें उम्मीद है कि वैभव कोई बड़ा रिकॉर्ड बनाएंगे।

ओपनिंग करने उतरे वैभव सूर्यवंशी-वैभव सूर्यवंशी को यशस्वी जायसवाल के साथ ओपनिंग करने का मौका मिला। वैभव ने पहली ही गेंद पर छक्का जड़कर अपना खाता खोला। वह आईपीएल इतिहास में ऐसा करने वाले 10 वें खिलाड़ी बन गए। बतौर भारतीय

खिलाड़ी ऐसा करने वाले वह 10वें खिलाड़ी हैं। वैभव ने अपनी पारी में 2 चौके और 3 छक्के लगाए। उनका स्ट्राइक रेट 170 का रहा। RR ने उन्हें IPL 2025 मेगा ऑक्शन में 1 करोड़ 10 लाख रुपये में खरीदा।

आउट होने के बाद रोने लगे- वैभव सूर्यवंशी एडेन मार्करम की गेंद पर आउट हुए। मार्करम की गेंद को खेलने की कोशिश में वह धोखा खा गए और विकेटकीपर ऋषभ पंत ने उन्हें स्टंप आउट कर दिया। वैभव सूर्यवंशी आउट होने पर काफी भावुक हो गए। उनकी आंखों से आंसू निकल रहे थे। यह देखकर कई लोग हैरान रह गए। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर काफी तेजी से वायरल हो रहा है।

आईपीएल में खेलने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी- वैभव सूर्यवंशी आईपीएल में खेलने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी हैं। उन्होंने महज 14 साल 23 दिन की उम्र में डेब्यू किया था। सूर्यवंशी अभी भारत की अंडर-19 टीम का भी हिस्सा हैं। इस मैच की बात करें तो राजस्थान रॉयल्स को हार का सामना करना पड़ा। पहले बल्लेबाजी करते हुए लखनऊ ने 180 रन बनाए। धमाकेदार शुरुआत के बावजूद राजस्थान की टीम 178 रन ही बना सकी। यह टीम की 8 मैचों में छठी हार है।

सुंदर पिचाई ने की खूब तारीफ- गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई भी वैभव के मुरीद रहे। उन्होंने अपने ऑफिशियल एक्स अकाउंट पर 14 वर्षीय वैभव की निडर बल्लेबाजी की तारीफ की। उन्होंने लिखा कि वैभव की बल्लेबाजी देखने के लिए वे सुबह जल्दी उठे। का आईपीएल में डेब्यू ! पहली गेंद पर जड़ा छक्का, 20 गेंदों में बनाए 34 रन

राज्यसभा सांसद कांता कर्दम का मथुरा आगमन

राज्यसभा सांसद कांता कर्दम का स्वागत करते भाजपाई।

मथुरा। भारतीय जनता पार्टी की राज्यसभा सांसद कांता कर्दम सोमवार को एक दिवसीय प्रवास पर मथुरा पहुंचीं। इस अवसर पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने रिफाइनरी स्थित सरकारी गेस्ट हाउस में उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। सांसद को दुपट्टा ओढ़ाकर और स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। मीडिया प्रभारी श्याम शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि जनार्दन शर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष निर्भय पांडे, विजय शर्मा, राधा सिंह, बादल शर्मा, मोहन भारद्वाज, बबलू चौधरी और सत्यपाल चौधरी सहित कई वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।सांसद कर्दम ने कार्यकर्ताओं से मुलाकात कर संगठन की मजबूती और आगामी चुनावों को लेकर चर्चा की। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं का परिश्रम ही पार्टी की असली ताकत है।

20 हजार का इनामी वाहन चोर मक्कू मुठभेड़ में घायल

● कोसीकला थाने से छह मुंकदमों में फरार चल रहा था मक्कू

थाना कोसीकलां पुलिस ने किया मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। थाना कोसीकला पुलिस ने 20 हजार रुपये के शातिर ईनामिया वाहन चोर बदमाश को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार किया है। प्रभारी निरीक्षक थाना कोसीकला अरविन्द कुमार निर्वाल के मुताबिक थाना कोसीकलां पुलिस टीम ने चौकी कोटवन क्षेत्रान्तर्गत होडल हरियाणा की तरफ से दहगांव की तरफ जाने वाले रास्ते पर बम्बे की पुलिया पर चौकिंग के दौरान 20 हजार रुपये के शातिर ईनामिया बदमाश मक्कू उर्फ मकसूद पुत्र असरू निवासी

पुलिस मुठभेड में घायल वाहन चोरी का आरोपी अभियुक्त।

जखोफर थाना बिछौर जिला नूँह हरियाणा मुठभेड के दौरान एक तमंचा, दो खोखा व दो जिन्दा कारतूस सहित गिरफ्तार किया गया। मुठभेड़ के दौरान घायल हुए अभियुक्त को उपचार के लिए सीएचसी कोसीकलां में भर्ती कराया गया। घायल अभियुक्त का साथी सरफराज पूर्व में पुलिस मुठभेड़ में गिरफ़्तार किया जा चुका है तभी से मक्कू उर्फ मकसूद थाना कोसीकलां के छह मुकदमों में वांछित चल रहा था। जिस पर एसएसपी ने 20 हजार रूपये का ईनाम घोषित किया था। पुलिस गिरफ्तार अभियुक्त का आपराधिक इतिहास खंगाल रही है। इसके कब्जे से एक चोरी की मोटरसाइकिल भी बरामद हुई है। कार्यवाही करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक अरविंद कुमार निर्वाल थाना कोसीकलां, एसआई अरविंद पूनिया थाना कोसीकलां, एसआई मनमोहन शर्मा थाना कोसीकलां, एसआई अंकित मलिक, थाना कोसीकलां आदि थे।

कर्ज में डूबे पिता ने रच डाली बेटे के अपहरण की साजिश

● ज्यादा देर तक पुलिस को न रख सका अंधेरे में

मथुरा पुलिस ने पिता पुत्र दोनों को किया गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। कर्ज में डूबे अलीगढ़ के व्यक्ति को जब कोई राह नहीं सूझी तो मथुरा में अपने बेटे के अपहरण की साजिश रच दी। बेहद शातिराना ढंग से पूरी कहानी को गढ़ा गया। पिता ने मथुरा में बेटे के अपहरण और 15 लाख की फिरौती मांगने का मामला भी दर्ज करा दिया। लेकिन ज्यादा समय तक वह पुलिस को अंधेरे में नहीं रख सका। पुलिस ने मामले का राजफाश करते हुए पूरे घटनाक्रम से पर्दा उठा दिया। पुलिस ने पिता पुत्र दोनों को गिरफ्तार कर लिया है। शुक्रवार को अलीगढ़ के गुड़ व्यापारी के बेटे का अपहरण हो गया था। इस मामले में सोमवार दोपहर को मथुरा पुलिस ने सनसनीखेज खुलासा किया है। पुलिस के अनुसार गुड़ व्यापारी ने खुद ही अपने बेटे के अपहरण की साजिश रची थी। पुलिस ने व्यापारी के बेटे को जयपुर रेलवे स्टेशन से गिरफ्तार किया है। गुड़ व्यापारी ने पुलिस को बताया उस पर काफी कर्जा हो गया था, कुछ लोग रोजाना उसके अलीगढ़ के घर पर अपने पैसे मांगने आते थे। इन लोगों से बचने के लिए उसने अपने बेटे के साथ मिलकर ये प्लान बनाया।पुलिस ने पिता पुत्र के खिलाफ पुलिस को गुमराह करने, सरकारी धन का दुरुपयोग कराने के संबंध में मुकदमा दर्ज किया है और दोनों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस को कॉल डिटेल और सीसीटीवी फुटेज से इस घटना का खुलासा करने में काफी मदद मिली।

अलीगढ़ के रहने वाले गुड़ व्यापारी नवाब सिंह ने बताया कि उसका अलीगढ़ में गुड़ का कारोबार है। आसपास के जिलों में भी वो व्यापार करते हैं। यहां के कलक्टर गंज इलाके में वो अक्सर पैसे लेने के लिए आते रहते हैं। और कभी कभी अपने बेटे को भी भेज देते हैं। इसके बाद पुलिस ने कोतवाली से लेकर यमुना पार थाना क्षेत्र में 40 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे खंगाले। सोनू के मोबाइल नंबर की लोकेशन और कॉल डिटेल की

एसएसपी श्लोक कुमार घटना के खुलासे की मीडिया को जानकारी देते हुए।

जानकारी निकाली गई। पुलिस ने कई व्यापारियों से इस बारे में पूछताछ भी की। इनपुट के आधार पर पुलिस की दो टीमों को भरतपुर और अलवर भेजा गया। पुलिस को इस दौरान कुछ अहम सुराग मिले। जिसके बाद पुलिस का शक गुड़ व्यापारी के ऊपर गया।

वर्जन- जब व्यापारी के अपहरण की सूचना मिली तो सर्विलांस, एसओजी, थाना जमुनापार, वृंदावन और जैंत पुलिस की टीमें लगाई गई। एक टीम जब गांव गई तो वहां पता चला कि व्यापारी नवाब सिंह पर 5 लाख रुपए का कर्जा था। -श्लोक कुमार, एसएसपी मथुरा

सिलापथार अकाजान में असम के मुख्यमंत्री डॉ हिमंत बिस्वा शर्मा की चुनावी सभा सम्बोधन

● 2026 में असम को देश की 5 विकसित राज्य में तब्दील करने की दिया आश्वासन। विकास का बात उल्लेख कर कांग्रेस पर सादा निशाना।

स्वतंत्र प्रभात

असम धेमाजी- 21अप्रैल। धेमाजी जिले की सिलापथार अकाजान जनजाति ट्राइबल हाइ स्कूल खेल मैदान में आज असम के मुख्यमंत्री डॉ हिमंत बिस्वा शर्मा ने 2 मई 2025 में असम में अनुष्ठित होनेवाले प्रथम चरण के पंचायत चुनाव के प्रथम चुनावी सभा को सम्बोधन करने सुबह 11 बजे हेलीकॉप्टर से अकाजान पहुंचे। मुख्यमंत्री ने जनसभा को संबोधित करते हुए सभी को रंगाली बिहू का शुभकामना एवं बधाई देते अपनी भाषण का शुरुवात किया। पंचायत चुनाव में ग्राम सभा, ग्राम पंचायत में भाजपा के एवं राजनितिक दलों के हस्तक्षेप बिना लोगों को खुद अपने गांव के वार्ड मेम्बर चुनाव करने का सुविधा दिया, लेकिन आंचलिक पंचायत, ओर जिला परिषद में दलीय चिह्न पर चुनाव लड़ने की इस परिवर्तन करने की बात उल्लेख कर मुख्यमंत्री ने कहा कि आंचलिक पंचायत, और जिला परिषद के पद में असम गणपतिषद , ग़नशक्ति, भाजपा गठबन्धन को इस बार पंचायत चुनाव में असम में 3 सौ से अधिक आंचलिक पंचायत और 40 से अधिक जिला परिषद के पार्थी चुनाव के बिना ही लोगों ने

चयन किया कहकर मुख्यमंत्री ने सीदे कांग्रेस पर निशाना साधा, उन्होंने असम में चल रही अन्न सुरक्षा योजना में मुफ्त रोशन भाजपा सरकार ने दिया, और अब नमक, डाल और चीनी बाजार से कम कीमतों में अगले अक्टूबर महीने से देने की बात की वही उजाला योजना, अरुणउदय योजना के पैसा के लिए किसी नेता के घर लाइन लगना नहीं पड़ता, सीधे बैंक अकाउंट में दिया जाता है आज असम के विकास के साथ धेमाजी जिले का भी विकास हुआ है, कांग्रेस के दिन में धेमाजी बाड़ पीड़ित इलाके था,अब धेमाजी में मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, रास्ते का विकास भाजपा सरकार ने किया है। मुख्यमंत्री ने कांग्रेस को आलोचना करके कहा कि पहले कांग्रेस सिर्फ सुता,कम्बल, और लूंगी धोती का राजनीति करती थी, इसीलिए कांग्रेस का चुनावी प्रतीक लूंगी रख देना चाहिए। आज असम के विकास के रास्ते में असम में बाहर से कंपनियों ने 5 हज़ार करोड़ से अधिक रुपए निवेश करने के लिए आया हैं। हम असम में बिना रिसवत के 1.5 लाख युवाओं नौकरी सरकारी नौकरी दिया है। जिले में बेरोजगार 300 से युवाओं को बेपर करने एवं आत्मनिर्भर होना के 2 लाख रुपए का अनुदान दिया गया है। अगले साल इसे 700 में

बदलने का सरकार का इरादा है।

मुख्यमंत्री ने जिले की सभी जिला परिषद के उम्मीदवारों को मंच में बुलाकर लोगों से भाजपा के साथ गठबन्धन असम गणपरीषद गणशक्ति, सभी उम्मीदवारो को वोट देकर जितने के लिए आह्वान किया। एवं आंचलिक पंचायत और अपनी वार्ड में सही उम्मीदवार चयन करने के लिए गुजारिश की। आज की जनसभा लखीमपुर के सांसद प्रदान बरुवा, असम के शिक्षा मंत्री डॉ रोनुज पेगू, जोनाई चुनावी क्षेत्र के विधायक भुवन पेगू, ऋतुपर्ण बरुवा,भैरव देवरी, मिसिंग स्वायत्त परिषद के अध्यक्ष परमानंद चायेंगिया, भाजपा के जिला अध्यक्ष रूपा कामान, सहित भाजपा के जिला एवं हर मंडल पदाधिकारियों के साथ जिले की जोनाई से लेकर माचकुवा से 40 हजारों से अधिक लोगों ने मुख्यमंत्री के जनसभा में भाग लिया।

जब इस्लाम को मानने वाली नुसरत ने केदारनाथ मंदिर का किया दौरा, बोलीं- ऐसी शांति पहले कभी महसूस नहीं हुई, ट्रोलिंग पर दिया जवाब

नुसरत भरूचा ने बताया कि मुसलमान होने के बावजूद कैसे वो हमेशा से केदारनाथ मंदिर जाना चाहती थीं।

स्वतंत्र प्रभात

'प्यार का पंचनामा' फेम एक्ट्रेस नुसरत भरूचा ने हाल ही में केदारनाथ मंदिर जाने के अपने अनुभव के बारे में बताया। नुसरत इस्लाम धर्म को मानती हैं लेकिन उन्होंने खुलासा किया कि वो हमेशा से ही केदारनाथ और बद्रीनाथ मंदिर जाना चाहती थीं।

नुसरत भरूचा हाल ही में एक पॉडकास्ट में नजर आई थीं जहां उन्होंने कहा कि ऊपरवाला केवल एक होता है, बस उस तक पहुंचने के लिए रास्ते अलग-अलग होते हैं। उन्होंने कहा कि अगर वो ठान लेती हैं कि उन्हें कुछ करना है तो वो करके ही रहती हैं।

केदारनाथ मंदिर जाकर नुसरत ने क्या किया?

नुसरत ने कहा कि कैसे उनका केदारनाथ जाने का बड़ा ही मन था। उनके अंदर भोले बाबा के प्रति आस्था है और वो केदारनाथ मंदिर जाकर केवल वहां शांति से बैठना चाहती थीं। उन्होंने कहा कि उनके मन में कोई जल्दबाजी, हड़बड़ी, टेंशन या सवाल कुछ नहीं था। बाहर से हवा का शोर आ रहा था लेकिन अंदर से वो काफी शांत थीं। मंदिर जाते ही उन्हें ये शांति महसूस हुई

जिसे वो शब्दों में बयां नहीं कर सकतीं। एक्ट्रेस ने कहा कि वो मुसलमान हैं लेकिन वो बचपन से मंदिर जाती रही हैं। वो वैष्णोदेवी मंदिर जाकर माथा भी टेक चुकी हैं। उन्होंने पैदल चढ़ाई करते हुए ऊपर मंदिर में जाकर दर्शन किए थे। नुसरत ने कहा कि उन्हें माता रानी का बुलावा आया था। उन्होंने बताया कि उनके मां-बाप का मानना है कि विश्वास सबका निजी होता है, ये आप किसी पर थोप नहीं सकते। वो अपनी आंटी के साथ चर्च में जाकर कैंडल भी जलाती हैं।

मंदिर जाने पर ट्रोल होने पर बोलीं नुसरत

नुसरत ने इंटरव्यू में आगे बताया कि वो नमाज भी पढ़ती हैं और रोजा रखती हैं। वो कोशिश करती हैं कि दिन में पांच बार नमाज पूरी कर लें। वो बाकी धर्मों का भी दिल से सम्मान करती हैं। एक्ट्रेस ने आगे बताया कि कैसे मंदिर की तस्वीरें पोस्ट करने पर उन्हें ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा था। नुसरत के फोटो पर लोग ऐसे-ऐसे कमेंट्स करते हैं कि वो कैसी मुसलमान हैं। उनके कपड़ों को लेकर भी उन्हें टारगेट किया जाता है लेकिन एक्ट्रेस इन बातों पर ध्यान नहीं देती। उन्होंने कहा कि जब ऊपरवाले के साथ आपका कनेक्शन शुद्ध हो तो इंसान क्या कहता है, इससे फर्क नहीं पड़ता।

वृंदावन में गूंजा भूटान का सांस्कृतिक स्वर

» गीता शोध संस्थान में 'पन्नाई यादों का कल्पतरु भूटान' पुस्तक का लोकार्पण

»डा शुभदा पांडेय की पुस्तक भारत-भूटान के सांस्कृतिक संबंधों को करेगी और भी प्रगाढ़

वृंदावन। गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी वृंदावन के सभागार में प्रसिद्ध लेखिका डॉ. शुभदा पाण्डेय की कृति 'पन्नाई यादों का कल्पतरु रू भूटान' का लोकार्पण किया गया। यह पुस्तक भारत भूटान के सांस्कृतिक संबंधों पर केन्द्रित है, जिसमें लेखिका ने अपने व्यक्तिगत यात्रा अनुभवों और सांस्कृतिक शोध को कलात्मक भाषा में प्रस्तुत किया है। अध्यक्षता शिक्षाविद् एवं संस्थापक कुलपति प्रो. रवीन्द्र कुमार शर्मा ने की। मंच पर ब्रज लोक कला केन्द्र के अध्यक्ष विष्णु प्रकाश गोयल, केन्द्र के सचिव दीपक गोयल, सुप्रसिद्ध भजन गायक बिहारी शरण जी महाराज, अवकाश प्राप्त डीआईओएस डा. एस.पी. गोस्वामी, विदेश मंत्रालय में अवर सचिव रह चुके श्री महेश चंद्र शर्मा ने विचार व्यक्त किए। मुख्य अतिथि पूर्व कुलपति प्रो. रवीन्द्र कुमार शर्मा ने लेखिका के सांस्कृतिक दृष्टिकोण और भूटान की यात्राओं को विशेष सराहना की। उन्होंने कहा कि ÷शुभदा जी ने भूटान जैसे शांतिप्रिय और आध्यात्मिक राष्ट्र की यात्रा करके वहां की संस्कृति को जिस सूक्ष्मता से आत्मसात किया और फिर साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किया, वह अनुकरणीय है। संचालन गीता शोध संस्थान के कोऑर्डिनेटर चंद्र प्रताप सिंह सिकरवार ने किया। विगत में गीता शोध संस्थान वृंदावन के आयोजनों में योगदान व सहयोग देने वालों में प्रमुख रूप से साहित्यकार डा. अनीता चौधरी, ब्रज भाषा के कवि अशोक अज्ञ, कलाकार विनय गोस्वामी, श्रीमती मोहिनी कृष्णदासी, पूर्व डीआईओएस डा. एस.पी. गोस्वामी आदि को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गये।

पन्नाई यादों का कल्पतरु भूटान पुस्तक के लोकार्पण अवसर पर मौजूद अतिथिगण।

कार्यक्रम में आरसीए कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या डा. प्रीति जौहरी, प्राचार्य डा देव प्रकाश शर्मा, रासाचार्य घनश्याम शर्मा एवं रितु सिंह आदि साहित्य, कला और अध्यात्म जगत के विद्वान उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित साहित्य व सांस्कृतिक जगत के लोगों ने लेखिका को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि ये पुस्तक भारत भूटान सांस्कृतिक रिश्तों को और प्रगाढ़ करने में मील का पत्थर सिद्ध होगी।